प्रभात

अंदर के पन्नों में .....

★ छग चुनाव - भाजपा की दोबारा जीत 6
★ विधानसभा चुनावों के मौके पर प्रतिरोध 10
★ राज्य बिजली बोर्ड के विखण्डन का विरोध.... 14
★ गड़चिरोली डिवीजन में पीएलजीए के हमले.... 15
★ गाजा पर इज़्राएली हमलों का विरोध करो 17
★ विश्वव्यापी आर्थिक संकट 19
★ विरासत-ए-शहादत 23
★ संघर्षों और सभा-सम्मेलनों की रिपोर्टें 40

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-22 अंक-1 जनवरी-मार्च 2009 सहयोग राशि-10 रुपए

15वीं लोकसभा के झूठे चुनावों का बहिष्कार करो!

क्रांतिकारी लोकसत्ता को मजबूत करो! फैला दो!!

प्यारी जनता!

आगामी अप्रैल-मई महीनों में एक बार फिर संसदीय चुनाव का तमाशा आपके सामने आ रहा है। करोड़ों रुपए की जनता की गाढ़ी कमाई को पानी की तरह बहाकर खेले जाने वाली इस खर्चीली नौटंकी का नाम है - 15वीं लोकसभा का चुनाव! जहां कांग्रेस पार्टी 'जय हो' की धुन पर सवार होकर जनता का ध्यान महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक मंदी आदि ज्वलंत समस्याओं से हटाकर दोबारा सत्ता पर काबिज होने का सपना देख रही है, वहीं भाजपा 'आतंकवाद' को अपना हथियार बनाकर अल्पसंख्यकों और दलित-आदिवासियों के खून से सने अपने पंजों को जनता की नजरों से छुपाने की कोशिश कर रही है ताकि वोट बटोरे जा सकें। टाटा, सलेम, जिंदल जैसे बड़े व विदेशी पूंजीपतियों को जमीन दिलवाने के लिए किसानों का कत्लेआम तक मचाने वाले माकपा-भाकपा के तथाकथित वामपंथी भी चुनावी दंगल में कूद पड़े हैं। बाकी समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, आरजेडी, डीएमके, एआईडीएमके, बीजेडी, तेलुगुदेशम आदि छोटे-बड़े राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दल भी, जिनका इतिहास पूरा बड़े व विदेशी पूंजीपतियों की सेवा का रहा है, फिर एक बार जनता के सामने झूठे वायदों का पुलिंदा लिए झोली फैलाकर वोटों की भीख मांगने निकल पड़े हैं। सिद्धांत, नीति, उसूल आदि चीजों से सख़्त परहेज करने वाली ये लुटेरी पार्टियां रोज-ब-रोज नित नए गठबंधन जोड़ रही हैं - पुरानों को तोड़ रही हैं।

दरअसल 2004 में हुए संसदीय चुनावों में भाजपा नेतृत्व वाली एनडीए सरकार के खिलाफ लोगों में व्याप्त गुस्से का फायदा कांग्रेस ने उठाया था। स्पष्ट बहुमत के अभाव में उसने कई पार्टियों से गठजोड़ कर यूपीए (संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन) कायम किया। इस गठबंधन ने जन विरोधी तथा साम्राज्यवाद परस्त नीतियों को लागू करने में पूर्ववर्ती एनडीए को भी पछाड़ दिया। बड़े पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों की कंपनियों को हमारे देश को दोनों हाथों से लूटने की खुली छूट दी। मनमोहन सिंह ने अमेरिकी साम्राज्यवादियों का पालतू कुत्ता बनकर उनका मन मोहने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ी। परमाणु समझौते पर दस्तखत कर देशहित को अमेरिका के पांव चढ़ा दिया। विदेशी पूंजी निवेश के लिए देश के बैंकिंग क्षेत्र, बीमा क्षेत्र व अन्य वित्तीय संस्थानों के दरवाजे खोल दिये। कॉरपोरेट घरानों व बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खुदरा व्यापार क्षेत्र में घुसेड़ कर लाखों छोटे दुकानदारों और व्यापारियों के पेट पर लात मारी। 'विकास' के नाम पर माइनिंग कंपनियों व सेजों के लिए लाखों एकड़ कृषि भूमि चढ़ा दी, जिससे लाखों किसानों को अपनी ही धरती से बेदखल होना पड़ा।

यूपीए के शासनकाल में खासकर 2008 के दौरान मंहगाई निर्बाध गति से बढ़ती रही। रोजमर्रा की चीजों, खासकर खाद्य वस्तुओं के दाम आसमान छूने लगे। पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की कीमतें कई बार बढ़ीं। भारतीय मध्यम वर्ग समेत आम जनता का जीना दूभर हो गया। ठेकेदारी, तालाबंदी और छंटनी ने लाखों मजदूरों को बाहर का रास्ता दिखा दिया। हजारों किसान यूपीए

★ 8 मार्च 2009 - अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस ★

कामरेड अनुराधा (जानकी दीदी) की याद में...

उनके आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए गांव-गांव में जोर-शोर से मनाओ!

शासन में आत्महत्या करने पर मजबूर हुए। भूखमरी के मामले में भारत की स्थिति सूडान, बंग्लादेश, पाकिस्तान और इथोपिया जैसे बेहद गरीब देशों से भी गई-गुजरी हो गयी है।

देश की सभी जगहों पर नौजवानों की फर्जी झड़पों में हत्याएं हर रोज अखबारों के पन्ने रंगती रहीं। कश्मीरी जनता के शांतिपूर्ण प्रदर्शनों का जवाब मनमोहन सिंह ने हमेशा गोलियों से ही दिया, जिससे आए दिन लोग मारे जा रहे हैं। लोगों के मूलभूत अधिकारों को भी मनमोहन गिरोह की लौह एड़ियों ने कुचल कर रख दिया।

एक तरफ जहां सरकार ने हिंदू फासीवादी गिरोह - यानी भाजपा, आरएसएस, वीएचपी, बजरंग दल, शिवसेना, अभिनव भारत, एमएनएस जैसे भगवा आतंकवादी संगठनों - को छुट्टा सांडों की तरह खुला छोड़ दिया, तो वहीं पूरे देश में मुसलमान जनता को गिरफ्तार कर भयंकर यातनाएं देने, हजारों नौजवानों को झूठे केसों में फंसाने, झूठी मुठभेड़ों में हत्याएं करने के मामलों में भाजपा को भी पीछे छोड़ दिया। छत्तीसगढ़ में भाजपा और यूपीए ने मिलकर फासीवादी सैनिक-सांगठनिक अभियान सलवा जुडूम चलाया। इस जुल्मी अभियान को चलाने के लिए लुटेरे शासक वर्गों ने अपना वफादार कुत्ता, दलाल कांग्रेसी नेता महेंद्र कर्मा को आगे रखकर, हजारों केंद्रीय अर्धसैनिक बलों को उतार दिया।

केन्द्रीय सत्ता से हाथ धोने के बाद भाजपा लगातार साम्प्रदायिक पत्तों से खूनी खेल खेलती रही। मुसलमानों और ईसाइयों की बसाहटों पर बम धमाके और हमले करवाए गये। ओडिशा के कंध माल जिले में ईसाइयों पर उसके आतंकी संगठनों द्वारा किए गए हमले उसकी बर्बरता की ताजा मिसाल है। भाजपा शासित राज्यों में भगवा आर्तकियों ने सरकारी तंत्र की मिलीभगत से खुलकर फासीवादी हमलों को अंजाम दिया। मालेगांव व समझौता एक्सप्रेस में बम धमाकों के अंदर भगवा आर्तकियों के खूनी हाथ होने की बात आज किसी से छुपी हुई नहीं रह गई। भारतीय सेना में भी इन भगवा आर्तकियों के प्रभाव का पर्दाफाश हुआ है।

छत्तीसगढ़ की रमन सरकार ने सलवा जुडूम के नाम पर बर्बर आतंक के जरिए 800 से ज्यादा आदिवासियों की हत्याएं कर डालीं। 8 जनवरी 2009 को दक्षिण बस्तर के सिंगारम में हुआ 18 निरीह आदिवासियों का नरसंहार, जिसे 'मुठभेड़' बताया गया, को इन तमाम हत्याकाण्डों की पराकाष्ठा कहा जा सकता है। 800 गांवों को जलाकर राख कर दिया गया। 100 से ज्यादा आदिवासी महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार हुए हैं। हजारों लोगों को जेलों में ठूंसकर जन जीवन को ही अस्तव्यस्त किया गया।

खुद को वाममोर्चा कहने वाली भाकपा-माकपा ने टाटा, जिंदल आदि दलाल बड़े पूंजीपति घरानों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सामने समर्पित होकर, उनकी बेरोक-टोक लूट के लिए लाल कालीन बिछा दी। नंदीग्राम और सिंगूर की संघर्षरत जनता पर जिस कदर माकपा के गुंडा गिरोहों ने जुल्म ढाया, उससे उसका लाल नकाब उतर कर सामाजिक फासीवादी चेहरा सामने आ गया है। बुरी तरह गिर चुकी अपनी विश्वसनीयता को दोबारा कायम करने की नाकाम कोशिश के तहत ही अब उन्होंने परमाणु समझौते के विरोध के नाम पर यूपीए सरकार से समर्थन वापस लिया।

खासकर 26 नवम्बर 2008 को मुम्बई पर हुए आतंकवादी हमलों की पृष्ठभूमि में भाजपा ने चुनावों में 'आतंकवाद' को एक बहुत बड़ा मुद्दा बनाया है। एक तरफ खुद ही मालेगांव, नासिक, समझौता एक्सप्रेस, हैदराबाद जैसे बम विस्फोटों में लिप्त होकर, इस तरह 'आतंकवाद' पर हाय तौबा मचाने के पीछे मंशा सिर्फ यही है कि जनवादी व क्रांतिकारी आन्दालनों पर दमन हेतु सख़्त कानून बनवाए जाए। 'आतंकवाद' से लड़ने के नाम से कांग्रेस और भाजपा की मिलीभगत से राष्ट्रीय खुफिया एजेंसी (एनआईए) का गठन तथा यूएपीए (गैर-कानूनी गतिविधियों का निरोधक कानून) का संशोधन विधेयक परित करना इसी खतरे की ओर इंगित करता है। जनता के वास्तविक मुद्दों से पल्ला झाड़ते हुए अब पाकिस्तानी 'भूत' को फिर बोतल से बाहर निकाला गया।

वैश्विक आर्थिक संकट भारतीय अर्थव्यवस्था को भी अपने दानवी शिंकजे में जकड़ता जा रहा है। विदेशी पूंजी के बल पर टिका शेयर बाजार औंधे मुंह गिर रहा है। आज प्रतिक्रियावादी शासकों की नीतियों के कारण केवल 1 लाख परिवारों के पास 17.5 लाख करोड़ रुपए की पूंजी जमा हो गई है। यह देश के सकल घरेलू उत्पाद का 50 प्रतिशत है। और इसी समय हालात यह है कि देश की 83 करोड़ जनता प्रतिदिन मात्र 20 रुपए पर गुजर-बसर करने को मजबूर है। 2007 में जारी हुई अंतर्राष्ट्रीय भूख रिपोर्ट में भारत का स्थान 94वें नंबर से फिसल कर 118वें नंबर पर पहुंच गया है। अमीर और गरीब के बीच की खाई लगातार बढ़ती जा रही है। सामाजिक उत्पीड़िन बढ़ रहा है। जनता में आक्रोश का पारा दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, जिसका खामियाजा शासक वर्गों को निश्चित रूप से भुगतना होगा। संसदीय चुनावों की ड्रामेबाजी आम आदमी का पेट नहीं भर सकती।

संसदीय चुनावों का बहिष्कार क्यों?

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनावों से सत्ता पर काबिज पार्टियां बदल सकती हैं, पर व्यवस्था नहीं। चुनावों से इस वर्तमान अन्यायपूर्ण व शोषक व्यवस्था में कोई बुनियादी बदलाव आने वाला नहीं है। चुनाव से जनता को रोटी-कपड़ा-मकान, शिक्षा-स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं की भी गारंटी नहीं मिल सकती।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनावों से जनता को वर्तमान व्यवस्था खारिज करने का हक नहीं मिलता। आम मतदाता के सामने पर्याप्त विकल्प ही नहीं रहता। उसे सिर्फ यह तय करने का विकल्प होता है कि वह किस पार्टी के या किस रंग के चोर-लुटेरे को आने वाले 5 सालों के लिए उसे लूटने का मौका देना चाहता है।

➢ **क्योंकि** संसद कुत्तों की तरह भौंकने के अड्डे के अलावा कुछ नहीं है। यह लोगों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने वाली नीतियों को लागू कर ही नहीं सकती। इसमें पहुंचने वाले सब दलाल पूंजीपतियों, साम्राज्यवादियों व सामंतों के प्रतिनिधि भर हैं। वे उन्हीं के इशारों पर और उन्हीं के हित में कानून-कायदों को पास करते हैं।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनाव पूरा पैसों का खेल है। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' की तर्ज पर जिसके पास पैसा है, पहुंच है, गुण्डों की फौज है, गाड़ी-घेड़े हैं वही चुनाव लड़ सकता है। जीतने के बाद इनका पहला लक्ष्य यह होता है कि चुनाव में खर्चे गए पैसों की भरपाई कर ली जाए। संसद में आम गरीब आदमी चाहकर भी नहीं पहुंच सकता। किसी न किसी तरीके से पहुंच भी गया तो उसके पास कुछ करने की बजाए खुद ही इस भ्रष्ट व्यवस्था का भागीदार बनने की संभावना ज्यादा रहती है।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनाव के जरिए बड़े-बड़े अपराधी चुनकर आते हैं। पप्पू यादव, राजा भैया, शाहबुद्दीन, नरेन्द्र मोदी, महेंद्र कर्मा, बुद्धदेव जैसे खूंखार हत्यारे, गुण्डे, बलात्कारी चुनाव 'जीत' जाते हैं। इससे बड़ा व सुस्पष्ट उदाहरण और क्या हो सकता है कि ये चुनाव झूठे और ढोंगी हैं?

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनावों में बाहुबल व धनबल के साथ-साथ जातिवाद, क्षेत्रीयवाद और धार्मिक ध्रुवीकरण का बोलबाला रहता है। पैसा बांटने, धोती-साड़ी बांटने और मतदान के पहले दिन गांव-गांव में शराब की नदियां बहाने के उदाहरण बेहिसाब हैं।

➢ **क्योंकि** संसद अंग्रेजों से भारतीय दलाल शासकों को मिला हुआ उपहार है। इसके चुनावों में हजारों कारोड़ रुपया स्वाहा किया जाता है। इसके संचालन पर हर दिन करोड़ों का खर्चा आता है जिसका बोझ अंततः विभिन्न टैक्सों के रूप में जनता पर ही पड़ता है।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनाव में जीतने वाले व्यक्ति को 5 साल तक जनता को झेलना ही पड़ेगा। इस संसदीय प्रणाली में इस बात की व्यवस्था ही नहीं है कि अगर किसी नेता का कामकाज ठीकठाक नहीं है या वह जनता की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर रहा है तो उसे वापस बुलाया जाए। इसलिए भी यह चुनाव और यह लोकतंत्र बहुत बड़ा ढोंग है।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनाव में मतदान की प्रक्रिया में धांधलियां आम हैं। लोगों को डरा-धमकाकर किसी एक पक्ष में वोट डलवाए जाते हैं। बूथों पर कब्जे की घटनाएं भी आम हैं। क्रांतिकारी संघर्ष वाले इलाकों में तो चूंकि जनता चुनावों का व्यापक तौर पर बहिष्कार करती है इसलिए मतदान कर्मचारी और पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के जवान सांठगांठ के साथ मतदान केन्द्रों में गए बगैर ही बटन दबाकर खुद ही 'मतदान' कर देते हैं।

➢ **क्योंकि** संसदीय चुनाव हर बार अर्ध सैनिक व पुलिस बलों की संगीनों के साये में करवाया जाता है। लोगों को आतंकित कर जोर-जबर्दस्ती से वोट डलवाए जाते हैं। अगर यह वाकई लोकतंत्र है तो जनता को अपनी मर्जी से वोट देने के साथ-साथ वोट नहीं देने का अधिकार भी होना चाहिए। यह भी लोकतंत्र का हिस्सा है। लेकिन वोटों का बहिष्कार करने का ऐलान करने वाली जनता पर लाखों अर्ध सैनिक-पुलिस बलों के जरिए दमन ढाना कैसा लोकतंत्र है?

यह सच है कि एक गुण्डे की हैसियत से मैंने तुम्हें बहुत पीटा और पैसा लूटा था। अब मुझे माफ कर देना। बस, अब मुझे तुम्हारा वोट चाहिए ताकि दोबारा मैं तुम्हारी सेवा कर सकूं।

प्यारे भाइयो व बहनो!

वर्तमान व्यवस्था का आधार शोषण, उत्पीड़न और भेदभाव है। इसका नियंत्रण पूरा बड़े सामंतों, दलाल पूंजीपतियों और साम्राज्यवादियों के हाथों में है। चाहे कोई भी पार्टी सत्ता पर रहे

इन तीन वर्गों की ही हुकूमत चलती है। ये तीनों शासक वर्ग हमारे दुश्मन हैं जो पहाड़ बनकर हमारे सीनों पर लदे हुए हैं। और इनकी व्यवस्था के तहत होने वाले चुनावों से हम 90 प्रतिशत मेहनतकश लोगों को कुछ नहीं हासिल होने वाला है, जब तक कि इन तीन पहाड़ों का बोझ उतारा नहीं जाता। इसलिए इस लुटेरी संसदीय प्रणाली को और उसके तहत होने वाले झूठे चुनावों को ठुकरा देना चाहिए। बहिष्कार करना चाहिए।

तो फिर इसका विकल्प क्या है?

यह सवाल सभी के जेहन में आ जाता है। उपरोक्त तीन दुश्मनों - साम्राज्यवादियों, सामंतवादियों और दलाल पूंजीपतियों को उखाड़ फेंककर इस शोषणकारी व्यवस्था को जड़ से बदलना और मजदूर-किसानों की एकता की नींव पर छोटे व मध्यम पूंजीपतियों के संयुक्त मोर्चे के हाथों में राजसत्ता को ले लेना ही इसका विकल्प है। और इसके लिए देश में नई जनवादी क्रांति को सफल बनाना जरूरी है। और यह क्रांति दीर्घकालीन लोकयुद्ध के रास्ते से ही संभव हो सकेगी जो आज दण्डकारण्य, बिहार-झारखण्ड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र समेत भारत के विभिन्न इलाकों में जारी है। हमारे दण्डकारण्य में इस लोकयुद्ध की उपलब्धि के रूप में जनता के बीच क्रांतिकारी जन राजसत्ता का उदय हो चुका है जिसे 'जन सरकार' (गोंण्डी भाषा में 'जनताना सरकार') के नाम से लोकप्रियता हासिल हुई है। यह लोकसत्ता गांव स्तर से इलाका स्तर और इलाका स्तर से जिला स्तर में विकसित होकर और भी उन्नत चरणों में पहुंचने की राह पर है। शत्रु बलों के भीषण दमन-उन्मूलन अभियानों और व्यापक नरसंहारों का वीरतापूर्वक मुकाबला करते हुए आज जनता और उसकी अपनी सेना - पीएलजीए इस जन राजसत्ता की हिफाजत कर रही है।

यह क्रांतिकारी जनसत्ता ही वर्तमान शोषणकारी व्यवस्था का विकल्प है। देश की तमाम श्रमिक जनता आशा भरी नजरों से इसकी ओर देख रही है क्योंकि यही देश में सच्चे लोकतंत्र की गारंटी देगी। तो आइए..... इस उदीयमान क्रांतिकारी जन राजसत्ता के तहत संगठित हो जाइए। इसकी रक्षा करने के लिए आगे आइए। इसका फैलाव देश के कोने-कोने में करने के लिए जारी जनयुद्ध में अपना योगदान बढ़ाइए। इसके संचालन में धुरी की तरह काम कर रही पीएलजीए में हजारों-लाखों की संख्या में शामिल हो जाइए।

क्रांतिकारी अभिनन्दन के साथ...

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

10 मार्च 2009 **भाकपा (माओवादी)**

(...पेज 5 का शेष)

करना बंद करो। संघर्ष के इलाकों में ही क्यों, कई ऐसे गांवों में भी, जहां हमारी उपस्थिति ही नहीं है, लोगों ने वर्तमान शोषणकारी संसदीय व्यवस्था से तंग आकर तथा अपनी जायज मांगों को लेकर वोटों का बहिष्कार किया।

पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों के आतंकी दमन अभियानों की परवाह न करते हुए जनता ने इस बार भी चुनाव का बड़े पैमाने पर बहिष्कार किया। जनता की रक्षा की खातिर हमारी पीएलजीए, उसका आधार बल - जन मिलिशिया और जनता ने मिलकर आतंकी बलों और अत्याचारी राजनेताओं पर कई जगहों पर हमले कर कुछ को हताहत किया। कई ऐसे गांव हैं जहां से एक भी वोट नहीं डाला गया। हमारे संघर्ष के इलाकों में 'भारी मतदान' के जो भी आंकड़े दिए जा रहे हैं वो सब सरकारी सशस्त्र बलों की 'बदौलत' ही हैं। कई गांवों में मतदान दल गए ही नहीं थे। मतदान दल के लोग और सशस्त्र बल मिलकर बटन दबा-दबाकर लोकतंत्र के इस बहुत बड़े 'त्यौहार' को खुद ही मनाया। कहीं-कहीं तो ऐसा भी हुआ कि मतदान दल (साथ में पुलिस दल भी) गांव में आधे घंटे तक भी नहीं रुका था। इस दौरान जहां, जो, जैसा भी मिला उसे पकड़ डरा-धमकाकर और मार-पीटकर बटन दबवा लिया। एक-एक व्यक्ति से तीन-तीन, चार-चार बार और कहीं-कहीं तो 10-12 साल के बच्चों को पकड़कर जबरन बटन दबवा लेने के किस्से गांवों में लोग हंसी-मजाक के साथ सुना रहे हैं। मानपुर-मोहला क्षेत्र के दोरदे और मूचर और दक्षिण बस्तर के गोरगोण्डा मतदान केन्द्रों की बात इसलिए सामने आई क्योंकि वहां मीडिया की नजर गई थी। दरअसल पूरे बस्तर में ऐसे केन्द्र सैकड़ों की संख्या में होंगे जिसके बारे में शिकायत करने वाले भी कोई नहीं है। इस पूरे प्रकरण से यह बात फिर एक बार अच्छी तरह साबित हो गई है कि चुनाव एक ढकोसला है और एक नौटंकी भी जिससे देश की मेहनतकश लोगों का कोई लेना-देना नहीं है।

पूरे छत्तीसगढ़ में, खासकर हमारे संघर्ष के बाहरी इलाकों में चुनावी पार्टियों ने मतदाताओं को रिझाने के लिए कैसे नोट बांटे और दारू की बोतलें बांटीं, इसकी चर्चा तो मीडिया में भी हुई थी। लेकिन हमारे इलाकों में लुटेरे राजनेताओं ने घुसने की हिम्मत तक नहीं की और उनके पैसों और दारू के प्रलोभन के प्रयास भी यहां लगभग बेकार साबित हुए। हमारे संघर्ष क्षेत्रों (बस्तर और सरगुजा) की जनता ने सवोच्च राजनीतिक चेतना का परिचय देते हुए इस ढोंगी चुनावी नाटक को नकार दिया और यह ऐलान किया कि गांव-गांव में क्रांतिकारी जन कमेटियों का निर्माण ही इसका असली विकल्प है, जो सच्चे लोकतंत्र के निकाय हैं। हमारी स्पेशल जोनल कमेटी लुटेरों के वोटों का बहिष्कार करने वाली तमाम संघर्षशील जनता का क्रांतिकारी अभिनन्दन करती है।

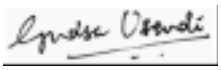

(गुड्सा उसेण्डी)
प्रवक्ता,
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस विज्ञप्ति

.24 नवम्बर 2008

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों के दौरान हुई सरकारी हिंसा, निर्दोष आदिवासियों की हत्या और भारी धांधलियों की निंदा करो!

दमन की परवाह न कर चुनावों का बहिष्कार करने वाली संग्रामी जनता का लाल-लाल अभिनन्दन!!

हजारों पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों की संगीनों के साये में, फर्जी मुठभेड़-हत्याओं के बीच, भारी धांधली व फर्जीवाड़े के साथ छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनाव जैसे-तैसे पूरे हो गए। इस बार आ रही भारी मतदान की खबरों से राजनीतिक हल्कों में फैली खुशी जल्द ही फीकी पड़ने लगी है क्योंकि फर्जी मतदान व धांधलियों की कड़वी सच्चाइयां अब एक-एक कर बाहर आने लगी हैं। इसे 'लोकतंत्र की जीत' या 'बुलेट पर बैलेट की जीत' की संज्ञा भी दी गई थी। मीडिया में यह भी प्रचारित किया गया था कि 'बस्तर क्षेत्र में लोगों ने बढ़-चढ़कर मतदान कर नक्सलियों की बहिष्कार की अपील को ठुकरा दिया।' वास्तव में 50 हजार से ज्यादा अतिरिक्त पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों को उतारकर पूरे बस्तर क्षेत्र को सैन्य छावनी में बदलने वाली सरकार ने ही यहां अपने 'बैलेट' को सुनिश्चित करने के लिए 'बुलेटों' का अंधाधुंध इस्तेमाल किया। अगर इसे 'जीत' कहनी है तो इसे सरकारी बंदूकों की 'जीत' कहनी होगी। 'निष्पक्ष' और 'स्वतंत्र' मतदान की धज्जियां कोई और नहीं, खुद सरकारी सशस्त्र बलों ने ही उड़ा दीं क्योंकि बस्तर में दर्जनों जगहों पर उन्होंने लोगों पर लाठियां, गोलियां बरसाईं, गिरफ्तारियां कीं और हत्याएं कीं.... इतना ही नहीं, खुद ही वोट भी डाले। 2003 और 2004 के चुनावों में इसी तरह सशस्त्र बलों द्वारा बड़े पैमाने पर खुद ही बटन दबाकर वोट डालने का प्रकरण जो पहली बार सुनने में आया था, उसे इस बार और भी बड़े पैमाने पर व सुनियोजित तरीके से दोहराया गया।

चुनाव के तीन दिन पूर्व, 11 नवम्बर 2008 की सुबह नारायणपुर से करीब 12 किलोमीटर दूर खोड़गांव में चुनाव बहिष्कार का प्रचार कर रहे जन संगठन सदस्यों - लालू, कुल्ले और कावे की नृशंस हत्या कर इन्हें इनामी नक्सली घोषित किया गया। चुनाव के दिन, 14 नवम्बर को कांकेर जिले के बांदे क्षेत्र में कोरेनार गांव के पास हमारी पीएलजीए ने मतदान के नाम पर गांवों में आतंक मचा रहे सीआरपीएफ बलों पर गोलीबारी की जिसमें एक जवान मारा गया था। इससे बौखलाए सीआरपीएफ ने कोरेनार गांव की निर्दोष जनता पर कहर बरपाया। घरों में घुसकर तलाशी ली और करीब 25 लोगों की बेरहमी से पिटाई की। इनमें से करमाराम मटामी और जूरूराम कोवासी को गांव से कुछ दूर ले जाकर सिर में गोली मार दी। मटामी ने मौके पर ही दम तोड़ दिया जबकि जूरूराम अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहा है। इसके अलावा, दक्षिण व पश्चिम बस्तर इलाकों में चुनावों के दौरान कई लोगों की झूठी मुठभेड़ों में हत्याएं की गईं। 14 नवम्बर को हमारी पीएलजीए द्वारा पश्चिम बस्तर डिवीजन के पिडिया के पास हेलिकॉप्टर पर हमला करने के बाद बौखलाए पुलिस वालों ने उसी गांव में एक 80 साल के बूढ़े किसान को गोली मार दी।

चुनावों के पहले, 18 अक्टूबर को कांकेर जिले के कोइलीबेड़ा थाने के पुलिस बलों ने माड़ के पहाड़ों में बसे गांव कुमुडगुण्डा की एक प्राथमिक स्कूल पर हमला कर आतंक मचाया था। इस हमले से बच्चे जंगल में तितर-बितर हो गए। नक्सलवादियों द्वारा स्कूली भवनों को ध्वस्त करने की बात पर आए दिन हाय तौबा मचाने वाला मीडिया आदिवासी बच्चों की स्कूल पर हुए इस आतंकी हमले पर चुप्पी साधे हुए है।

लोकतंत्र में वोट देने और उसका बहिष्कार करने के दोनों अधिकार लोगों को होते हैं। लेकिन इस झूठे लोकतंत्र के स्वयंभू ठेकेदारों को हमारे संघर्ष क्षेत्रों के लोगों का चुनाव बहिष्कार का फैसला नागवार गुजरा। जैसे कि किसी बाहरी देश के खिलाफ युद्ध के लिए सशस्त्र सैन्य बलों को गोलबन्द किया जाता है, उसी तर्ज पर हजारों पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों को यहां उतार कर लोगों के तमाम लोकतांत्रिक अधिकारों का घोर हनन किया गया। करीब एक माह तक कर्फ्यू जैसा माहौल था। इस दौरान हमारी पार्टी पर अनाप-शनाप दुष्प्रचार भी किया गया कि 'नक्सलवादियों ने वोट डालने वालों को मार डालने या उनकी उंगली काटने की धमकियां दीं।' इसी झूठ को दोहराते हुए अखबारों में कुछ लोगों ने लेख भी लिखे। हमारी पार्टी शुरू से कहती आ रही है कि जनता को वोट न देने का अधिकार भी है, और उसका हनन

(शेष पेज 4 में...)

छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव

भाजपा की दोबारा जीत : भारी फर्जीवाड़े व कांग्रेस के दिवालिएपन का परिणाम है!!

राज्य के पुलिस बल, सीएएफ, बीएसएफ, सीआईएसएफ, एसएसबी, आरपीएफ एवं सीआरपीएफ के हजारों सशस्त्र बलों के कड़े पहरे में एवं उनकी संगीनों के साए में 14 एवं 20 नवंबर 2008 को दो चरणों में छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव सम्पन्न हुए। इन चुनावों में जीत हासिल कर भाजपा के रमन सिंह ने दोबारा सत्ता संभाल ली। राज्य विधानसभा के 90 सीटों में से 50 भाजपा, 38 कांग्रेस एवं 2 बसपा के खाते में गईं, जबकि बाकी पार्टियों भाकपा, माकपा, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, गोंगपा का खाता तक नहीं खुला। भाजपा की जीत का श्रेय पूंजीवादी मीडिया के कुछ विश्लेषक मोदी फार्मूले को दे रहे हैं, जबकि कुछ लोग रमन सिंह की छवि को दे रहे हैं। भाजपा स्वयं इस जीत का श्रेय अपने पिछले कार्यकाल के विकास कार्यों को दे रही है। और कांग्रेस की हार के लिए गुटबाजी को सबसे बड़ा कारण माना जा रहा है। इन ढोंगी चुनावों को सही और इस झूठे लोकतंत्र को असली बताने वाले अपने ढंग से विश्लेषण पेश करते ही हैं ताकि लोगों को संसदीय चुनावों के भ्रम में उलझाकर रखा जा सके। लेकिन झूठ और धोखे पर आधारित इन चुनावों के विश्लेषण के पहले हमें यह जानना जरूरी है कि आखिर ये तथाकथित चुनाव संपन्न कैसे हुए थे। उसके बाद यह देखना चाहिए कि क्या उनके ये विश्लेषण सही है या झूठे।

संगीनों के साए में...

राज्य में पहले से तैनात हजारों जवानों के अलावा बीएसएफ, सीआइएसएफ, सीआरपीएफ, आरपीएफ की सैकड़ों कंपनियों को तैनात किया गया था। पहले चरण के लिए नक्सली मोर्चे पर 350 कंपनियां लगाई गई थीं। कुल मिलाकर 55 बटालियन मौजूद रहीं। दूसरे चरण के मतदान के लिए उत्तर छत्तीसगढ़ के नक्सली मोर्चे पर 20 बटालियन तैनात रहीं। कंधे पर मोर्टार, एके-47, एसएलआर, इंसास राइफलों और दर्जनों बख्तरबंद गाड़ियों से लैस होकर सरकारी सशस्त्र बल पहुंच गए थे। सेना के दसियों हेलिकाप्टर 600 घंटे तक उड़ान भरते हुए वोटरों के सिर पर मंडराते रहे। पिछले चुनावों की तुलना में 3 गुणा ज्यादा फोर्स तैनात रही। पूरे छत्तीसगढ़ को सैन्य छावनी में तब्दील किया गया था। ये पूरी तैयारी चुनाव के लिए न होकर किसी पराए देश पर आक्रमण की तैयारी जैसी थी। चुनाव के काफी पहले से ही गांवों पर हमले करके कई लोगों को गिरफ्तार किया गया था। फर्जी मुठभेड़ों में कई ग्रामीणों की हत्या की गई थी। वोट न देने वालों को मार डालने की, मतदान में भाग न लेने वाले गांवों को जला डालने की, 3 रुपए किलो चावल न देने की धमकियां दी गई थीं। इस तरह ग्रामीण जनता को भयभीत कर भारी दहशत का माहौल बनाया गया था।

फर्जी मुठभेड़ों का सहारा...

जबसे छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनावों की सरगर्मियां शुरू हुई थीं तबसे पूरे बस्तर क्षेत्र में झूठी मुठभेड़ की घटनाओं में तेजी आ गई। तीन महीनों के अंदर अविभाजित बस्तर क्षेत्र में दर्जनों आदिवासियों को मुठभेड़ों के नाम से मार दिया गया। चुनाव खत्म होने के बाद भी फर्जी मुठभेड़ों का सिलसिला बिना रुके जारी है। खासकर दक्षिण व पश्चिम बस्तर इलाकों में सबसे ज्यादा लोगों को फर्जी मुठभेड़ों में मारा गया है। इसके अलावा कई अन्य लोगों की हत्याएं दर्ज तक नहीं हुई हैं।

स्वेच्छा से ऐसे डाले लोगों ने विधानसभा चुनावों में वोट!
'शांतिपूर्ण' व 'स्वतंत्र' चुनावों का एक नजारा!!

5 से 8 अक्टूबर तक पश्चिम बस्तर डिवीजन के पिडिया इलाके में एसपी के नेतृत्व में सैकड़ों पुलिस बलों ने आतंक का नंगा नाच किया। घरों को जलाया। 5 अक्टूबर को कुंजाम सुक्कू नामक ग्रामीण को गोली मार कर लाश को जलते हुए घर में फेंक दिया। 7 अक्टूबर को उक्कुड गांव के पास एक और ग्रामीण की हत्या की। वहां भी कई घरों में आग लगा दी। 22 अक्टूबर को बीजापुर के पास गांव कमका पर पुलिस ने हमला कर एक ग्रामीण की हत्या सिर्फ इसलिए की क्योंकि वो हमारे

एक पीएलजीए सैनिक का बड़ा भाई था। इसके पहले ग्राम अकवा में पुलिस ने लोगों पर सैकड़ों गोलियां चलाईं और मोर्टार के दर्जनों गोले दागे। इसमें एक बूढ़े किसान बुरी तरह घायल हो गए जो अभी भी जिंदगी और मौत के बीच में झूल रहे हैं।

'मतदान' यूं हुआ....

पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों की इतनी भारी-भरकम तैनाती के बावजूद संघर्ष क्षेत्र में आने वाले अत्यधिक मतदान केन्द्रों में कोई नहीं पहुंचा था। उदाहरण के लिए पूरे माड़ डिवीजन में मात्र 3 मतदान केन्द्रों में सैकड़ों पुलिस बलों के साथ मतदान दल पहुंचे थे। बहुत कम केन्द्रों में ही सही, जो मतदान चला उसे मतदान कहना बेहद हास्यास्पद होगा। सशस्त्र बलों ने अपने सफर के लिए सशस्त्र बलों ने लोगों को ढाल की तरह इस्तेमाल किया। कई जगहों पर फर्जी मतदान किया। मतदान केन्द्रों तक भी न जाकर बीच जंगल में ही सशस्त्र बलों ने खुद ही मतदान किया। एक ही जगह में बैठकर आधा दर्जन से भी अधिक मतदान केंद्रों के मतदान को सशस्त्र बलों ने स्वयं ही वोट देकर 'संपन्न' कराया। गांवों में मतदान केन्द्र तक भी न जाकर रास्ते में जो भी मिला उसी से कई बार वोट डलवा लिया गया था। यहां तक कि 10-12 साल के बच्चे भी मिलते हैं तो उन्हीं को वोट डालने पर मजबूर किया गया था। दरअसल फर्जी मतदान के मामले कम ही उजागर हुए, बाहर न आने वाले मामले और भी बहुत से रहे। इस तरह संगीनों के साए में 'स्वतंत्र' व 'निष्पक्ष' मतदान संपन्न हुआ जिसमें भाजपा को बहुमत मिल गया।

विश्लेषणों से जनता को धोखा नहीं दे सकते!

मतदान से जुड़ी सच्चाइयां ये रहीं तो बुर्जुवाई विश्लेषकों ने इनसे आंख चुराते हुए अपने-अपने ढंग से भाजपा की जीत के कारण प्रस्तुत किए। और भाजपा ने इसे अपने पिछले 5 साल के काम की बदौलत मिली जीत बताया। आइए, जरा इन विश्लेषणों पर नजर डालें।

भाजपा के पिछले 5 साल में विकास किसका हुआ था? विनाश किसका हुआ था?

भाजपा ने 2003 में राज्य की सत्ता संभालते ही बड़े पूंजीपतियों के हित में नई औद्योगिक नीति, नई खनिज नीति एवं नई श्रम नीति बनाई। टाटा, जिंदल, मित्तल, एस्सार आदि के साथ कई एमओयू किए गए, जिनके तहत राज्य की सम्पदाओं एवं संसाधनों को खासकर बस्तर के आदिवासियों की हजारों एकड़ जमीन अधिग्रहित करने की कोशिश करती रही। कर्मचारियों, शिक्षकों, डाक्टरों, इंजिनियरों आदि की नियुक्ति में केजुवल एवं ठेका पद्धति को पूर्ण रूप से लागू किया गया। शिक्षाकर्मियों की लंबित मांगों के प्रति अड़ियल रवैए के साथ-साथ उनके आंदोलन का पुलिस की लाठियों से दमन किया। भाजपा के कार्यकाल के शुरूआती 2 सालों में 2 दर्जन से भी ज्यादा हिरासती मोतें हुईं। 2005 में छत्तीसगढ़ विशेष जनसुरक्षा कानून के नाम पर दमनकारी कानून बनाया गया, जिसके तहत निर्दोष जनों को यहां तक कि पत्रकारों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को भी जैलों में कैद किया गया।

राज्य मंत्रीमंडल के कई सदस्यों पर गबन के कई गंभीर आरोप लगे। कुनकरी चावल घोटाला समेत कई घोटाले उजागर हुए। सुशासन, सुराज का दंभ भरने वाली भाजपा के प्रति लोगों की नाराजगी बढ़ने लगी थी। शासकीय कर्मचारी सड़कों पर उतरने लगे थे। हर तरफ विरोध प्रकट होने लगा था। लोगों की नाराजगी को दूर करने रमन सरकार कई सस्ती व लोक लुभावन योजनाओं पर अमल कर रही थी। किसानों की कर्ज माफी, बेरोजगारी भत्ता, 25 पैसे प्रतिकिलो नमक, तेंदुपत्ता बोनस, तेंदुपत्ता मजदूरों को जूते, आदिवासियों को गाय-बैल आदि योजनाओं का जोरशोर से प्रचार करने लगी थी। इन सब योजनाओं के टांय-टांय फिस्स हो जाने से अपने कार्यकाल के आखिरी साल में 3 रुपए चावल योजना को लागू कर दिया। लोक लुभावन योजनाओं को ही जनता के असली विकास के रूप में बढ़ा-चढ़ाकर प्रचारित किया था ताकि अपनी जन विरोधी व दलाल पूंजीवाद-साम्राज्यवाद परस्त नीतियों पर परदा डाला जा सके। भाजपा का पिछला शासनकाल पूरा एक काली किताब है।

भाजपा, कांग्रेस - एक ही थैली के चट्टे-बट्टे!

राज्य में भाजपा सरकार के 5 साल की कार्य अवधि के दौरान केन्द्र में कांग्रेस की गठबंधन सरकार सत्तारूढ़ रही। राज्य में भाजपा सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियां केन्द्र में मौजूद कांग्रेस सरकार से भिन्न नहीं थीं। केन्द्र सरकार जिन जन विरोधी नीतियों को देश भर में लागू कर रही थी, उन्हीं नीतियों को राज्य में भाजपा सरकार के द्वारा अमल किया गया। श्रमिक विरोधी, किसान विरोधी, आदिवासी विरोधी नीतियों का कांग्रेस पार्टी ने कभी भी विरोध नहीं किया। भाजपा के विधायकों व मंत्रियों के घोटालों के प्रति कांग्रेस की उदासीनता भी असहज नहीं थी। क्योंकि कांग्रेस नेता खासकर नेता प्रतिपक्ष महेंद्र कर्मा के भ्रष्टाचार के किस्से भी कम नहीं थे। भाजपा सरकार की दमनकारी योजनाओं का भी कांग्रेस समर्थन करती रही। छत्तीसगढ़ विशेष जनसुरक्षा कानून का कांग्रेस ने विरोध नहीं किया। बर्बर सलवा जुडूम का सूत्रपात करने में भी केन्द्र सरकार की भूमिका किसी से छुपी हुई नहीं है।

छवि का असर!?

पूंजीपतियों के तलवे चाटने वाला मीडिया चाहे तो किसी की छवि बना सकता है या फिर बिगाड़ भी सकता है। असल बात यह होती है कि अमुक व्यक्ति पूंजी की सेवा कितनी वफादारी व ईमानदारी से करता है। छत्तीसगढ़ के चुनावों के संदर्भ में एक भ्रम को मीडिया ने जानबूझकर फैलाया कि रमन सिंह 'सरल' या 'स्वच्छ' छवि वाला इंसान है। जिसके शासन में सैकड़ों आदिवासियों का कत्लेआम किया जाता है और दर्जनों महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया जाता है, जिसके शासन में दर्जनों दलित-आदिवासी युवकों को पुलिस की हिरासत में मारा जाता है, जिसके शासन में घोटाले चरम पर पहुंचते हैं, लाखों लोगों को विस्थापन की मार झेलनी पड़ती है, ऐसे दानव को 'स्वच्छ' छवि वाला बताना सफेद झूठ है। जनता को मातम मनाने पर मजबूर करने वाली घोर जन विरोधी नीतियां रचने वाले रमन सिंह की तथाकथित छवि जनता ने नहीं, बल्कि जिंदल, मित्तल, टाटा जैसे

कार्पोरेट घरानों के टुकड़ों पर पलने वाले मीडिया ने बनाई। जैसे कि सबको पता है संसदीय चुनावों में जनता के सामने सभी लुटेरों में से किसी एक पार्टी के लुटेरे को चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता, ऐसे में रमन सिंह जैसों का दोबार जीतना भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इस 'जीत' के लिए उसकी 'छवि' को श्रेय देना उसकी तमाम जन-विरोधी करतूतों पर परदा डालने और उसके शोषक वर्गीय चरित्र को छुपाने की नाकाम कोशिश भर है।

पैसों को पानी की तरह बहाया!

वैसे तो ढोंगी चुनावों में पैसों की भूमिका आज किसी से छुपी हुई बात नहीं है। लेकिन उसकी पहुंच किस हद तक बढ़ चुकी है, इसे जनता ने छत्तीसगढ़ के विधानसभा चुनावों के दौरान साफ तौर पर देखा। भाजपा और कांग्रेस दोनों ने भी पैसों को पानी की तरह बहाया। यहां तक कि खुद को दलितों का मसीहा बताते नहीं थकने वाली बहुजन समाज पार्टी भी पैसे बहाने के मामले में किसी से पीछे नहीं रही। कई उम्मीदवारों ने बाकायदा अपने और अपने पार्टी के नाम से लिफाफे छपवाकर उसमें हजारों रुपए की राशि रखकर गांवों में बांटा। एक महिला को नोट बांटते हुए महेन्द्र कर्मा की तस्वीर तो अखबारों ने भी छापी। यह तो एक उदाहरण है जो हमें मीडिया के जरिए समझ में आया। गांव-गांव में पैसे और शराब की जैसे गंगा ही बहाई गई। अपनी शर्मनाक पराजय के बाद कांग्रेस की हाई कमान द्वारा बुलाई गई समीक्षा बैठक में कारणों में एक यह भी बताया कि पैसा खर्च करने में वह पीछे रह गई थी। यानी क्या वे नंगे और निर्लज्ज होकर कह नहीं रहे हैं कि चुनाव नीतियों और उसूलों से नहीं, बल्कि पैसों और प्रलोभनों से लड़े जाते हैं और जीते भी जाते हैं? इससे सुस्पष्ट उदाहरण और क्या हो सकता है?

विपक्ष का दिवालिएपन

प्रदेश का प्रमुख विपक्षी पार्टी कांग्रेस की गुटबाजी जगजाहिर है। पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी, हाल ही में पुन: कांग्रेस प्रवेश करने वाला पूर्व केन्द्रीय मंत्री विद्याचरण शुक्ल, विधानसभा में विपक्षी नेता महेन्द्र कर्मा, चरणदास महन्त, मोतीलाल वोरा सभी अपनी-अपनी ढपली, अपना अपना-अपना राग अलापने वाले हैं। ये लोग बागी उम्मीदवारों को खड़ा कर कांग्रेस के ही अंदर अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराने में मशगूल रहे। एक तो गुटबाजी, और दूसरी बात उसकी जन-विरोधी नीतियां। नीतियों में तो कोई बुनियादी फर्क है नहीं जिससे कि जनता विश्वास कर सके। सशस्त्र संघर्ष के इलाकों में पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के सहारे किए गए फर्जी मतदान, भारी फर्जीवाड़े और 'राहत' शिविरों में बोगस मतदान करवाने में इन दोनों ही पार्टियों की मिलीभगत थी।

राज्य के विधानसभा चुनावों में शामिल बाकी पार्टियों में बहुजन समाज पार्टी, सीपीआई, गोंडवाना गणतंत्र पार्टी प्रमुख हैं। हालांकि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने भी चुनाव में भाग लिया था लेकिन राज्य में उसका सांगठनिक आधार नगण्य है। बहुजन समाज पार्टी उत्तर प्रदेश के प्रयोग का हवाला देकर राज्य में चुनाव प्रचार संभाली थी। राज्य में पिछले पांच सालों के दौरान उसने जनहित का कोई मुद्दा नहीं उठाया था। सिर्फ चुनाव के समय पर ही दलित बहुजनों के अगुवा के तौर पर स्वयं को पेश करके अपने कुछ उम्मीदवारों के लिए कुछ वोट और सीट पाने की कोशिश की। बसपा छत्तीसगढ़ में 2 सीटें हासिल करने के साथ-साथ कुछ विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस की हार में सहायक साबित हुई। हालांकि दलितों के लिए जमीन, आवास, शिक्षा आदि बुनियादी मुद्दों पर बहुजन समाज पार्टी की नीति कांग्रेस-भाजपा से भिन्न नहीं हैं।

सीपीआई का कामकाज राज्य में खासकर बस्तर में बहुत पुराना है। लेकिन उसके पास उत्पीड़ित एवं मेहनतकश जनता के वास्तविक विकास की कोई एजेंडा नहीं है। जनता को शोषण से मुक्त कराने की कोई नीति नहीं है। विगत में आदिवासी विरोध ी 'जन जागरण' (जन दमन) अभियान में सक्रिय रहकर मुंह की खाने वाली भाकपा ने हालांकि सलवा जुडूम का विरोध करने की लाइन अपनाई हुई है और बस्तर में प्रस्तावित टाटा और एस्सार की बड़ी परियोजनाओं का विरोध कर रही है, लेकिन वह असल में बहुराष्ट्रीय कंपनियों, बड़े पूंजीपतियों के खिलाफ नहीं है। वह न तो 'सेज' की विरोधी है और न ही उदारीकरण, निजीकरण व

....भाजपा अगर यह समझती है कि उसका दोबारा जीतना उसकी सारी जन विरोधी और सलवा जुडूम जैसी दमनकारी करतूतों को मिली जन स्वीकृति है, तो इससे बड़ा मजाक कुछ नहीं हो सकता। जैसे कि हम पहले से बताते आ रहे हैं, चुनाव एक ढकोसला है। ऐसे चुनावों में जनता के पास किसी एक पक्ष के लुटेरों को चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता। इस शोषणकारी व्यवस्था को जड़ से बदलकर शोषणविहीन व जनवादी व्यवस्था का निर्माण करना ही देशवासियों की सभी समस्याओं का सही समाधान है - वही असली विकल्प है, जो कि ऐसे झूठे चुनावों के जरिए कभी संभव नहीं है, बल्कि नई जनवादी क्रांति से ही संभव है। इसलिए ऐसे चुनावों में कोई भी पार्टी जीतती तो जनता को कुछ हासिल होने वाला नहीं है। खासकर इन चुनावों में भाजपा, कांग्रेस समेत सभी राजनीतिक पार्टियों ने जिस प्रकार पैसा, प्रलोभन और अन्य कई हथकण्डों का खुल्लमखुल्ला प्रयोग किया वह अभूतपूर्व था। भाजपा ने खासकर हमारे इलाकों में पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों से अपने पक्ष में फर्जी मतदान करवाया। वास्तव में हमारे क्षेत्र के अत्यधिक गांवों की जनता ने चुनावों का बहिष्कार किया। हालांकि उनके वोट पुलिस व सीआरपीएफ वालों ने डाले।

हम समूचे मेहनतकश लोगों का आह्वान करते हैं कि भाजपा की जन विरोधी, दलाल पूंजीपति व साम्राज्यवाद परस्ती नीतियों के खिलाफ संघर्ष तेज करें। आदिवासियों का कत्लेआम कर रही भाजपा सरकार की दमनकारी नीतियों के खिलाफ व्यापक संघर्ष छेड़ दें।

- भाकपा (माओवादी) की डीके एसजेडसी द्वारा 15 दिसम्बर 2008 को जारी प्रेस विज्ञप्ति से....

भूमंडलीकरण की नीतियों की। वह तो चुनाव के जरिए सत्तासीन होने के सपने संजोई है। कांग्रेस, भाजपा की आर्थिक व औद्योगिक नीतियों से बुनियादी फर्क नहीं रखती है। फिर भी सलवा जुडूम और टाटा-एस्सार का विरोध की बदौलत भाकपा बस्तर के दंतेवाड़ा और कोंटा की सीटें जीत भी सकती थीं, लेकिन संगीनों का साया, धनबल, धमकियां, 'राहत' शिविरों का मतदान आदि पहलुओं का नकारात्मक असर उसे झेलना पड़ा।

चुनाव बहिष्कार के जरिए जन विकल्प

हमारी पार्टी के चुनाव बहिष्कार के आह्वान को सरकारें और संसदीय पार्टियां बहुत बड़ी चुनाती मानती हैं। चुनाव बहिष्कार जनयुद्ध को तेज करना, जनताना सरकारों का गठन, इनकी मजबूती और विस्तार अंततः जनता की जनवादी राजसत्ता स्थापित करना हमारा घोषित ऐजण्डा है, जबकि हर 5 हाल में चुनाव संपन्न करवाकर अपने लूटखोर शासन को सुनिश्चित करना शोषक वर्गों का मकसद है। इसलिए चुनाव बहिष्कार को दो व्यवस्थाओं के बीच टकराव, दो सेनाओं - सरकारी सशस्त्र बलों और जन मुक्ति छापामार सेना के बीच भिड़ंत, दो सरकारों - शोषणमूलक एवं समतामूलक सरकरों के बीच संघर्ष, विकास के दो नमूनों - सार्वजनिक संपत्ति एवं संसाधनों की लूट तथा संसाधनों का इस्तेमाल समस्त जनता के हित में करने के बीच के मूलभूत फर्क के रूप में देखा जाना चाहिए।

समूचे बस्तर में चुनाव बहिष्कार के आह्वान को विफल करने के लिए सरकार ने सशस्त्र बलों के आतंक का सहारा लिया। चुनाव के डेढ़-दो महीने पहले से ही गांवों पर हमले तेज कर दिए थे। हर तरफ आतंक का महौल पैदा कर दिया गया था।

चुनाव बहिष्कार के आह्वान के साथ ही पीएलजीए ने आतंकी सशस्त्र बलों का मुकाबला करने के लिए प्रतिरोध अभियान तेज किया। इसके तहत मार्ग अवरुद्ध किए गए थे। सरकारी सशस्त्र बलों पर घात लगाकर हमले किए गए, जिनमें कई जवान मारे गए। और कुछ घायल हो गए। जनता के सहयोग से हजारों गड्ढ़े खोद कर बूबी ट्रैप्स विछाए गए, जिनमें गिरकर कई जवान घायल हो गए। पहली बार वायु सेना के हेलिकाप्टर को निशाना बनाया गया था जिसमें एक फ्लाइट इंजिनियर मारा गया। कई जगह वोटिंग मशीनों (ईवीएम) को जनता और जन बलों ने ध्वस्त कर दिया। पीएलजीए के इस प्रतिरोध अभियान में हजारों लड़ाके शामिल थे, जिसके चलते सरकारी सशस्त्र बल एंव मतदान दल अंदरूनी इलाकों में कदम नहीं रख सके। बस्तर की जनता ने मतदान का बहिष्कार किया था। अधिकांश केन्द्रों में एक भी वोट नहीं पड़ा। सशस्त्र बलों की मौजूदगी के बावजूद लोगों ने कई मतदान केन्द्रों में वोट नहीं डाले। मतदान के दिन समूचे बस्तर में लोगों ने हजारों की संख्या में चुनाव बहिष्कार की सभाओं में भाग लिया। इसलिए गांव के गांव खाली हो गए थे। मतदान दलों को मतदान केन्द्रों में लोग ही नहीं मिले। पुनर मतदान में फर्जी मतदान प्रकाश में आने के बाद भारी बंदोबस्त के बीच तीसरी बार किए गए मतदान में दक्षिण बस्तर के गोरगुंडा के 711 मतदाताओं में से सिर्फ 10 ने ही मतदान किया था। करीब 10 लाख रुपए खर्च कर एक पूरी बटालियन को लगाने के बावजूद भी जनता ने करीब-करीब पूर्ण बहिष्कार कर या साबित कर दिया कि दृढ़ इच्छाशक्ति को बंदूक के बल पर कुचला नहीं जा सकता। इससे चुनाव बहिष्कार के असर का अंदाजा लगा सकते हैं। इस तरह बस्तर की ग्रामीण जनता ने साबित किया कि वह माओवादियों के राजनीतिक विकल्प - जनवादी राजनीतिक सत्ता, जनताना सरकार के साथ खड़ी है। भाकपा (माओवादी) ने पार्टी इकाइयों, पीएलजीए एवं जन संगठनों के जरिए जनता के बीच में चुनाव बहिष्कार का व्यापक प्रचार अभियान छेड़ा था। पर्चा, पोस्टर, बैनर, जुलूस एवं जनसभाओं के जरिए इस अभियान को सफल बनाया गया।

जनता ने जनवादी सत्ता को विकल्प चुना!

चुनाव के जरिए वर्तमान शोषण मूलक व्यवस्था खत्म नहीं होगी। जनता की बुनियादी जरूरतों की पूर्ति नहीं होगी। व्यवस्था का अमूल-चूल परिवर्तन संभव नहीं है क्योंकि यह लोकतंत्र सच्चा नहीं है, झूठा है। इन चुनावी नतीजों ने फिर एक बार साबित किया कि इन झूठे चुनावों में जनता के पास कोई विकल्प नहीं रहता। वहीं इन चुनावों का भारी पैमाने पर बहिष्कार करने वाली क्रांतिकारी जनता ने साबित किया कि वह क्रांतिकारी विकल्प के पक्ष में है। ★

उंगली कट जाए परवाह नहीं, वोट तो डालना ही है!?

इन चुनावों के दौरान मीडिया ने बार-बार यह दुष्प्रचार किया कि नक्सलियों ने वोट डालने वालों की उंगली काटने की धमकियां दीं। इसमें खुद को निष्पक्ष बताने वाला बीबीसी भी एक कदम आगे ही रहा। इसके संवाददाता सलमान रावि ने कई बार अपनी रिपोर्टों में दोहराया कि नक्सलवादियों ने वोट डालने से उंगली (या हाथ) काटने की धमकियों के पोस्टर चिपका रखे हैं। 15 नवम्बर के दिन 'दैनिक भास्कार' में विशेष संपादकीय लिखते हुए संजय अहिरवाल ने भी इसी झूठ को बेहद घटिया अंदाज में पेश किया। किसी ताड़नार गांव के आईतु के हवाले से अहिरवाल का कहना है कि 'नक्सलियों ने कई लोगों की उंगलियां काट दीं।' सच्चाई यह है कि चुनाव बहिष्कार के संदर्भ में हमारी केन्द्रीय कमेटी और दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने बकायदा प्रेस विज्ञप्ति जारी कर इस पर राजनीतिक रूप से हमारे दृष्टिकोण को जनता के सामने साफ तौर पर रखा हुआ था। इसके बावजूद पूंजी की रखवाली करने वाली इन गोबेल्स की औलादों ने जानबूझकर कई झूठ फैलाए ताकि हमारी पार्टी की बदनामी की जा सके और हमारे राजनीतिक उद्देश्यों को धुंधला किया जा सके। अगर उनके ये दावे सच हैं तो वे आएं और यहां घूम-घूमकर एक भी ऐसे व्यक्ति को खोजकर दुनिया के सामने रखें जिसकी उंगली हमारी पार्टी ने काट दी हो। ★

झूठे विधानसभा चुनावों के दौरान भड़क उठे जन प्रतिरोध के शोले

विधानसभा चुनावों के दौरान जनता पर बढ़ाए गए भारी दमन के जवाब में पीएलजीए ने अपने प्रतिरोधी अभियान को तेज किया। बस्तर क्षेत्र में पहले से मौजूद सीआरपीएफ की 18 बटालियनों के अलावा खास चुनावों के आयोजन के नाम से केन्द्र सरकार ने अर्द्ध-सैनिक बलों की करीब 50 बटालियनों को उतार दिया। यानी सिर्फ बस्तर क्षेत्र में चुनाव के दौरान 75 हजार के आसपास सशस्त्र बलों का प्रयोग किया गया। 'शांतिपूर्ण' और 'निष्पक्ष' मतदान को सुनिश्चित करने के लिए हजारों सशस्त्र बलों ने जनता पर कई अत्याचार व जुल्म किए। इसके जवाब में जनता और जनता की सेना - पीएलजीए ने भी कई प्रतिरोधी कार्रवाइयों को अंजाम दिया। पेश है कुछ हमलों का लेखा-जोखा।

- संपादक मंडल

★ **नारायणपुर-कोण्डागांव सड़क पर ऐम्बुश - 18 घायल :** 3 नवम्बर को कोंडागांव से नारायणपुर जाने वाली सड़क पर सुबह 8.30 बजे पीएलजीए के योद्धाओं ने पुलिस के एक वाहन को बारूदी सुरंग से उड़ा दिया। इसमें एएसआई समेत 18 भाड़े के जवान घायल हो गए। पुलिस, एसटीएफ और एसपीओ की एक टुकड़ी तड़के नारायणपुर से छेरीबेड़ा इलाके में नक्सल विरोधी आपरेशन पर निकली थी। इसमें 47 जवान शामिल थे। आपरेशन के बाद 18 जवान बेनूर थाना से आयशर वाहन पर सवार होकर नारायणपुर के लिए निकले थे। वाहन बेनूर से 3 किमी दूर कुलमकोड़ो से गुजर रहा था कि घात लगाई पीएलजीए ने बारूदी सुरंग से विस्फोट कर दिया। वाहन का अगला हिस्सा विस्फोट की जद में आ गया और 18 जवान घायल हो गए। विस्फोट के बाद पीएलजीए की तरफ से गोलीबारी होने की खबरें हैं। विस्फोट से सड़क में 6 फीट गड्ढ़ा हो गया। घायलों में एसटीएफ के एक एएसआई समेत 9 जवान थे जबकि 6 जिला बल के बाकी एसपीओ और गोपनीय सैनिक थे।

★ **तीन घायल :** दक्षिण बस्तर डिवीजन के भेज्जी थाने के गोरखा गांव के पास चुनाव के दिन 14 नवंबर की सुबह 7.

जनयुद्ध के इतिहास में नया पन्ना!

हेलिकॉप्टर पर फायरिंग - फ्लाइट इंजिनीयर की मौत

14 नवंबर 2008, समय 2 बजे, बैलाडीला के पहाड़ों की गोद में बसे गांव पिड़िया में बनाए गए हेलिपैड में भारतीय वायु सेना का एमआई-18 (रूस में निर्मित) किस्म हेलिकॉप्टर मतदान दल को लेने के लिए पुजारीकांकेर से उड़ान भरकर उतरा। उसकी सुरक्षा के लिए पुलिस व अर्धसैनिक बलों के 300 जवान मुस्तैद थे।। हेलिकॉप्टर चंद मिनटों में मतदान दल को लेकर उड़ने ही वाला था कि जन मुक्ति छापामार सेना के बहादुर निशानेबाजों ने स्वचालित राइफलों से हमला बोल दिया। हमारे सैनिक पहाड़ के ऊपर से गोलियां बरसा रहे थे, जिसे देखकर 300 जवान भौंचक्के रह गए और कुछ भी नहीं कर पाए। उनके दिलों में हड़कंप मच गया। हेलिकॉप्टर में सवार एक फ्लाइट इंजिनीयर की मौके पर ही मौत हो गई। हेलिकॉप्टर के ईंधन टंकी में भी गोली लगी थी, जिस करण पाइलट ने उड़ान भरने से मना कर दिया था लेकिन नीचे से कमांड कर रहे अधिकारियों के गालीगलौच व अपशब्दों के कारण उसे उड़ान भरने पर मजबूर होना पड़ा, जबकि टंकी से तेल का रिसाव शुरू हो गया था। शासक वर्गों के लिए सैनिक नहीं, जहाज महत्वपूर्ण है। जहाज के सामने सैनिक की मौत कुछ भी मायने नहीं रखती, यह इससे समझ सकते हैं।

भारत के जनयुद्ध में यह पहली कार्रवाई है जिसमें हेलिकॉप्टर को निशाना बनाया गया है, और एक को मार गिराया गया है। यह जनयुद्ध के इतिहास में एक नए अध्याय की शुरूआत है। इससे न केवल हमारे गुरिल्ला योद्धाओं के हौंसलों में इजाफा हुआ है, बल्कि जनता का आत्मविश्वास भी बढ़ा है कि हमारे बेटा-बेटी, हमारी सेना अब हेलिकॉप्टरों को भी मार गिरा सकती है। वहीं दूसरी ओर रायपुर से लेकर दिल्ली तक में बैठे नेताओं, अधिकारियों के भी होश उड़ गए। 'प्रभात' उन छापामार योद्धाओं और अन्य कॉमरेडों का क्रांतिकारी अभिनंदन करती है, जिन्होंने इस हमले में भाग लिया और इसे अंजाम देने में सहयोग दिया।

30 बजे पीएलजीए द्वारा रखे गए प्रेशर बम (बूबी ट्रैप) के फट जाने से दो एसपीओ और जिला बल का एक जवान घायल हो गए। मतदान केन्द्र से 75 मीटर की दूरी में पीएलजीए ने चुनाव बहिष्कार के पोस्टर और बैनर टांग रखे थे। ज्यों ही पुलिस बलों ने उन्हें हटाने की कोशिश की, यह बूबी ट्रैप फट गया। तीनों घायलों को तत्काल हेलिकॉप्टर से उठा ले जाकर अस्पताल में दाखिल किया गया।

✶ **एक जवान घायल :** दक्षिण बस्तर डिवीजन के ही चिंतलनार के पास सीआरपीएफ के जवानों पर पीएलजीए ने हमला किया, जिसमें उसका एक जवान घायल हुआ। गोली उसके सीने को चीरते हुए निकली थी।

✶ **कोरेनार के पास दो जवान मरे, एक घायल :** कांकेर जिले के कोरेनार और पी.वी. 104 के बीच मतदान पूरा करके वापस जा रहे सीआरपीएफ के पैदल दल पर पीएलजीए ने जबर्दस्त हमला किया। इस हमले में एक जवान मौके पर ही मारा गया जबकि दो बुरी तरह घायल हुए। घायलों में से एक ने रास्ते में दम तोड़ दिया। इस घटना के बाद बौखलाए हुए सीआरपीएफ के आर्तांकियों ने कोरेनार गांव में कहर बरपाया। 25 निर्दोष लोगों की बेदम पिटाई की और दो लोगों को गोली मार दी। उनमें से एक करमाराम मटामी ने वहीं दम तोड़ दिया, जबकि जूरू कोवासी बुरी तरह घायल हुए।

✶ **कोंडे के पास 7 जवान घायल :** 16 नवम्बर को उत्तर बस्तर डिवीजन के कोंडे और गुमड़ीडीह के बीच मुख्य सड़क पर सुबह के करीब 7 बजे पीएलजीए ने एक बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। झूठे चुनाव को पूरा कर वापस जा रहे सीआरपीएफ के काफिले को निशाना बनाकर इस हमले को अंजाम दिया गया। गाड़ी के पहुंचने से एक सेकंड पहले ही विस्फोट होने से गाड़ी को उड़ा देने में तो कामयाबी नहीं मिली, पर विस्फोट से हुए गड्ढे में गिर जाने से सीआरपीएफ के 7 जवान घायल हुए। घायलों में तीन की हालत गंभीर बताई गई।

✶ **आईजी बीएस मरावी घायल :** झारखण्ड की सीमा पर उत्तर छत्तीसगढ़ के गुरिल्लों के साथ 11 नवम्बर को एक जबर्दस्त मुठभेड़ हुई जिसमें आईजी बीएस मरावी घायल हुए। गौरतलब है जब पुलिस-प्रशासन के अधिकारी सरगुजा क्षेत्र में क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने के ऊंचे-ऊंचे दावे कर रहे थे, ऐसे समय में यह हमला हुआ जिसमें पुलिस के बहुत बड़े ओहदेदार खुद घायल हो गए।

✶ **बोलेरे बाल-बाल बची :** 21 नवम्बर को पूर्व बस्तर डिवीजन के भैंसगांव के निकट पीएलजीए ने एक बारूदी सुरंग का विस्फोट किया जिसमें पुलिस की बोलेरो गाड़ी बाल-बाल बची। चुनावों के दौरान भानुप्रतापपुर से नारायणपुर जाने वाली सड़क को गुरिल्लों ने पेड़ काटकर अवरुद्ध कर रखा था। इसे खोलने के लिए जब पुलिस दल 21 नवम्बर को निकला था, वापसी के दौरान यह हमला हुआ। गाड़ी में बैठे पुलिस वालों को मामूली चोटें आईं।

✶ **गोलावण्ड ऐम्बुश - 8 भाड़े के जवान ढेर, तीन घायल :** 25 नवम्बर को पूर्व बस्तर डिवीजन के मर्दापाल इलाके में पुनर्मतदान के लिए आए पुलिस बलों पर पीएलजीए ने जबर्दस्त हमला कर दिया जिसमें 8 भाड़े के जवान मारे गए अैर दो गंभीर रूप से घायल हो गए। पीएलजीए बलों के हमलों से बचाव के लिए पुलिस-प्रशासन ने सारे इंतजाम किए थे। इसके बावजूद पीएलजीए ने गुरिल्ला युद्ध के दावपेंचों का बढ़िया नमूना पेश कर बड़ी कामयाबी हासिल की। बंदूक की नोंक पर 'मतदान' का नाटक निपटाकर जब जिला पुलिस, सीएएफ, एसटीएफ और सीआरपीएफ के करीब 300 जवान पैदल वापस आ रहे थे तब पीएलजीए की टुकड़ी ने मर्दापाल से 10 किमी दूर गोलावंड और धोलमुंदरी के बीच एक पुलिया के पास बारूदी सुरंग का विस्फोट कर दिया। इस हमले में जिला पुलिस के दो और एसटीएफ के 5 - कुल 7 जवनों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।

✶ **एड़का में एक मरा - तीन घायल :** चुनाव की तैयारियों में हर रोज रोड पर गस्त कर रही सीआरपीएफ की एक टुकड़ी पर पीएलजीए की एक टीम ने ग्राम एड़का (पूर्व

हेलिकॉप्टरों का शोर नहीं रोक सका चुनाव बहिष्कार को !

छत्तीसगढ़ के पहले चरण के चुनाव में कुल 10 हेलिकॉप्टरों का उपयोग किया गया। इनमें से 2 हेलिकॉप्टर वायुसेना के एमआई-18 किस्म के थे। इसके अलावा आठ और हेलिकॉप्टर वायु सेना के अड्डे जामनगर (गजुरात) और बरेली (उतरप्रदेश) से बस्तर पहुंचे। इनमें से छः हेलिकॉप्टर चेतक नाम के थे जो चार लोगों के बैठने के होते हैं। दो एमआई-18 जो 12 से 14 सैनिकों को ले जा सकते हैं। वायु सेना के हेलिकॉप्टरों में रिमोट सेन्सिंग कैमरे भी लगे हुए थे ताकि पीएलजीए की गतिविधियों पर नजर रखी जा सके। पहले चरण में 39 सीटों के लिए वोट डाले गए। इन 39 सीटों में अविभाजित बस्तर क्षेत्र में आने वाली सीटों की संख्या 12 थी। हेलिकॉप्टरों का उपयोग वोटिंग मशीनें पहुंचाने और लेने के लिए ही किया गया। कुल 40 जगहों पर हेलिपैड बनाए गए थे। चुनाव के दिन हेलिकॉप्टरों ने 217 उड़ानें भरीं। यानी 600 घंटों तक हवा में मंडराते रहे। इसके लिए जनता के पैसे को पानी की तरह बहाने में रमन सिंह सरकार ने कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी। चुनाव बहिष्कार को विफल करने और अपने झूठे लोकतंत्र को संघर्षशील जनता पर थोपने के लिए की गई इस खर्चीली कवायद का नतीजा तो कुछ विशेष नहीं रहा, बल्कि इस बार पहली दफा एक हेलिकॉप्टर पर पीएलजीए ने हमला बोल वायुसेना के एक अधिकारी को मार गिराया। ✶

तीसरी बार मतदान के बावजूद 10 लोगों ने ही वोट डाले!

दक्षिण बस्तर के गोरगुण्डा गांव में पहली और दूसरी बार किए गए झूठे 'मतदान' की पोल खुल जाने से शासन-प्रशासन को तीसरी बार मतदान करवाने पर मजबूर होना पड़ा। कुल 711 मतदाताओं वाले इस मतदान केन्द्र में सुरक्षा का इतना तगड़ा इंतजाम किया गया कि इस पर करीब 10 लाख रुपए का खर्चा आया। करीब 500 पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के जवानों आतंक का तांडव मचाया, इसके बावजूद भी मात्र 10 लोगों ने ही - वह भी भारी दबाव व दशहत के कारण - वोट डाले। यानी डेढ़ प्रतिशत से भी कम! यह इस बात का साफ सबूत है कि जनता को इस झूठे चुनाव पर जरा भी विश्वास नहीं है। और यह जनता की अत्युन्नत राजनीतिक चेतना का भी परिचायक है जो चाहे पैसों का प्रलोभन हो या सरकारी बंदूकों का आतंक, किसी से भी डगमगाने वाली नहीं है। 'नक्सलवादियों के चुनाव बहिष्कार के आह्वान को जनता से समर्थन नहीं है' कहते हुए अनाप-शनाप लिखने वाले सरकारी कलमघिस्सुओं की भी गोरागुण्डा की मिसाल से बोलती बंद हो गई। ✶

बस्तर डिवीजन) के पास हमला किया। 5 नवम्बर को हुए इस बूबीट्रैप पर आधारित हमले में एक भाड़े का जवान मारा गया और तीन अन्य घायल हो गए।

✶ **मुख्यमंत्री की सभा जनता ने कर दी फेल :** 1 नवंबर को साम्राज्यवादियों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के चमचे रमन सिंह दंतेवाड़ा विधानसभा की तीन सीटों पर आम सभाओं को संबांधित करने पहुंचे थे। लेकिन पार्टी द्वारा कोंटा मार्ग पर इंजारम-एर्राबोर के पास पर्चे फेंक कर किए गए आह्वान का जनता ने समर्थन किया और उसकी सभाएं फीकी रहीं। सभी वाहन चालकों ने अपने-अपने वाहन बंद रखे।

✶ **दो जन दुश्मन भाजपाइयों का सफाया :** दंतेवाड़ा क्षेत्र में पीएलजीए की एक विशेष टीम ने हिंदू कट्टरवादी भाजपा के जिला उपाध्यक्ष रमेश राठौर व एक अन्य नेता सूर्यप्रकाश सिंह चौहान को मौत के घाट उतार दिया। और उसके वाहन को भी आग के हवाले कर दिया। ये दोनों छोटे गुडरा के ठोठापारा मे चुनावी सभा की तैयारी कर रहे थे।

✶ **कांग्रेसी नेता त्रिनाथ का सफाया :** कांग्रेसी नेता त्रिनाथ ठाकुर पोलिंग एजेंट नियुक्त करने के लिए जा रहा था। त्रिनाथ ठाकूर दंतेवाड़ा कांग्रेस का ब्लाक अध्यक्ष था। त्रिनाथ ठाकुर के कारण ही मई 2007 में बालोद में एक फर्जी मुठभेड़ हुई थी, जिसमें दो निहत्थे जनसंगठन कार्यकर्ताओं को पुलिस ने मार डाला था। इस जन विरोधी को गांव गदापाल के पास खत्म कर दिया गया।

✶ **जन मिलिशिया ने रास्ते काटे :** 12 नवंबर को दंतेवाड़ा के सभी प्रमुख मार्गों पर जन मिलिशिया ने जगह-जगह काट कर चुनाव बहिष्कार के पर्चे फेंके। उसके साथ ही चार डमी (नकली) बम भी वहां पर गाड़ दिए जिस कारण से कई घंटों तक अर्ध सैनिक बल धोखे में रह गए। बम निरोधक दस्ते को बुलाने के बाद डमी बमों को निकाल कर नष्ट करना चाहा तो उनके पास सिवाए माथे पीटने के कुछ भी नहीं था।

✶ **दर्जनों जगहों पर हुई मुठभेड़ें :** अखबारों में छपी खबरों के मुताबिक चुनाव के दिन 14 नवम्बर 2008 को कुल 24 जगहों पर मुठभेड़ें हुईं। लेकिन पीएलजीए के तीनों बलों, खासकर जन मिलिशिया द्वारा की गई गोलीबारी की घटनाओं की संख्या इससे कहीं ज्यादा होगी।

उत्तर सब जोन में चुनाव बहिष्कार

विधानसभा चुनाव में माड़, उत्तर एवं पूर्व बस्तर डिवीजनों में पीएलजीए के एंबुशों के डर से, उनको फंसाने के लिए जनता व जन मिलिशिया के सहयोग से खोदे गए हजारों गड्ढ़ों के डर से अर्ध सैनिक बल मतादन केंद्रों तक नहीं पहुंच पाए। सड़क के आसपास पड़ने वाले गांवों तक ही उनकी 'बहादुरी' सीमित रही।

माड़ डिवीजन के कुतुल, इंद्रावती और नेलनार एरिया में , पूर्व बस्तर के केसकाल और डौला क्षेत्रों और उत्तर बस्तर के रावघाट और परतापुर इलाकों में चुनाव बहिष्कार लगभग पूर्ण रूप से सफल हुआ।

इस सब-जोन में चुनाव बहिष्कार अभियान में जनता ने सक्रिय भागीदारी की। सभी जन संगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग दलों में बंटकर गांव-गांव जाकर चुनाव बहिष्कार का प्रचार किया। सैकड़ों बैनर-पोस्टर और हजारों पर्चे लोगों में बांटे गए। इसके अलावा दीवार-लेखन और सड़कों पर पेंटिंग भी किया गया। कई छोटी-बड़ी जन सभाओं का भी बड़े पैमाने पर आयोजन किया गया। दर्जनों जगहों पर आयोजित इन सभाओं में 500 से लेकर 2500 तक जनता ने शिरकत की।

मतदान के दिन माड़ डिवीजन में सिर्फ 3 मतदान केन्द्रों में ही सैकड़ों सशस्त्र बलों की उपस्थिति में जैसे तैसे 'मतदान' हो पाया। बाकी मतदान केन्द्रों में किसी ने कदम तक नहीं रखा। उत्तर और पूर्व बस्तर में भी कमोबेश यही स्थिति रही। सड़क के आसपास वाले गांवों को छोड़ दें तो अंदरूनी गांवों में कहीं 'मतदान' नहीं हुआ। पूर्व बस्तर में 8 और उत्तर बस्तर में 2 जगहों पर ईवीएम जब्त करके नष्ट किया गया।

जिन गांवों में भी तथकथित मतदान हुआ, वहां सरकारी बल आधा घण्टे से दो घण्टे तक ही रुके थे। वैसे चुनाव आयोग ने खुद ही बस्तर के लिए एक घण्टा का समय काट दिया। जो भी रास्ते में मिला उन्हीं को मारपीटकर वोट डालने पर मजबूर किया गया। यहां तक बच्चों से भी वोट डलवाए गए। जहां भी आए मतदान केन्द्रों में नहीं आए। जो जहां, जैसा मिला उसी को पकड़कर बंदूक टिकाकर वोट डलवाया गया।

दक्षिण सब जोन में चुनाव बहिष्कार

चुनाव बहिष्कार के प्रचार के लिए दंतेवाड़ा, बीजापुर, कोंटा और दरभा एरिया में व्यापक प्रचार अभियान चलाया गया। चुनाव बहिष्कार कर सैकड़ों पोस्टर, पर्चे एवं बैनर लगाए गए। फासीवादी राज्य सरकार ने चुनावों की नौटंकी सफल करवाने के लिए दमन का पूरा बंदोबस्त किया हुआ था। 20 से ज्यादा बटालियनें अध सैनिक, पुलिस बलों की लगाई हुई थी। लेकिन जनमुक्ति छापामार सेना की सुरक्षा में न केवल जनता ने चुनाव बहिष्कार की सभाएं संपन्न कीं।

चुनाव के एक पखवाड़े पहले ही कोर्रा, गोरवपाल, सोसभेली, चोलना, मेटापाल, मोरेटबाका आदि गांवों में अर्ध सैनिक बलों के कैंप बिठाए गए। पुलिस द्वारा धरपकड़ अभियान, एरिया डॉमिनेशन, नक्सल विरोधी गश्त आदि के नाम पर कई गांवों में छापेमारी कर आम लोगों सहित जन संगठन सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारियों के अलावा कई गांवों पर अंधाधुंध गोलीबारी कर जनता में दहशत का माहौल पैदा किया गया। चुनाव से पहले 5 नवंबर को आंध्र-छग सीमा पर स्थित गांव निम्मलगुड़ा में आंध -छग पुलिस बलों द्वारा दो बेगुनाह ग्रामीणों की झूठी मुठभेड़ में हत्या की गई।

मतदान के दिन अखबारों के मुताबिक 24 जगहों पर झड़पें हुईं। चुनाव बहिष्कार में अत्यधिक जनता ने भागीदारी की। बहुत सारे गांवों में न मतदान दल पहुंचने की हिम्मत कर पाए, न ही पुलिस, अर्ध सैनिक बलों के जवान। कोंटा विधानसभा क्षेत्र के गांव चिलंगेर, सुरपनगुड़ा, एलमागुण्डा, मिनपा, पामलूर, पालाचेलमा, गच्चनपली, पेंटा, मोलाईगुड़ा, सिंगारम, सेंदूरगुडेम, गंगलेरू, करीगुण्डम, तोंगुड़ा, बुरकापाल गांव के मतदन केंद्रों में मतदान दल गायब थे। लेकिन मतदान दल और अर्ध सैनिक बलों ने इनमें से कुछ में शून्य प्रतिशत मतदान का रिकार्ड दिखाकर, और कुछ में फर्जी मतदान करके झूठे आंकड़े पेश किए। चुनाव के दिन 21 बूथों पर से जनता व जन मिलिशिया ने मिलकर ईवीएम को जब्त किया और उन्हें नष्ट कर दिया।

सरकार ने 55 मतदान केंद्रों पर जीरो प्रतिशत मतदान होने की बात स्वीकार की। बीजापुर निर्वाचन क्षेत्र में शून्य प्रतिशत मतदान यानी 100 प्रतिशत चुनाव बहिष्कार करने वाले गांव -

डुंगा, इकताज, धरमा, बेलनार, बड़ेपल्ली, ताकिलोड़, पिड़ियाकोट, अन्तापुर, मुकावेल्ली, पामलावर्ती, सागमेट्टा, मिड़ेनार, दुसनार, पेद्दाजोजेर, सावनार, मोरदोण्डा, धरमपुर, साकीगुड़ा, तोड़मा, करमावाड़ा, पेनगोंडा, पुन्नूर, पिड़िया, कोड़ेपल्ली, अनडरी, पुजारी कांकेर, पीलूर, नेतीकाकीलेड़, जारागुड़ा, कौंडे।

कोंटा में 100 प्रतिशत बहिष्कार करने वाले गांव -

मोरपल्ली, बुरमापाल, मिनपा, एलमागुण्डा, पामलूर, मरेगुण्डेम, किस्टारम, पालाचेलमा, पेंटापाड़, मोलाईगुड़ा, गच्छनपल्ली, धूरमा, बण्डा, भेज्जी, टेटराई, गगनपल्ली, मैयता आदि केंद्रों में जनता ने पूर्ण बहिष्कार किया।

वहीं दंतेवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में भी एक प्रतिशत से कम मतदान वाले केंद्र कई हैं जैसे - पोटाली में 0.48 प्रतिशत, बुरगुम 0.32 प्रतिशत, नीलावाया 0.75 प्रतिशत ही मतदान हुआ। इसके अलावा बहुत सारे गांव ऐसे हैं जहां जबरदस्ती गांव वालों को वोट डालने पर मजबूर किया गया। घरों को जलाने की, महिलाओं के साथ बलात्कार करने की, सोसाइटी से सस्ता चावल न देने की धमकियां देकर, संगीनों को पीठ पर टिकाकर मतदान केंद्रों तक जनता को ले जाया गया। लेकिन इसके बाद भी अधिकांश जनता ने पार्टी के आह्वान को स्वीकारते हुए मतदान न करने का फैसला किया। लुटेरे फर्जीवाड़े चुनावों को नकार कर नव जनवादी आंदोलन का साथ दिया। खुद के द्वारा चुनी जा रही जनताना सरकारों का साथ दिया। ऐसा ही एक गांव है कोंटा विधानसभा क्षेत्र का सिंगारम, जिसे बाद में चुनाव बहिष्कार की बहुत बड़ी कीमत 18 लोगों के नरसंहार से चुकानी पड़ी। सिंगारम मे 998 मतदाता हैं लेकिन पुलिस, चुनावी पार्टियों की धमकी एवं दहशत के बावजूद केवल पांच महिलाओं ने ही वोट डाला बाकी कोई भी मतदान केंद्र के पास तक नहीं गया। जनता की लुटेरे शासन के विरोध में व जनताना सरकारों के पक्ष में राजनीतिक चेतना का इससे आंकलन किया जा सकता है।

पुनर मतदान के दिन

23 नवंबर को कोंटा और दंतेवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के कुल 13 मतदान केन्द्रों में हुए दोबार मतदान की सुरक्षा के नाम से एक हजार से ज्यादा अर्ध सैनिक बलों की तैनाती की गई।

दंतेवाड़ा में हांदावाड़ा, पंडेवार, कुपरे, मंगनार, मुलेर व किडरीरास में तथा कोंटा के गोगुंडा, गोदपल्ली, पोरदेम, मारोकी, मिचवीर, चिंतलनार तथा गोरखा केन्द्रों मतदान करवाना था। 'शांतिपूर्ण' व 'निष्पक्ष' मतदान के लिए एक-एक केन्द्र को छावनी में तबदील कर दिया गया। इन गांवों में इतने मतदाता भी नहीं थे कि जितने 'सुरक्षा' बलों को तैनात कर दिया गया।

उत्तर बस्तर डिवीजन में पुनर्ममदान के दौरान जेठेगांव केन्द्र से कुछ दूर गुरिल्लों ने 6 अलग-अलग स्थानों पर विस्फोट किए और दो स्थानों पर फायरिंग की। इन घटनाओं में हालांकि कोई हताहत नहीं हुआ है। मोहला-मानपुर विधानसभा क्षेत्र के दोरदे और मूचर में पुनर्मतदान के दौरान 2 जगहों पर अर्ध सैनिक बलों और पीएलजीए बलों के बीच गोलीबारी हुई। ✶

कोइलीबेड़ा में दो एसपीओ का सफाया!

27 दिसम्बर 2008 को उत्तर बस्तर डिवीजन के कोइलीबेड़ा के निकट जीरमतराई के पास पीएलजीए की एक एक्शन टीम ने एक साहसिक कारनामे में दो एसपीओ को मार गिराया। ग्राम वाला निवासी मनेसिंह और गट्टाकाल निवासी ब्रजलाल कुछ अन्य एसपीओ के साथ छिंदरस पीने के लिए थाने से बाहर निकलकर पास ही में स्थित दुकान में आए हुए थे। उनकी इसी कमजोरी को पहचान कर पीएलजीए ने योजना बनाई। ऐन वक्त पर पिस्तौल जवाब देने से भी हमारे लाल योद्धाओं ने इन दोनों को दौड़ा-दौड़कार मार डाला, जबकि बाकी एसपीओ अपनी जान बचाने में सफल हो गए। इस कार्रवाई ने क्षेत्र में मौजूद पुलिस के दलालों और एसपीओ में खलबली मचा दी। ✶

राज्य बिजली बोर्ड के विखण्डन का विरोध करो!

आइएमएफ/विश्व बैंक के निर्देशों के सामने नत मस्तक यूपीए सरकार और भाजपाई रमन सरकार की जन विरोधी नीतियों के खिलाफ संघर्ष करो!!

दोबारा सत्ता में आते ही भाजपाई रमन सरकार ने अपना रंग दिखाना शुरू किया। 16 दिसम्बर को राज्य बिजली बोर्ड का विखण्डन करने का फैसला लेकर प्रदेश की जनता के साथ बहुत बड़ी गद्दारी की। विखण्डन के लिए केन्द्र सरकार द्वारा दबाव लाए जाने के बहाने से रमन सिंह के नेतृत्व वाली छत्तीसगढ़ सरकार ने वही किया जो वह कई सालों से सोच रही थी, लेकिन बिजली विभाग के कर्मचारियों के कड़े विरोध के चलते नहीं कर पा रही थी। राज्य विद्युत मंडल को अब पांच कम्पनियों में बांट दिया गया। जनरेशन (उत्पादन), ट्रांसमिशन (प्रसारण), डिस्ट्रीब्यूशन (बंटवारा) और ट्रेडिंग (व्यापार) कम्पनियों समेत उनके नियंत्रण के लिए एक होल्डिंग कम्पनी बनाई जाएगी। इस फैसले से उसने न सिर्फ बिजली विभाग के 18 हजार कर्मचारियों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया, बल्कि सालाना 3000 करोड़ रूपए राजस्व कमाने वाली इस सार्वजनिक संस्था को निजी कम्पनियों के हाथों औने-पौने दाम पर बेच डालने की प्रक्रिया की नींव डाल दी। भले ही वह फिलहाल यह कह रही हो कि निजीकरण नहीं होगा और छंटनी नहीं होगी ताकि प्रदेश की जनता और कर्मचारियों को गुमराह किया जा सके, लेकिन सरकारों की साम्राज्यवाद परस्त नीतियों से वाकिफ लोगों को वह धोखा नहीं दे सकती।

दरअसल, 1990 के दशक में जबसे हमारे देश में उदारीकरण की नीतियों की शुरूआत हुई तभी से आईएमएफ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) और विश्व बैंक केन्द्र और राज्य सरकारों पर भारी दबाव डालते आ रहे हैं कि वे राज्यों के बिजली बोर्डों का निजीकरण कर दें। क्योंकि उनका कहना है कि इनसे जनता को सालाना 25 हजार करोड़ रूपए की सब्सिडी मिल रही है। देशवासियों को सभी सब्सिडियों से वंचित कर देना और सभी क्षेत्रों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रवेश को सुगम बनाना ही इन साम्राज्यवादी मुद्रा संस्थाओं का मुख्य एजेंडा है। इसी आशय से 1991 में केन्द्र सरकार ने नई ऊर्जा नीति तैयार की जो विश्व बैंक द्वारा दिए गए कर्जों के बदले थोपी गई शर्तों का हिस्सा था। इस नीति के तहत सरकार ने ऊर्जा के क्षेत्र में 'उदारीकरण' के कई कदम घोषित किए ताकि इस क्षेत्र में निजी/विदेशी पूंजीनिवेश को आकर्षित किया जा सके। इसके लिए सरकार ने 1910 और 1948 में बनाए गए कानूनों में संशोधन भी किए थे। एक और लुभावन कानून 'विद्युत विधेयक 2000' भी बनाया। एनरॉन, रोल्स रायस, एईएस जैसी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों तथा टाटा, जिंदल, एस्सार जैसे बड़े पूंजीपतियों को इस क्षेत्र में घुसने का मौका देना ही सरकार का मकसद है। बिजली उत्पादन के क्षेत्र में निजी व विदेशी कम्पनियों की घुसपैठ और बिजली बोर्डों के निजीकरण के क्या दुष्प्रभाव होंगे, महाराष्ट्र, ओडिशा, हरियाणा और आंध्रप्रदेश के उदाहरण हमारे सामने हैं। बिजली बोर्ड के निजीकरण से बिजली की दरों में भारी-भरकम इजाफा होगा। शहरी उपभोक्ताओं को वर्तमान दरों से 3-4 गुना अधिक भुगतान करना पड़ेगा। किसानों पर वर्तमान रियायती दरों से 10 गुना तक ज्यादा भुगतान करना पड़ सकता है। यह देश के आम लोगों, खासकर किसानों पर सरासर डाका है।

वास्तव में विखण्डन एक बहाना है। जनता और कर्मचारियों के विरोध को ठण्डा करने के लिए ही सरकारों ने यह तरकीब निकाली है। उनका अंदाजा है कि पहले बोर्ड को टुकड़ों में बांटकर बाद में एक-एक कर उनका निजीकरण करना अपेक्षाकृत आसान हो सकता है। छत्तीसगढ़ में पहली बार बनी अजीत जोगी की कांग्रेस सरकार ने राज्य परिवहन निगम को भंग कर दिया था जिससे हजारों कर्मचारी बेरोजगार हो गए थे। और लगभग उसी समय केन्द्र में सत्तारूढ़ एनडीए सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के बाल्को को बेच दिया था तो उसी जोगी सरकार ने हाय तौबा मचाई थी। दरअसल भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टियां साम्राज्यवाद परस्ती नीतियों को लागू करने में समान रूप से जिम्मेदार हैं। दोनों ही सरकारों ने शिवनाथ समेत कई नदियों को भी बेच कर छत्तीसगढ़ की जनता के साथ बहुत बड़ी धोखेबाजी की। हालांकि भाजपा सरकार ने बिजली बोर्ड के निजीकरण की कई बार कोशिश की, लेकिन कर्मचारियों और जनता के विरोध के चलते उसे हिम्मत नहीं हुई। अब वह विखण्डन के रास्ते से निजीकरण की तरफ कदम बढ़ा रही है।

गौरतलब है कि राज्य सरकार को बिजली बोर्ड के विखण्डन की सलाह देने वाली कम्पनी प्राइसवाटर कूपर्स है जो बदनाम सत्यम कम्प्यूटर्स के घोटाले में सह-अभियुक्त है। यह लेखा कम्पनी इसके पहले भी कई बार बड़े व विदेशी पूंजीपतियों के हित में सरकार को घाटे में डालने वाली कई हरकतें कर चुकी है। सत्यम घोटले के उजागर होने के बाद यह कम्पनी भी नंगे तौर पर बदनाम हो चुकी है। और इसी कम्पनी ने रमन सिंह को विखण्डन की सलाह दी है तो इसके पीछे कौन-सी ताकतें होंगी इसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है।

हमारी स्पेशल जोनल कमेटी राज्य बिजली बोर्ड के विखण्डन का पुरजोर विरोध करती है। यह निजीकरण के शुरूआती चरण के तौर पर ही लिया गया कदम है। हम प्रदेश की जनता और बिजली विभाग के कर्मचारियों का आह्वान करते हैं कि वे सरकार के इस कदम के खिलाफ जोरदार संघर्ष करें। केन्द्र-राज्य सरकारों की साम्राज्यवाद-निर्देशित निजीकरण, उदारीकरण और भूमण्डलीकरण की नीतियों के खिलाफ व्यापक व जुझारू जन आंदोलन का निर्माण करें। ✶

कोरेपल्ली व मरकागांव में पीएलजीए के शानदार हमले-
महाराष्ट्र पुलिस द्वारा 30 बेकसूर आदिवासियों की फर्जी मुठभेड़ों में की गई हत्या का प्रतिकार!

मरकागांव हमले में शहीद हुए कॉमरेड रामजी माहका को लाल-लाल सलाम!

गड़चिरोली के क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने अपने पुलिस बलों को खुली छूट दे रखी है। शुरू से ही क्रांतिकारी आन्दोलन को खत्म करने के लिए कमाण्डो बलों का गठन कर क्रांतिकारी आन्दोलन पर हमलों को तीव्र किया। क्रांतिकारी जनता अमानवीय अत्याचार सहते हुए अपने प्राणों की परवाह किए बिना क्रांतिकारी पार्टी की रक्षा करते हुए आई है। कमाण्डो पुलिस बलों की सबसे घृणित कार्यवाही के रूप में निहत्थी और बेकसूर आदिवासी जनता की झूठी मुठभेड़ों में हत्या की गई है। 2006-07 में गड़चिरोली पुलिस ने आदिवासी जनता को घरों से सोते समय, जंगल में वनोपज एकत्रित करते समय, बाजार आते-जाते समय रास्ते से पकड़ कर जंगल में ले जाकर गोली मारकर हत्या कर मुठभेड़ की झूठी कहानी रेडियो व समाचार पत्रों में प्रसारित व छपवा दी। पहले की मुठभेड़ें छोड़ भी दें तो 2006 की शुरूआत से हुई ऐसी झूठी मुठभेड़ों में गड़चिरोली पुलिस ने एक नहीं, दो नहीं, पूरे 30 बेकसूर आदिवासियों की हत्या की है। आदिवसी जनता ने सभा-रैली कर, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश, मानवाधिकार आयोग आदि को ज्ञापन देकर अपना विरोध जताया। और न्याय की गुहार लगाई। किसी ने भी इन जघन्य हत्याकाण्डों पर कोई कार्रवाई नहीं की। हत्यारे पुलिस वाले खुलेआम घूमते रहे। जनता को डराते-धमकाते रहे। तब जनता ने हत्यारे पुलिस वालों को सबक सिखाने का अपनी सेना - जन मुक्ति छापामार सेना (पीएलजीए) को आदेश दिया।

वीर शहीद कॉमरेड रामजी माहका

अपनी प्यारी जनता के आदेश को सिर-आंखों पर लिए जन मुक्ति छापामार सेना के जांबाज योद्धा निकल पड़े। उसे पूरा करने के लिए 26 अक्टूबर 2008 को रात भर दरिंदे पुलिस कमाण्डों का पीछा करते हुए अहेरी एरिया के कोरेपल्ली गांव के निकट पीएलजीए ने धावा बोला। इस शौर्यपूर्ण हमले में पीएलजीए ने 5 कमण्डो को कुत्ते की मौत मारा जबकि 5 और कमाण्डो को गंभीर रूप से घायल किया।

दूसरी घटना में पीएलजीए ने 1 फरवरी 2009 को मरकागांव में ग्यारापत्ति पुलिस कैम्प से निकले गश्ती दल पर वीरतापूर्वक हमला कर पूरे 15 सदस्यों को मौत की नींद सुला दी। पीएलजीए ने इस शौर्यपूर्ण हमले में युद्ध के मैदान में साहस और बलिदान, फायर एण्ड मूवमेंट, सही समय पर सही निर्णय और पीएलजीए के तीनों बलों का अद्भूत तालमेल का बढ़िया नमूना पेश किया। उस दिन ठीक 10.45 बजे पुलिस दल जब मरकागांव को पार कर कोसमी गांव की ओर बढ़ रहा था, तब पहले से घात लगाए बैठे गुरिल्लों ने उस पर ताबड़तोड़ हमला बोल दिया। दरअसल पुलिस का यह गश्ती दल गुरिल्लों के घात लगाने की जगह से कुछ दूरी से निकल रहा था, तब पीएलजीए की एक टुकड़ी ने पहले उन पर फायरिंग कर उन्हें रुकने पर मजबूर किया। फिर बाकी सभी कॉमरेडों ने चारों तरफ से घेरकर दौड़ा-दौड़ाकर मारना शुरू कर दिया। पुलिस बलों को मारते गए और उनके हथियार जब्त करते गए। 8 पुलिस वालों के मरने के बाद बाकी बचे हुए पुलिस वाले पास के एक खेतुल में जा छिपे थे। और उसमें मौजूद 8 साल के एक बच्चे और उसके दादा 70 साल के वृद्ध को पकड़कर उन्हें अपनी ढाल के रूप में इस्तेमाल करते हुए पीएलजीए के बलों पर गोलियां चलाने लगे थे। गुरिल्ला वीरों ने पहले खेतुल को चारों तरफ से घेरा और फिर अपनी अचूक निशानेबाजी से एक-एक करके सभी पुलिस कमाण्डों को मौत की नींद सुला दी। उस बच्चे और वृद्ध को पुलिस वालों के चंगुल से आजाद कराया। इतनी भीषण गोलीबारी में सभी पुलिस वालों का मर जाना और दादा-नाती को खरोंच तक न लगना हमारे पीएलजीए बलों के असीम धैर्य और अचूक निशानेबाजी और हर हालत में जनता के जानमाल की हिफाजत की भावना को ही दर्शाता है। 10.45 से 12.35 तक चले इस युद्ध में पहले आधे घण्टे में ही 12 पुलिस वाले मारे जा चुके थे। बच्चे और बूढ़े व्यक्ति को बचाते हुए बचे हुए तीन दुश्मनों को मारने में ही पीएलजीए बलों को एक घण्टा 20 मिनट का समय लगा। खैर गुरिल्ला बलों ने अपने लक्ष्य को पूरा कर लिया और पंद्रह क पंद्रह पुलिस वाले कुत्ते की मौत मारे गए। उनकी लाशें एक से डेढ़ किलोमीटर के दायरे में बिखरी थीं। इस हमले में पीएलजीए बलों ने दुश्मन से एके-47 - छह, एसएलआर - 6, इंसास - 2, दो इंची मोर्टार - एक, 9 एमएम का पिस्तौल - एक.... कुल 16 हथियार जब्त किए। इसके अलावा विभिन्न रायफलों की सैकड़ों कारतूस, वाकीटाकी - 4 और अन्य साजोसामान जब्त कर लिए। इन हथियारो से पीएलजीए ने खुद को उन्नत हथियारों से सुसज्जित

किया।

इस हमले के दौरान कुछ वाकिए ऐसे सामने आए हैं जो बड़े ही रोचक व स्फूर्तिदायक है। जैसे एके-47 से लैस एक दुश्मन जब अपनी जान बचाते हुए भाग रहा है, तब एक महिला गुरिल्ला अपनी 12 बोर की बंदूक से उसे दौड़ाकर मार रही है। एक साधारण रूप से घायल पुलिस वाला जो एसएलआर से फायरिंग कर रहा है, पीएलजीए की एक महिला योद्धा ने अपनी देशी सिंगल शाट रायफल को रखकर बिना बंदूक ही दौड़ते हुए जाती है और उसे लात मारकर एसएलआर छीनकर लाती है। इससे यह बात फिर एक बार साबित हो जाती है कि मनुष्य की अत्युन्नत चेतना ही, हथियार नहीं, युद्ध में हार-जीत का फैसला करती है।

हमले में फंसी पुलिस की मदद के लिए ग्यारापत्ति कैंप से आ रहे पुलिस वालों को पीएलजीए की एक और टुकड़ी ने रोक दिया। उस टुकड़ी की जवाबी फायरिंग से पुलिस को दुम दबाकर वापस कैंप में भागना पड़ा। इस दल ने पुलिस को 12.45 से 2 बजे तक फायरिंग जारी रखी। लगभग उसी समय मुरुमगांव की तरफ से आ रही माइनप्रूफ गाड़ी को भी इस दल ने रोके रखा। अपनी अचूक निशानेबाजी से गाड़ी को पंचर कर दिया। और उसके अंदर बैठे कमाण्डो बलों को उतरने ही नहीं दिया। इस प्रकार शाम के 4 बजे तक यहां पर पीएलजीए की भिड़ंत जारी रही। इस पूरी कार्रवाई ने दुश्मन के दिल में इतनी दहशत भर दी कि वह मृत पुलिस वालों की लाशें इकट्ठी करने की हिम्मत तक नहीं कर पाया। रात भर लाशें सड़ती रहीं। अगली सुबह ही पुलिस लाशों के पास पहुंची। हमले की पूरी कार्रवाई कैसे हुई, इसका अंदाजा भी दुश्मन नहीं लगा पाया। सिर्फ कल्पना के आधार पर घटना के बारे में समझने की कोशिश की गई। इस सबमें महत्वपूर्ण विषय टिप्रागढ़ इलाके की जनता से मिला सहयोग है जिसके बिना इस हमले को सफल बनाने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे।

इस हमले की सफलता के अंतिम क्षणों में सेक्शन डिप्यूटी कमाण्डर कॉमरेड रामजी की शहादत हुई जिन्होंने अदम्य साहस का परिचय देते हुए दुश्मन के एक दम नजदीक तक जाकर उससे लोहा ले रहे थे। आज हमारे बीच कॉमरेड रामजी नहीं है, लेकिन जब भी इस सफल हमले की चर्चा होगी, उस चर्चे के केन्द्र बिन्दु में गड़चिरोली माटी का लाड़ला शहीद रामजी होंगे। भविष्य के हर हमले को सफल करने में पीएलजीए बलों को प्रेरणा का स्रोत होंगे। ★

(कॉमरेड रामजी की जीवनी अगले अंक में पेश किया जाएगा। - सं.मं.)

कंचाल शहीदों की स्मृति में कंचाल में भाव-भिनी सभा संपन्न!

कामरेड विमला

कामरेड चूटे

कंचाल में शहीद हुए इन योद्धाओं के फोटो हमें पिछली 'प्रभात' प्रकाशित होने के बाद मिले। - सं.मं.

दक्षिण बस्तर डिवीजन के पामेड़ एरिया के अंतर्गत 1 अगस्त 2008 को कंचाल गांव में सभा आयोजित की। सभा में पूरे इलाके से करीब 3000 जनता ने हिस्सा लिया।

गौरतलब है कि 18 मार्च 2008 को कंचाल कोवर्ट आपरेशन में 9वीं पलटन सहित उत्तर तेलंगाना के कॉमरेडों व गांव की निदोर्ष जनता समेत 18 कामरेड क्रूर ग्रेहाउण्ड्स बलों के साथ शहीद हुए थे। जिस स्थल पर उन 18 साथियों का गर्म लहू बहा, उसी स्थल पर जनता ने तमाम शहीदों की याद में एक स्मारक का निर्माण किया।

सबसे पहले डीएकेएमएस एरिया अध्यक्ष कामरेड बुधराम ने झंडा फहराया। कंचाल और तड़िकेल में शहीद हुए साथियों समेत देश भर में शहीद हुए साथियों को सिर झुकाकर लाल सलाम पेश किया गया। और उनके परिजनों के प्रति तहेदिल से सहानुभूति प्रकट की गई।

ग्रेहाऊण्ड्स बलों के हमले में शहीद हुए एक कॉमरेड हड़मा की पत्नी इड़िमे ने शहीद स्मारक का अनावरण किया। उन्होंने जनता को संबोंधित करते हुए कहा कि जन अंदोलन में मेरे पति ने जान दी है। हम उस जन संघर्ष के पक्ष में रहते हुए सदा उसका भरपूर सहयोग करते रहेंगे। कंचाल गांव के माड़ाल भी 18 मार्च को शहीद हुए थे। कामरेड माड़ाल के पिता ने मंच पर आकर शहीदों को श्रद्धांजली दी और कहा "कंचाल में हमारे बेटों को मारने वाले ग्रेहाउण्ड्स बलों को सजा मिले, इस क्रूर हत्याकांड की न्यायिक जांच हो। हमारी पुरजोर मांग के बावजूद लुटेरी सरकार ने इस मामले में कुछ नहीं किया। हम हमेशा जनता की लड़ाई के समर्थक रहे हैं, और आगे भी जन संघर्षों का समर्थन करते रहेंगे।"

कंचाल अमर शहीदों की जय-जयकार करते हुए, उनके खून का बदला लेने के संकल्प के साथ सभा संपन्न हुई।

भाकपा (माओवादी) की डीके एसजेडसी की प्रेस विज्ञप्ति

2 जनवरी 2009

गाजा पर जारी इज्राएल के बर्बर हमलों को फौरन रोक दो!

फिलिस्तीनियों के अस्तित्व को मिटाने पर तुले अमेरिकी-ब्रितानी साम्राज्यवादियों और इज्राएली यहूदीवादियों की साजिशों की कड़ी निंदा करो!!

भारत सरकार इज्राएल के साथ सारे कूटनीतिक सम्बन्ध तत्काल तोड़ ले!!

हमास और इज्राएल के बीच पिछले छह महीनों से लागू 'संघर्ष विराम' के 19 दिसम्बर को समाप्त होने के बाद, हमास द्वारा राकेट दागे जाने की घटना को बहाना बनाकर, जिसमें कथित तौर पर 4 इज्राएलियों की मौत हुई थी, अमेरिका के हथियारों और समर्थन से इज्राएल ने अत्यंत बर्बरता के साथ गाजा पर हवाई हमलों का सिलसिला शुरू किया। 15 लाख आबादी वाले इस घने शहर पर पहले ही दिन 1000 टन से ज्यादा बम गिरा दिए। हजारों सैनिकों को गाजा के चारों तरफ तैनात कर शहर से बाहर जाने वाले सभी रास्तों को सील करने के बाद शुरू किए गए इन पाशविक हमलों में अभी तक मीडिया की खबरों के मुताबिक 400 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं और 2100 से ज्यादा घायल हुए हैं। सैकड़ों घायलों की हालत नाजुक बताई जा रही है। काफी पहले से बाहरी दुनिया से पूरी तरह काट दिए जाने के कारण गाजा में घोर मानवीय संकट की स्थिति पैदा हो गई है। घायल लोगों के इलाज की सुविधाओं का घोर अभाव है। कथित तौर पर हमास के मुख्यालय और उसके अधिकारियों के आवासों को निशाना बनाकर किए गए इन हमलों में अभी तक जितने भी मारे गए हैं उनमें ज्यादातर आम नागरिक ही हैं। हालांकि कुछ हमास के नेता-अधिकारी भी मारे गए हैं। अब इज्राएली डिफेन्स फोर्सेस (आईडीएफ) के करीब 9,000 सैनिकों को गाजा के इर्द-गिर्द इकठ्ठा करके, सैकड़ों बख़्तरबंद गाड़ियों व टैंकों को तैनात कर जमीनी कार्रवाई की तैयारियां जोर-शोर से की जा रही हैं। इसका मतलब हजारों और फिलिस्तीनियों के कत्लेआम की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। इज्राएल खुलेआम ही कह रहा है कि ये हमले कई दिनों तक चल सकते हैं।

तथाकथित 'विश्व समुदाय' कोई ऐसी पहलकदमी नहीं ले रहा है जिससे कि इज्राएल को इन हमलों को तुरंत रोकने पर मजबूर किया जा सके और ऐसे आपराधिक हमलों के लिए उसे दंडित किया सके। अमेरिका पूरी निर्लज्जता के साथ हमास की निंदा करते हुए हत्यारे इज्राएली यहूदीवादियों का एकतरफा समर्थन कर रहा है। यहां तक कि सुरक्षा परिषद की बैठक भी बेनतीजा ही समाप्त हुई जिसमें दोनों पक्षों में संघर्ष विराम लागू करवाने का प्रस्ताव रखा गया था। अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने यह कहकर अरब देशों के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि यह 'असंतुलित' था। इससे फिर एक बार साफ हो जाता है कि संयुक्त राष्ट्र संघ और उसका सुरक्षा परिषद कहने के लिए तो तटस्थ संस्थाएं हैं पर वास्तव में उन पर अमेरिका और यूरोपीय देशों का ही नियंत्रण है।

दरअसल करीब डेढ़ साल पहले से ही जबसे हमास सत्ता में आई थी, गाजा को लगभग बाहरी दुनिया से काट ही दिया गया और उस पर इज्राएल ने कई प्रतिबंध लगा दिए थे। इससे गाजा के लोग अमानवीय हालात में जीने को मजबूर हुए थे। बाहर जाने के सारे रास्ते सील कर दिए गए थे। जब चाहे तब मिसाइलें दागकर लोगों की हत्या करना इज्राएल के लिए आम बात है। यहां तक कि बीमार लोगों को पड़ोसी देशों में जाकर इलाज करवाने से भी वंचित रखा गया था। एक शब्द में कहा जाए तो पूरे गाजा शहर को जेल में तब्दील किया गया था। हमास के रॉकेट हमलों को इसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि उसके पास इसके अलावा और कोई विकल्प भी नहीं था। इज्राएल के खिलाफ फिलिस्तीनियों का संघर्ष बिल्कुल न्यायपूर्ण है जिसका दशकों पुराना इतिहास है। इस संघर्ष ने कई उतार-चढ़ाव देखे हैं और इसे कई बार गद्दारियों का शिकार भी होना पड़ा है। दरअसल इज्राएल का निर्माण ही फिलिस्तीनियों के अस्तित्व को मिटा देने के आधार पर हुआ है। उसका अस्तित्व मध्य पूर्व की समूची जनता के लिए, खासकर अरब देशों के लिए बड़ा खतरा है। अमेरिकी और उसके सहयोगी ब्रितानी साम्राज्यवादियों की भू-राजनैतिक रणनीति के तहत ही जोर-जबर्दस्ती और आतंक के बल पर इज्राएल का निर्माण किया गया। दुनिया के साम्राज्यवादी सरगना अमेरिका द्वारा दिए गए हथियारों से सिर से पांव तक मानव हनन हथियारों से लैस हुए

और उसका खुला समर्थन प्राप्त होने के कारण गुरूर से चूर इज़्राएल ने अब तक फिलिस्तीनियों पर अनगिनत हंतक हमले किए। हजारों फिलिस्तीनियों का कत्लेआम किया। न सिर्फ फिलिस्तीन पर बल्कि पड़ोस के लेबनान, सिरिया आदि देशों पर भी कई बार हमले किए। इज़्राएल के दुराक्रमणकारी हमलों से खुद को बचाने और अपनी आजादी के लिए फिलिस्तीनियों के हमास समेत विभिन्न संगठनों द्वारा जारी प्रतिरोधी संघर्ष पूरी तरह न्यायसंगत है जिसका हर भारतवासी को तहेदिल से समर्थन करना चाहिए।

2006 में भी ऐसे ही बेतुके बहानों से इज़्राएल ने लेबनान पर दुराक्रमणकारी हमला किया था। लेकिन हिजबुल्ला के शानदार प्रतिरोध से उसे वहां से दुम दबाकर पीछे हटना पड़ा था। इस कड़वे अनुभव के बाद इज़्राएल ने काफी तैयारी करके गाजा पर सुनियोजित तरीके से यह घातक हमला शुरू कर दिया जिसमें दुनिया के अत्यधिक घनत्व वाले इस शहर में जानमाल का बेहिसाब नुकसान हो रहा है। भारत की बड़े जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों की यूपीए सरकार इज़्राएल के इस हमले का खुलकर खण्डन नहीं करते हुए दबी जुबान से कह रही है कि दोनों पक्षों को संघर्ष विराम करना चाहिए। परमाणु समझौते के जरिए अमेरिका के सामने पूरी तरह घुटने टेकने वाले इन लुटेरे शासक वर्गों से इससे ज्यादा उम्मीद भी नहीं कर सकते। और तो और हमारे देश के शासकों ने इज़्राएल से हथियारों की खरीद, संयुक्त सैन्य-अभ्यास, उसकी खुफिया संस्था 'मोसाद' से प्रशिक्षण पाने जैसे कई समझौते कर रखे हैं। भाजपा और कांग्रेस दोनों ही प्रमुख शोषक पार्टियां जनता के न्यायपूर्ण आंदोलनों और क्रांतिकारी संघर्षों को कुचलने में इज़्राएल को अपना आदर्श मानती हैं।

हमारी स्पेशल जोनल कमेटी गाजा पर जारी इज़्राएल के आतंकी हमलों का पुरजोर विरोध करती है। हमारी पार्टी का स्पष्ट मत है कि मध्य पूर्व में स्थाई तौर पर शांति तभी स्थापित हो सकती है जब वहां पर साम्राज्यवादियों की सभी साजिशों को विफल करते हुए इज़्राएल को भंग किया जाता। वहां पर एक ही देश होना चाहिए और वह है फिलिस्तीन... धर्म निरपेक्ष फिलिस्तीन। इस मौके पर हम समस्त मेहनतकश जनता व बुद्धिजीवियों से अपील करते हैं कि वे मध्य-पूर्व में इज़्राएली यहूदीवादियों और अमेरिकी-ब्रितानी साम्राज्यवादियों द्वारा लगातार की जा रही घिनौनी साजिशों और बर्बर हमलों का विरोध करें और अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत फिलिस्तीनियों के प्रति भाईचारा प्रकट करें। इन हमलों का खण्डन करें तथा उन्हें तत्काल रोकने की मांग उठाने के साथ-साथ इज़्राएल के साथ सारे कूटनीतिक संबन्ध तत्काल तोड़ लेने का भारत के शासकों पर दबाव डालें। ✶

बुश को जूतों से विदाई!!

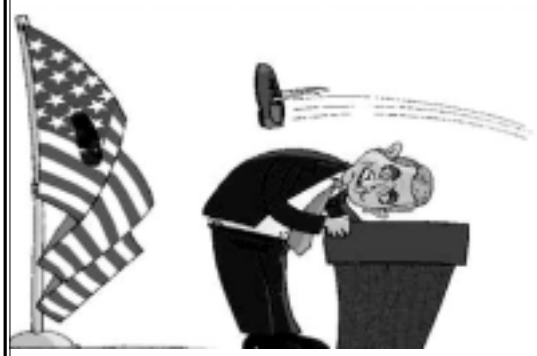

यह अब तक के सबसे बदनाम, घटिया और मानवता पर कलंक शासक के शासन की अपनी किस्म की अनोखी विदाई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश इराक में दिसंबर 2008 में अपने कार्यकाल के अंतिम दौरे पर थे। शायद इसी का इंतजार था बहादुर और 28 वर्षीय नौजवान पत्रकार मुंतजर अल ज़ैदी को। अपने देश के अमेरिकी साम्राज्यवादियों के हाथों मिले अपमान, लाखों जनता की हत्याएं, तबाह कर दिये गांव-शहर सब उसके दिल में आग लगा रहे थे। जार्ज बुश इराक की राजधानी बग्दाद में जब पत्रकार सम्मेलन कर रहे थे तो एक पत्रकार ने पूछा कि क्या इराक में आतंक के खिलाफ युद्ध खत्म हुआ। इसके जवाब में बुश ने कहा, नहीं। इतने में मुंतजर अल ज़ैदी उठे और यह कहते हुए 'अब पूरा हो जाएगा', उस पर अपना जूता दे मारा। पहला जूता फेंका तो बुश ने नीचे झुककर खुद को बचा लिया। फिर 'विधवाओं, अनाथों, तुम्हारे कारण मारे गए इराकियों की तरफ से फेंक रहा हूं। कुत्ते! यही तुझे विदाई का चुम्बन!' कहते हुए उन्होंने अपना दूसरा जूता भी मारा। इस बार तो वह थोड़े में बच गया। इसके बाद वहां मौजूद सुरक्षा कर्मी मुंतजर पर टूट पड़े और उन्हें बुरी तरह पीटते हुए बाहर ले गए। फर्श पर बिछा हुआ कालीन उनके गर्म लहू से लाल हो गया। इसके खिलाफ कुछ पत्रकारों को नारे लगाते हुए टीवी में दिखाया गया। बुश ने तो जैसे-तैसे पत्रकार सम्मेलन समाप्त करके इस जगहंसाई को टालने की विफल कोशिश की।

यह इराकी जनता का गुस्सा था जो उस पर मुंतजर द्वारा जूते बरसाने के रूप में अभिव्यक्त हुआ। दरअसल यह जूता साम्राज्यवाद, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद के मुंह पर है। लाखों इराकियों की मौत, यातनाओं, अत्याचार, तबाही और अपमान के जवाब में एक देशभक्त पत्रकार द्वारा अत्यंत साहस के साथ जताया गया विरोध है।

इस घटना से साम्राज्यवाद विरोधी जनता खासकर अरब जगत, इरान आदि की जनता में व्यापक खुशी की लहर दौड़ गई। मध्य पूर्व के कई शहरों में मुंतजर के समर्थन में बड़ी-बड़ी रैलियां निकाली गईं और उनकी रिहाई की मांग की। जनता के व्यापक विरोध के बावजूद इराक की कठपुतली सरकार ने मुंतजर को 3 साल की सजा सुनाई। भले ही मुंतजर को जेल के सलाखों के पीछे धकेल दिया गया हो, लेकिन आजादी की जिस अदम्य चाहत ने उन्हें इसके लिए प्रेरित किया था, उसे भला कौन कैद कर सकता है?

आखिर क्या है यह विश्वव्यापी वित्तीय संकट?

– अनुपम

अंग्रेजी में एक कहावत है – बिना संकट और मंदी के पूंजीवाद की कल्पना उसी तरह नहीं की जा सकती जैसे बिना नरक के धर्म की कल्पना।

पिछले कुछ समय से हम जिस विश्व आर्थिक संकट की खबरें सुन रहे हैं वह पूंजीवाद के इसी पहलू से संबंधित है। लेकिन यह संकट जिस शब्दावली में बयान किया जाता है उसे आम आदमी के लिए समझना नामुमकिन सा है। यह भी अजीब विडम्बना है कि पूंजीवाद के संकट का ठीकरा जिस आम आदमी के सिर पर फूटता है वह इसे समझने में बेहद असहाय नजर आता है। सब प्राईम, मॉर्टगेज, लीवरेज, नकद आरक्षी अनुपात, हेजफण्ड, डेरीवेटिव, क्रेडिट डिफाल्ट, क्रेडिट क्रंच, स्वैप्स, इन्वेस्टमेंट वेहिकल, लिक्विडिटी इंटरबैंकिंग लेंडिंग..... जैसे शब्द भले ही किसी की समझ में न आएं, लेकिन इनकी संहारक क्षमता किसी अमेरिकी मिसाइल से कम नहीं है। इसलिए पूंजीवादी संकट के समय ये शब्द आर्थिक पन्नों पर उसी तरह छाए रहते हैं जैसे युद्ध के समय अमेरिकी बमवर्षकों और मिसाइलों के नाम। खरबपति निवेशक वारेन बफेट ने उपरोक्त नामों वाले कागज के इन टुकड़ों को उचित ही बड़े पैमाने पर वित्तीय विध्वंस के हथियार की संज्ञा दी है। और शेयर मार्केट का तिलिस्म तो किसी भी मायने में चंद्रकांता के तिलिस्म से कम नहीं है।

फिर हम क्या करें! इसे कैसे समझें? पूंजीवाद के इस जटिल वित्तीय तंत्र के बारे में एक स्थापित बात है, इस जटिल वित्तीय तंत्र को हिस्सों में समझना जितना जटिल और प्रायः असंभव सा है, वही इसे संपूर्ण में समझना बेहद आसान है। यही बात संकट पर भी लागू होती है। वर्तमान संकट को हिस्सों में समझना जितना मुश्किल है उसे संपूर्ण में समझना बेहद आसान है।

आइए कोशिश करें!

थोड़ा सरलीकरण का खतरा उठाते हुए दुनिया को दो भागों में बांट दिया जाए। एक तरफ अमीर और दूसरी तरफ गरीब। गरीब आदमी जितना कमाता है उससे कहीं कम खर्च करता है। कमाई का एक हिस्सा वह बचत करता है, जो किसी बैंक या अन्य वित्तीय संस्थानों के माध्यम से मार्केट में आ जाता है। बैंकों में रखा यह धन किसी गाढ़े वक्त काम आता है। यह फिर कभी-कभी तो गरीब आदमी बिना इस धन का इस्तेमाल किए ही दुनिया से विदा हो जाता है। निश्चय ही गरीब लोगों में एक बड़ हिस्सा उन लोगों का है जो कुछ भी बचत नहीं कर पाते। और वो जो भी थोड़ा बहुत कमाते हैं तुरंत रोजमर्रा की चीजों पर खर्च हो जाता है। गरीब आदमी की अर्थव्यवस्था में उधार का हिस्सा बहुत छोटा होता है। नाते-रिश्तेदारों या बैंकों से लिया गया उधार उसकी आमदनी के उचित अनुपात में होता है। और उसे समय पर लौटाना होता है। और प्रायः वह लौटा देता है। इसलिए उधार उसकी आमदनी का जरिया नहीं, बल्कि अचानक आ गए खर्चों से निपटने का एक तरीका है।

दूसरी तरफ अमीर आदमी जितना कमाता है उससे कहीं अधिक खर्च करता है। उसके व्यापार का बड़ा हिस्सा उधारी पर टिका होता है। यह उधारी उसे बैंक और अन्य वित्तीय संस्थान मामूली ब्याज दर पर उपलब्ध कराते हैं। यदि आप किसी भी कम्पनी का बैलेन्स शीट देखेंगे तो पाएंगे कि वहां ईक्विटी और उधार का अनुपात प्रायः 20:80 या 30:70 तक होता है। यानी कम्पनी के पास यदि कुल सौ रुपए हैं तो उसमें से 70 या 80 रुपए उधार के हैं। इसी प्रकार कम्पनियों में काम करने वाले ऊंचे कार्यकारी अधिकारी या उच्च वर्ग के अन्य लोग ही अपने सभी बड़े खर्चों (जैसे घर, कार, बच्चों की पढ़ाई, विदेश में पढ़ाई) के लिए बैंकों या अन्य वित्तीय संस्थानों से लिए गए कर्जों पर ही निर्भर रहते हैं। कर्जा देने वाले बैंक और कर्जा लेने वाले दोनों ही अपनी सुरक्षा के लिए अपने दिए गए या लिए गए कर्जों का बीमा भी कराते हैं। और इस प्रकार बीमा कम्पनियां भी इस उधारी के खेल में शामिल हो जाते हैं। इस संकट में दिवलिया हुई अमेरिका इंटरनेशनल ग्रुप (एआईजी) ऐसी ही बीमा कम्पनी थी। लेकिन इस उधार के लेन-देन का असली खेल दूसरे चरण में शुरू होता है और वही संकट का मुख्य कारण बनता है। उस चरण से परदा उठाने से पहले यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि उधार में दिया और लिया जाने वाला यह अकूत धन गरीब आदमी के शोषण से और उसकी मामूली बचत से कमाया गया धन है।

पहले चरण की यह उधार पूंजी किसी न किसी रूप में भौतिक वस्तु का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे फैक्टरी, घर, गाड़ी, विदेश में पढ़ाई आदि। लेकिन दूसरे चरण में उधार पूंजी का जो खेल शुरू होता है वह भौतिक वस्तु के मूल्य से एक दम कट जाता है। और आभासी पूंजी में तब्दील हो जाता है। इस चरण में बैंक व अन्य वित्तीय संस्थानों के कर्जे से शेयर, बॉण्ड, सेक्यूरिटी जैसे तमाम नामों वाले उन कागजों को खरीदा जाता है और फिर खरीदी गई कीमत से ऊंची कीमत पर बेच दिया जाता है। बैंक व अन्य वित्तीय संस्थान और यहां तक कि बीमा कम्पनियां भी

अपने-अपने मूल कामों से हटकर इन कागज के टुकड़ों को खरीदने और बेचने में कूद पड़ते हैं। बैंकों वित्तीय संस्थानों के साथ-साथ बड़ी कम्पनियां और बड़े निवेशक भी इस खेल में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। इस खरीदने और बेचने में जो पूंजी पैदा होती है वह आभासी होती है। इस खेल में कुछ भी उपभोग नहीं होता। इसलिए इन कागजों का असली मूल्य भी पता नहीं चलता। इसे और अच्छी तरह समझने के लिए एक उदाहरण पर गौर करना होगा।

मान लीजिए एक तीन कमरों का घर बनकर तैयार हुआ। इसे 10 मजदूरों ने मिलकर बनाया। इन मजदूरों की मजदूरी समेत घर की कीमत एक लाख रुपए है। एक छोटे कागज पर घर की कीमत लिखी हुई है। यह कागज जिसके पास होगा वही इसका मालिक होगा। वर्तमान मालिक ने यह कागज किसी और को एक लाख में बेच दिया। उस आदमी ने घर में रहने की बजाए किसी तीसरे को यह कागज दो लाख में बेच दिया। उसने आगे इसे 5 लाख में बेच दिया। उसने आगे इसे 10 लाख में बेच दिया। यह छोटा सा कागज जिसके पास होगा वह 10 लाख रुपए का मालिक माना जाएगा। अब यह स्पष्ट हो गया होगा कि इस 10 लाख में से 9 लाख आभासी पूंजी है। जिसके बराबर की कोई वस्तु अस्तित्व में नहीं है। 10 लाख के इस छोटे से कागज को आप कोई भी नाम दे सकते हैं। बॉण्ड, शेयर, सेक्यूरिटी, हेज फण्ड आदि। वित्तीय बाजार में इसी से मिलते-जुलते नामों वाले लाखों-करोड़ों कागज आए दिन खरीदे-बेचे जाते हैं। और इन कागज के टुकड़ों के मालिक रातोंरात आरबपति, खरबपति होता रहता है।

इस पृष्ठभूमि में, आइए, इस संकट के मुख्य केन्द्र व जनक अमेरिका की अर्थव्यवस्था पर एक नजर डाल लें। अमेरिकी अर्थव्यवस्था दुनिया की सबसे बड़ी कर्जखोर अर्थव्यवस्था है। इसका बजट घाटा अरबों डॉलर में है। राष्ट्रीय कर्ज को दिखाने के लिए न्यूयार्क में एक घड़ी लगाई गई है, जिसे राष्ट्रीय कर्ज घड़ी कहा जाता है। इस माह जब कर्ज का आंकड़ा 11 अंकों में आ गया तो घड़ी में इस आंकड़े को दिखाने के लिए जगह ही नहीं बची। और अब इसे एक नई और ज्यादा जगह वाली घड़ी से बदला जा रहा है।

उपरोक्त आंकड़ों का सीधा मतलब यही है कि अमेरिका जितना पैदा करता है उससे कहीं अधिक खर्च करता है। अमेरिका का सबसे बड़ा खर्च सेना पर होता है। पूरी दुनिया के देशों के कुल रक्षा बजट से ज्यादा अकेले अमेरिका का रक्षा बजट है। कमाई से ज्यादा खर्च करने की लत अमेरिकी नागरिकों को भी लग गई है। यहां एक औसत घर में 13 क्रेडिट कार्ड होते हैं। अमेरिकी उपभोक्ता अपनी कमाई से 800 अरब डॉलर ज्यादा खर्च करता है।

बजट घाटे का एक बड़ा कारण यह है कि अमेरिकी कम्पनियां लागत कम करने के चक्कर में अपनी प्रोडक्शन यूनिट को बाहर के देशों जैसे भारत, चीन में स्थानांतरित कर देती हैं। और वहां से तैयार माल को पुनः अमेरिका में आयात करती हैं। इससे एक ओर जहां अमेरिका में बेरोजगारी बढ़ती है, वहीं अमेरिका का आयात बिल भी बेवजह बढ़ने लगता है। अमेरिका इस अंतर को कैसे पूरा करता है? रक्षा बजट के लिए अरबों-खरबों डॉलर कहां से लाता है? इसके दो रास्ते है। पहला, बजट घाटा माध्यम से (अर्थात् अमेरिका द्वारा माल आयात करते समय अरबों-खरबों डॉलर अमेरिका से बाहर जाता है) जो डॉलर बाहर जाता है वह पुनः अमेरिकी बॉण्डों या सेक्यूरिटी को खरीदने के रूप में वापस अमेरिका आ जाता है। अमेरिका जिस डॉलर से तेल खरीदता है उस डॉलर के मालिक शेख लोग पुनः उस डॉलर को अमेरिकी बैंकों में जमा कर देते हैं। इस रूप से अमेरिका में

"आधुनिक उत्पादन व उत्पादों के वितरण में अव्यवस्थित नियंत्रण वाले हालात, उत्पादन के हालात जो कि आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नहीं बल्कि मुनाफे के लिए तय होते हैं, हालात जिनके तहत हर कोई अपने को धनी बनाने के चक्कर में अपनी खुद की स्वतंत्र दिशा पर काम करता है – ऐसे हालात निश्चित ही बार-बार ठहराव को जन्म देंगे। आर्थिक विकास के युग के प्रारम्भ में ठहराव उद्योग की एक या दूसरी शाखा तक एक बाजार तक ही सीमित रहता था, परन्तु प्रतियोगियों की गतिविधियों के केन्द्रीकरण के साथ ही उद्योग की एक शाखा में काम से वंचित मजदूर दूसरी शाखा को चुनकर जिसमें काम को सीखना आसान है, उसमें घुस जाते हैं। इस प्रकार माल जिसको एक बाजार में कोई खरीददार नहीं मिलता, दूसरे बाजार में घुसता है और इसी प्रकार प्रक्रिया चलती है। यही छोटे-छोटे संकट धीरे-धीरे मिलकर कुछ ही समय बाद एक विशाल स्तर के संकटों में बदल जाते हैं।"

- एंगेल्स (इंग्लैंड में मजदूर वर्ग की स्थिति)

"इस प्रकार 1914 में पूंजीवाद के आम संकट की शुरुआत ने सामाजिक क्रांति की वस्तुगत परिस्थितियों को और पका दिया है जो कि वास्तव में साम्राज्यवादी युग के आरम्भ से ही विषय सूची में आ गया था। इसने समाज में सभी अन्तर्विरोधों को एक विस्फोटक स्तर तक ला दिया था; जैसे कि श्रम व पूंजी के बीच साम्राज्यवाद व शोषित राष्ट्रों के बीच, विभिन्न साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच के अन्तर्विरोध। 1914 से ही उत्पादक शक्तियों के उपस्थित उत्पादन सम्बन्धों के साथ अन्तर्विरोध ने एक विस्फोटक रूप अख्तियार कर लिया और फासीवाद, विश्वयुद्धों तथा सामाजिक क्रान्तियों को जन्म दिया जो विश्व समाजवादी क्रान्ति की अन्तिम विजय तक जारी रहेंगी।"

- स्तालिन (लेनिनवाद की समस्याएं)

विदेशी होल्डिंग करीब 6.5 खरब डॉलर है जो हर माह 550 अरब डॉलर के औसत से बढ़ रहे हैं। दूसरा माध्यम है डॉलर छापना। चूंकि अभी तक डॉलर एक विश्व मुद्रा बनी हुई थी, अत: डॉलर छापकर भी अमेरिका उसके नकारात्मक प्रभावों से काफी हद तक बचा रह सकता था।

अमेरिका इसी उधार की पूंजी से विश्व के तमाम देशों में निवेश करने वाला सबसे बड़ा निवेशक है। दुनिया में कुल निवेश का लगभग 20 प्रतिशत निवेश कर्ता अकेले अमेरिका है, जो 249 अरब डॉलर के बराबर है।

इस पृष्ठभूमि को दिमाग में रखते हुए, आइए, हम पुन: घर वाले उदाहरण पर लौटते हैं। मान लीजिए किसी कारण से 10 लाख तक पहुंच चुके उस घर के कागज की कीमत गिरनी शुरू हो जाए, यानी 10 लाख वाले उस कागज को वापस 9 लाख में बेच देना पड़े। और उसी क्रम में यह 5 लाख, 2 लाख और पहले के 1 लाख तक गिर जाए। लेकिन समझने की बात यह है कि गिरते समय यह उस घर के वास्तविक मूल्य 1 लाख पर नहीं टिकेगा, बल्कि और नीचे 50 हजार, 25 हजार तक आ जाएगा। यानी घर की कीमत उसकी वास्तविक कीमत से चौथाई रह जाएगी। अब मान लीजिए कि यह घर किसी बैंक से 50 हजार का कर्ज लेकर बनाया गया था। लेकिन अब इनकी कीमत महज 25 हजार रह गई है। यानी न ही बैंकों को कर्जा लौटाया जा सकेगा और न ही इस घर को बनाने वाले मजदूरों को उचित मजदूरी ही मिल सकेगी। और इस 'संकट' के समय नए घरों का बनना या नए घरों के लिए बैंकों से कर्जा मिलना बंद हो जाएगा। बैंक दिवालिए हो जाएंगे। उत्पादन धीमा हो जाएगा। बेरोजगारी बढ़ जाएगी।

किसी को भी इस बात पर आश्चर्य होगा कि घर तो अपनी जगह पर जस का तस है, लेकिन इस घर से जुड़े व्यापर की कुंजी कुछ ऐसे सनकी और अघाए हुए लोगों के पास है जिन्हें सम्पत्ति बढ़ाने की हवस है। भले ही यह आभासी ही क्यों न हो।

इस कृत्रिम संकट के समय सरकार की भूमिका गौरतलब है। वास्तव में पूंजीवादी संकट के समय ही यह खुलकर सामने आता है कि सरकारें निर्लज्ज तरीके से पूंजीपतियों के साथ खड़ी नजर आती हैं। उपरोक्त 'घर' वाले उदाहरण में जो 9,75,000 का 'नुकसान' हुआ है उसमें 9 लाख आभासी है। इस आभासी नुकसान में कुछ बैंक और निवेशक शामिल होंगे। सरकार का पूरा जोर इन बैंकों और निवेशकों को इस आभासी नुकसान की क्षतिपूर्ति देनी है। लेकिन यह क्षतिपूर्ति आभासी पूंजी से नहीं, बल्कि वास्तविक पूंजी से की जाएगी, यानी जनता से प्राप्त टैक्स से। नतीजा यह होगा कि जनता के कल्याण पर खर्च होने वाली राशि में और कटौती होगी। अमेरिका द्वारा 'ट्रबुल्ट एसेट रिलीफ प्रोग्राम' के तहत जो 700 अरब डॉलर दिए जा रहे हैं उसे इसी रोशनी में देखना चाहिए। यह भी गौरतलब है कि यह पहली किश्त है। दुनिया के तमाम देश अरबों-खरबों डॉलर का जो 'बेल आउट पैकेज' दे रहे हैं वह इसी आभासी पूंजी को बचाने के लिए है। यानी अभासी पूंजी को बचाने के लिए जनता की वास्तविक पूंजी की बलि दी जा रही है।

अब वास्तविक संकट पर लौटा जाए। अमेरिका के लेहमैन ब्रदर्स जैसे अनेक बड़े बैंकों ने विभिन्न क्षेत्रों में अंधाधुंध कर्ज दिए। ये बैंक आपस में प्रतियोगिता के चलते भी ज्यादा से ज्यादा कर्ज देने की होड़ में शामिल रहते हैं। ये कर्ज उनके पास सम्पत्ति से कहीं ज्यादा हो गए। इसी बीच सब प्राइम मॉर्टगेज संकट पैदा हुआ। यानी अमेरिकी नागरिकों ने घर खरीदने के लिए घर के कागज को बैंकों के पास गिरवी रखकर अंधाधुंध कर्ज ले लिया। एक-एक करके डिफाल्टर होने लगे। फलत: घरों की कीमतें गिरने लगीं। रियल एस्टेट का पहले का बूम ध्वस्त हो गया। औद्योगिक उत्पादन धीमा हो गया। बैंकों की साख दांव पर लग गई। बैंकों ने अपने बैलेन्स शीट को कृत्रिम तरीके से बनाकर साख कायम करने की कोशिश की। लेकिन असफल रहा। फलत: बैंकों के शेयरों के दाम गिरने लगे। बैंक दिवालिया होने लगे। इस स्थिति से घबराकर दूसरे बैंकों ने कर्ज देना ही बंद कर दिया। या कम कर दिया। फलत: बाजार में नगदी कम होने लगी। नगदी और आसान कर्जों से चलने वाले उद्योगों को मुद्रा का संकट होने लगा। और उन्होंने उत्पादन धीमा कर दिया। कर्मचारियों की छंटनी की योजना बनाने लगे। फलत: आम जनता की क्रय शक्ति कम होने लगी। और इस कारण पुन: औद्योगिक उत्पादन धीमा होने लगा। मंदी अब महा मंदी में तब्दील होने लगी।

संक्षेप में यह है इस संकट का निचोड़। जहां तक भारत का ताल्लुक है तो भारत पर भी इसका असर शुरू हो चुका है। चूंकि भारत मूलत: कृषि प्रधान देश है, इसलिए इस पर इस मंदी का असर भिन्न तरीके से और अप्रत्यक्ष तरीके से अधिक होगा। जेट एअरवेज इस मंदी का हवाला देते हुए 1900 कर्मचारियों की छंटनी कर दी। हालांकि इसे बाद में वापस ले लिया। लेहमैन ब्रदर्स का पवई (मुम्बई) स्थित आफिस रातोंरात बंद हो गया। और सैकड़ों लोग एक झटके में सड़क पर आ गए। छोटे निवेशकों के जो लाखों रुपए डूबे हैं उनका हिसाब अभी होना बाकी है। एआईजी में टाटा की हिस्सेदारी थी। वह पूरी तरह डूब चुकी है। आईसीआईसीआई का 400 करोड़ रुपया डूब गया। इस हानि की भरपाई की जाएगी कर्मचारियों की वेतन कटौती और छंटनी से। टाटा ने अपने ऑटो पार्ट्स बनाने वाले फैक्टरी से हाल ही में 400 लोगों की छंटनी कर दी।

इस छंटनी के कारण बाजार में पैसे की कमी को दूर करने के लिए रिजर्व बैंक ने 10 दिनों में तीसरी बार नगद आरक्षी अनुपात (सीआरआर) में कमी करके करीब 1,45,000 करोड़ रुपए बाजार में उंडेल दिया है। यह पैसा मंदी तो क्या दूर करेगा, महंगाई को और बढ़ा देगा। यानी हमारी और आपकी जेब और ढीली हो जाएगी।

यानी सरकार की तमाम कसरतों के बावजूद इस संकट का कोई समाधान नजर नहीं आता। पूंजीवाद के दायरे के अंदर इसे हल करना अब नामुमकिन हो चुका है। और इन सरकारों का वर्ग हित इस पूंजीवाद का दायरा लांघने की कतई इजाजत नहीं देगा।

('दस्तक' नवम्बर-दिसम्बर 2008 से साभार)

जनता पर जुल्म और हत्याओं का सिलसिला जारी है
सलवा जुडूमी गुण्डों, एसपीओ और अर्ध सैनिक बलों का!

दक्षिण व पश्चिम बस्तर की जनता पर सलवा जुडूम के गुण्डों, एसपीओ और अर्ध सैनिक बलों के हमले जारी हैं। सलवा जुडूम को मिले मुहंतोड़ जवाब से वे और बौखला गए हैं। आए दिन जनता को, जन मिलिशिया के कॉमरेडों को और गांवों को निशाना बनाते हैं। पेश है जुलाई-अगस्त 2008 में हुए कुछ हमलों की रिपोर्ट, जो 'प्रभात' को देर से प्राप्त हुई।

✶ 22 जुलाई को दक्षिण बस्तर डिवीजन के गांव डल्ला पर 50-60 की संख्या में आए पुलिस व एसपीओ गुंडों ने हमला किया। गांव की संपत्ति को जला डाला। गांव में जो लोग मिले उनकी बेरहमी से पिटाई की गई। गांव से 400 रुपए और एक बकरे को लूट कर ले गए।

✶ 7 सितंबर को एक बार फिर डल्ला गांव पर कहर टूटा जब पुलिस और जुडूमी गुंडे उकूड़ गांव में हमला कर वापस आ रहे थे, तब उन्होंने डल्ला के एरागुड़ा में 12 घरों को जला दिया। 11 कंडी धान और 4 गल्ला महुआ जल गया। 1 बकरे, एक मुर्गे और 12,000 रुपए को लूट कर ले गए। हमले के बाद गांव के तीन लोगों को पुलिस पकड़ कर ले गई जिसमें से बाद में 2 जन को महिलाओं ने जमा होकर छुड़वा लिया। लेकिन गांव के एक 16 वर्षीय किशोर मोडियम बदरू को पुलिस नहीं छोड़ रही। तीन बार उसे छुड़वाने के लिए महिलाएं जमा होकर गईं। लेकिन पुलिस वाले अब उसे ढाल के रूप में जबर्दस्ती आगे रखते हैं और रास्ते पूछते हैं। इससे पहले भी इस गांव पर पुलिस वालों का 11 बार हमला हो चुका है। लेकिन गांव की जनता क्रांतिकारी आंदोलन के साथ दृढ़ता से डटी हुई है।

✶ 11 अगस्त को दोरनापाल क्षेत्र के अरलेमपल्ली गांव में पुलिस व एसपीओ ने मिलकर हमला किया। गांव में पहरेदारी कर रहे जन मिलिशिया के पांच लागों को अंधाधुंध गोलीबारी कर मार डाला। रेडियो व समाचार माध्यम से इसे 'सुरक्षा' बलों की बड़ी उपलब्धि के तौर पर प्रचारित किया गया। इस घटना में दो महिलाएं व तीन पुरुष मारे गए। अपनी आत्मरक्षा के लिए 2 भरमार बंदूकें उनके पास थीं।

✶ 12 अगस्त जेगुरगोंडा क्षेत्र में एक मुठभेड़ हुई, इसमें एक जन मिलिशिया सदस्या कामरेड लक्के शहीद हो गई।

✶ 22 अगस्त को बासागुड़ा क्षेत्र दल्ला गांव में हमला कर नौ घरों को जलाकर राख कर दिया। गांव में जितने मुर्गी, बकरे, सुअर मिले सब पकड़ कर ले गए।

✶ 26 जुलाई को मालेपाड़ा (बण्डागुड़ा) गांव को चारों तरफ से घेर कर 11 लोगों को पकड़ लिया। और 21,500 रुपए लूट कर ले गए। बाद में सभी लोगों को बेदम पिटाई की और भगा दिया गया।

✶ 27 अगस्त को उसूर विकासखंड के चरलापल्ली, बासागुड़ेम, बोरके पारा व तीन अन्य गांवों में आवापल्ली, तिम्मापुर, व बासागुड़ा के पुलिस और एसपीओ ने मिलकर हमले किए। गांव में मौजूद जनता की संपत्ति व पशु-पक्षियों को पकड़कर ले गए। इसके अलावा तीनों गांवों का कुल 40 हजार रुपया भी लूट कर ले गए। रायगुड़ा के दो निर्दोष जनता की बेदम पीटाई की। उन्हें बेहोशी की हालत में छोड़कर चले गए।

इस तरह से गांव में आत्मरक्षा के लिए पहरेदारी कर रहे जन मिलिशिया सदस्यों को और अन्य गांव वालों को मारा जा रहा है। उन पर अभी भी हमले जारी है। मानवाधिकार संगठनों, जनवाद पसंद लोगों को चाहिए कि इनका विरोध करें। और बस्तर की जनता पर जारी फासीवादी दमन अभियान के बंद करने की मांग को जोर शोर से उठाएं।

पुलिस ने गोली मारी ग्रामीण पारेट सम्मैया को!

31 अक्टूबर 2008 को बीजापुर जिले के मद्देड़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत मिनकपल्ली गांव के निवासी एक निर्दोष किसान पारेट सम्मैया को पुलिस ने चुनावों से पहले दहशत फैलाने की नीयत से गोली मार डाली। गोली लगने से सम्मैया बुरी तरह घायल हुआ। जब उनको गोली मारी गई वह अपने घर में ही था। उसकी पत्नी सिलका बाई के सामने ही हथियारबंद जवानों ने साम्मैया को घायल कर दिया। आधुनिक हथियारों से 'शांतिपूर्ण' मतदान करवाने आए 'सुरक्षा' बलों ने पूरे बस्तर में जो भारी आतंक मचाया उसका यह मात्र एक उदाहरण है।

पांडुलनार-आदेड़ के बीच मुठभेड़ - दो शहीद

10 दिसम्बर 2008 की सुबह पश्चिम बस्तर डिवीजन के आदेड़ और पांडुलनार के बीच हुई मुठभेड़ (या झूठी मुठभेड़) में दो कॉमरेड शहीद हुए। पुलिस के हवाले से अखबारों में छपी खबरों के मुताबिक मारे गए कॉमरेडों के नाम हैं - पेद्दाकोरमा निवासी मुरियम बदरू उर्फ किशोर और लेंड्रा निवासी कारा मंगतू उर्फ प्रदीप। पुलिस के मुताबिक कांदुलनार में बैठक होने की सूचना पुलिस को मिली थी और उसके बाद एसपीओ और पुलिस के संयुक्त गश्ती दल निकला हुआ था। मुठभेड़ एक घण्टे तक चली और दो लोगों की मौत हुई।

मद्देड में एक निर्दोष व्यक्ति की निर्मम हत्या

पश्चिम बस्तर डिवीजन के मद्देड कस्बे में 18 फरवरी 2009 को नशे में धुत एक पुलिस जवान ने भास्कर राव नामक साधारण व्यक्ति की सरेआम पीट-पीटकर हत्या की। दूरू पीने के बाद किसी बात पर विवाद छेड़कर नंदकिशोर नामक सीएएफ के जवान ने भास्करराव की हत्या ही कर डाली। बीच बचाव करने गई एक दंपत्ति को पीटकर घायल कर दिया। आम जन जीवन में यहां मौजूद पुलिस व अर्ध सैनिक बलों के जवान किस प्रकार अशांति फैला रहे हैं, इसे समझने के लिए यह एक और उदाहरण है। सरकारी सशस्त्र बलों की ज्यादतियों और अत्याचारों के खिलाफ जनता और जन पक्षधर बुद्धिजीवियों सड़कों पर आकर आवाज बुलंद करने की जरूरत है। ✶

विरासत–ए–शहादत

जनताना सरकार की रक्षा के लिए झूठे विधानसभा चुनाव का बहिष्कार करते हुए जनयुद्ध में प्राण अर्पित करने वाले कॉमरेड जग्गू और मेहत्तर को लाल सलाम!

14 नवम्बर को छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव के नाम पर बस्तर को पुलिस बलों से भर दिया गया। भाजपा, कांग्रेस पार्टियों द्वारा हेलिकॉप्टरों से एक के बाद एक सशस्त्र बलों को गांवों में उतारा गया। माइन प्रूफ गाड़ियों व बुलेट प्रूफ गाड़ियों से विशेष बलों को चुनाव के नाम पर तैनात किया गया। अक्टूबर से ही हमले शुरू कर दिए। लोगों को जहां तहां गिरफ्तार करने की कोशिश की गई। इन्हीं हमलों को नाम दिया गया लोकतांत्रिक चुनाव। माड़ के ऊपर और बस्तर के चारों ओर बन रही जनता की जनवादी सत्ता जनताना सरकारों और उनके द्वारा निर्मित नई लोकशाही को ध्वस्त करने के उद्देश्य से चल रहे दमन का प्रतिरोध करने के लिए बस्तरियों ने कमर कस ली थी।

14 नवम्बर के दिन इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए माड़ पहाड़ों के ऊपर हर गांव प्रतिरोध के केन्द्र के रूप में, प्रत्येक घर जनयोद्धाओं के लिए एक किला के रूप में खड़ा रहा। इस तैनाती में एक ओर नेतृत्व की भूमिका निभा रहे माड़ जनताना सरकार के जन नायक कॉमरेड जग्गू गोटा ने जनयोद्धाओं को अपने साथ रखकर लुटेरी सरकार की सेनाओं से लोहा लेने के लिए गांव-गांव में जनता को तैयार किया। इसी सिलसिले में आकाबेड़ा के करीब सीआरपीएफ के साथ हुई मुठभेड़ में कॉमरेड जग्गू शहीद हो गए। कॉमरेड जग्गू के कदमों से कदम मिलाकर चलते हुए कॉमरेड मेहत्तर भी वहीं घायल होकर कुछ घण्टों बाद शहीद हो गए।

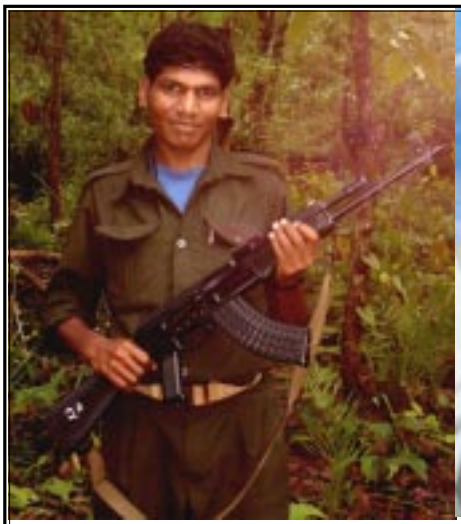

कॉमरेड जग्गू - 2007 में आकाबेड़ा में हुई शौर्यपूर्ण लड़ाई में दुश्मन को मारकर लाई एके-47 रायफल के साथ!

कॉमरेड मेहत्तर - जिन्होंने शहादत में भी अपने नेता कॉमरेड जग्गू का साथ दिया!

नव लोकतंत्र के निर्माण की राह को रोशन करने वाले

माड़ का माटी पुत्र कॉमरेड जग्गू

कई लोग अबूझमाड़ का नाम सुनते ही उसका अर्थ अत्यंत पिछड़ा इलाका, बिना राहों के गांव, दुर्गम जंगली इलाका के रूप में निकालते हैं। एक समय भोपाल से, आज रायपुर से चाहे वह किसी भी पार्टी का मुख्यमंत्री क्यों न हो उनके लिए अबूझमाड़ सिर्फ पर्यटन स्थल और आमदनी देने वाला अपार भण्डार के सिवाय कुछ नहीं रहा। आज यहां निवास करने वाले आदिवासी अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप जनता की जनवादी सत्ता जनताना सरकारों का निर्माण करके लुटेरी सरकार को चुनौती दे रहे हैं। 2003-2008 इन पांच सालों में अबूझमाड़ जनवादी आन्दोलन में दृढ़तापूर्वक खड़ा रहा और इस बार चुनावों को पूरी तरह बहिष्कार किया। माड़ पहाड़ों में इस माहौल को निर्मित करने वालों में कॉमरेड जग्गू भी एक हैं।

माड़ पर्वतों के ऊपर भ्रूण रूप में जन्म ले रही जनता की जनवादी सत्ता जनताना सरकार को ध्वस्त करने की कोशिशें 1999 से की जा रहीं हैं। क्रान्तिकारियों का निर्मूलन करने के लिए केन्द्र सरकार दीर्घकालीन योजनाएं बनाकर पिछले दस सालों से अमल करते आ रही है। छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश सशस्त्र बलों के द्वारा माड़ को घेरने की अनेक योजनाएं बनाई जा रही हैं। माड़ जनताना सरकार और उस सरकार के हिस्सा रहे कॉमरेड जग्गू एक-एक कदम आगे बढ़ाते हुए दृढ़ता के साथ संघर्ष में खड़े रहे। एकता कांग्रेस (2007) द्वारा दिए आह्वान (गुरिल्ला युद्ध को चलायमान युद्ध में और दण्डकारण्य को मुक्तांचल में विकसित करना) को वास्तविक रूप देते हुए दण्डकारण्य में क्रान्तिकारी आन्दोलन आगे बढ़ रहा है। उसमें माड़ एक महत्वपूर्ण इलाका है। दुश्मन के दुष्प्रचारों का मुकाबला करने में कॉमरेड जग्गू ने अविराम काम किया।

कॉमरेड जग्गू का जन्म इरकभट्टी गांव में हुआ था। माड़ में क्रान्तिकारी राजनीति के साथ दस्ता का प्रवेश करना और कॉमरेड जग्गू का जन्म लगभग एक साथ ही हुआ। कॉमरेड जग्गू का जन्म 1981 में हुआ, 1983 में महाराष्ट्र से माड़ पहाड़ों के ऊपर दस्ते का प्रवेश हुआ। कॉमरेड जग्गू ने पांचवीं तक अपने गांव में पढ़ाई करने के बाद आकाबेड़ा में सातवीं पास करके नारायणपुर में नौंवी तक पढ़ाई की। पढ़ाई पूरी रामकृष्ण मिशन आश्रम में हुई थी। वहां रोज बच्चों को देवी-देवताओं की कथा-कहानियां बताकर आदिवासी बच्चों का हिन्दू समाज के बच्चों के रूप में परिवर्तन करने के लिए,

हिन्दुत्व की विचारधारा को बढ़ाने के लिए, धार्मिक कट्टरवादी विचारों को नन्हे दिमाग में भरने की कितना ही कोशिश करने के बावजूद कॉमरेड जग्गू की जिन्दगी भौतिकवादी प्रगतिशील विचारों के साथ ही जुड़ी रही। कॉमरेड जग्गू के होश संभालने तक गांव में क्रान्तिकारियों की गतिविधियां शुरू हो चुकी थीं। कॉमरेड जग्गू 1998 में पढ़ाई छोड़कर अपने गांव पहुंचे थे। गांव पहुंचकर जग्गू ने तुरन्त डीएकेएमएस की सदस्यता लेकर क्रान्तिकारी कार्यकर्ता के रूप में अपनी क्रान्तिकारी जिन्दगी की शुरूआत की।

तब तक पहाड़ों के ऊपर 17 सालों से चल रहे वर्ग संघर्ष की राजनीति से संगठित हो रहे आदिवासी गांवों में पार्टी ने जनवादी सत्ता को कायम करने का आह्वान दिया। इस आह्वान को कार्यरूप देते हुए 1999 में कॉमरेड जग्गू के गांव इरकभट्टी में पहली जनताना सरकार का निर्माण हुआ। यह मात्र इरकभट्टी तक ही सीमित न रहकर पूरे माड़ इलाके में फैलकर जनताना सरकार के नेतृत्व में जनता की जनवादी सत्ता का निर्माण हुआ। इस जनवादी सत्ता की रक्षा की जिम्मेवारी को स्वीकारते हुए कॉमरेड जग्गू दस सालों से लड़ते रहे। कॉमरेड जग्गू ने इन दस सालों में आन्दोलन के हर मोड़ पर अत्यंत जुझारू भूमिका निभाई। जनताना सरकार की रक्षा के लिए बने राका दल के पहले कमांडर कॉमरेड जग्गू ही थे। 2003 में पार्टी सदस्य बने कॉमरेड जग्गू उसी साल जनताना सरकार सदस्य के तौर पर और 2004 में ग्राम पार्टी कमेटी के सदस्य चुने गए।

भूल सुधार

प्रिय पाठको,

'प्रभात' के जनवरी-जून 2008 के अंक में शहीदों के सम्बन्ध में छपे लेखों में हमारी तरफ से दो गंभीर गलतियां हुई थीं।

(1) पृष्ठ 33 में शहीद कॉमरेड सुनंदा की जीवनी दी गई थी। उस पन्ने में जो फोटो छपा था वह कॉमरेड सुनंदा का नहीं था, बल्कि एक अन्य शहीद कॉमरेड जनिया का था। कॉमरेड जनिया उत्तर गड़चिरोली के लक्ष्मीपुर गांव में 2008 की शुरूआत में हुई एक अन्य मुठभेड़ में शहीद हुई थी। गलती से हमने शहीद जनिया का फोटो कॉमरेड सुनंदा की जीवनी वाले पन्ने पर छापा था। इसके लिए हमें खेद है।

(2) पृष्ठ 23 में शहीद जन मिलिशिया कमाण्डर कॉमरेड पोटाम आयते का नाम हमने गलते से 'पोटाम आयतू' के रूप में पेश किया था। कॉमरेड पोटाम आयते एक महिला कॉमरेड थीं जो संघर्ष के दौरान उभरकर जन मिलिशिया कमाण्डर बनी थीं। पश्चिम बस्तर डिवीजन के कॉमरेडों से मिली रिपोर्ट को समझने में हुई भारी गलतफहमी के कारण हम यह गलती कर बैठे।

इन दो गलतियों लिए हम पाठकों तथा शहीद कॉमरेडों के परिवार जनों व मित्रों से तहेदिल से क्षमायाचना करते हैं।

आइंदा ऐसी गलतियां न हों, इसका पूरा खयाल रखेंगे.. .. इस आश्वासन के साथ,

- सम्पादकमण्डल

दरिद्रता में जन्मे व व्यवहार से सीखने वाले आदर्श मार्क्सवादी

पर्याप्त जमीन, पानी, पारम्पारिक खाद, बीज आदि पर्याप्त मात्रा में मौजूद होने के बावजूद आधुनिक खेती के तरीकों से अपरिचित जंगल पर निर्भर होकर गुजारा करने वाली जिन्दगी साम्राज्यवाद की खोखलापन को उजागर करती है। साम्राज्यवादी जहरीली संस्कृति जिस तरह दुनिया को झकझोर रही है वैसे ही माड़ पर्वतों को भी प्रभावित कर रही है। नारायणपुर-ओरछा से अन्दर इरकभट्टी तक सिर्फ 25-30 किलोमीटर की सड़क ही नहीं आई बल्कि सड़क के साथ विकृत संस्कृति और उसके पीछे सिविल अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों की गाड़ियों को भी साथ लाई। दमन आदिवासी जिन्दगी का एक हिस्सा बन गया। दूसरी ओर आकाबेड़ा, कुतुल, कच्चापाल, इरकभट्टी, कुन्दला को नारायणपुर से जोड़कर, नारायणपुर से कलकत्ता तक आदिवासी माल के लिए सम्पर्क भी बनाया। इस इलाके में रामकृष्ण मिशन के वैचारिक शोषण को चुनौती देने वाली क्रान्तिकारी राजनीति ने कॉमरेड जग्गू को जिन्दगी में दरिद्रता से सामना करने के तरीकें बताए। इसीलिए कॉमरेड जग्गू ने गरीबी और उसका कारण लुटेरी सरकार के स्थान पर जनताना सरकारों को स्थापित किया।

गांव में पांचवीं कक्षा में पढ़ते समय उनके पिता बोड़ंगा का देहांत हो गया। मां मासे ने बच्चों को पाल-पोस कर बड़ा किया। चार भाइयों में जग्गू सबसे छोटे थे। जिन्दगी के संघर्ष में सभी ने अपनी-अपनी राह चुन ली। क्रान्ति के पक्ष में और विपक्ष में चारों भाई बिखर गए। उसी क्रम में 2001 में जग्गू ने शादी कर ली आगे दो बच्चों के बाप बने। बच्चों को स्वास्थ्य सुविधाएं और पौष्टिक आहार न मिलने की वजह से कई बीमारियों से ग्रस्त हो गए। बच्ची को सिकलसेल और बेटे को टीबी जैसी भयंकर रोगों ने जकड़ लिया। सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएं और रामकृष्ण मिशन वाले जन स्वास्थ्य पर चाहे कितना ही प्रचार क्यों न करें, सुधार कार्यक्रमों के नाम पर चाहे कितना ही पैसा पानी की तरह क्यों न बहाएं लेकिन जग्गू जैसे गरीब परिवारों के लिए कुछ नहीं मिला है। ऊपर से जनताना सरकारों के नेतृत्व में चल रहे स्वास्थ्य केन्द्रों को दवाई पहुंचने से रोकने के लिए सभी तरह की बाधाएं खड़ी कर रहे हैं।

वे इन कामों से ही संतुष्ट नहीं हुए बल्कि दोनों समय भरपेट भोजन के लिए, खेती विकास के लिए विकास कमेटी में सक्रिय भागीदारी करके गांव में खेती विकास के लिए एक तालाब बनवाया। जग्गू ने गांव में रहते हुए कृषि विकास की आवश्यकता को पूरे गांव को समझाया। भरपेट भोजन, रोगों से मुक्त जिन्दगी के लिए दाल, साग-सब्जियों, फलों, मछली, दूध आदि की आवश्यकता को बताया। सिर्फ बताने तक ही सीमित न रहकर विकास कमेटी को सक्रिय रूप से चलाया भी। भूमि पर विश्वास करके वह खुद कृषि कार्यों में सक्रिय भागीदार रहे। जनताना सरकार द्वारा निर्मित तालाब में मछली पालन की शुरूआत की। कॉमरेड जग्गू 2005 में गांव छोड़कर पेशेवर क्रान्तिकारी बनने के बाद इरकभट्टी गांव के कृषि विकास कार्यों पर ध्यान न देने की वजह से विकास कार्य प्रभावित हुए।

कॉमरेड जग्गू प्रभात, संघर्षरत महिला, पड़ियोरा पोल्लो,

वियुक्ता जैसी पत्रिकाओं के साथ-साथ पार्टी द्वारा प्रकाशित तमाम साहित्य को खुद पढ़ने तक सीमित नहीं रखते थे, बल्कि सभी तबकों के लोगों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इसलिए माड़ डिवीजनल कमेटी उसके विकास पर काफी उम्मीदें लगाई हुई थी। माड़ पुत्र कॉमरेड जग्गू ने सर्वहारा वर्ग की राजनीति को खुद सीखते ही नहीं बल्कि उस राजनीति को व मार्क्सवादी ग्रंथों के साधारण नियमों को समझना शुरू किया। देश के अत्यंत पिछड़ा हुआ इलाका माने जाने वाले माड़ में पैदा हुआ एक साधारण आदिवासी युवक किस प्रकार एक माओवादी संगठक के रूप में, एक लोकप्रिय नेता के रूप में जनता के दिलो दिमाग पर राज करता है, यह समझने के लिए माड़ में विकसित हो रहे क्रांतिकारी आन्देलन को समझना होगा।

घर में एक भाई पुजारी है, दूसरा भाई 2005 में पुलिस के पक्ष में चला गया। गांव में सभी तरह के परम्परागत अंधविश्वासों और नियमों को पालन करवाने के लिए कुछ लोग थे तो, दूसरी तरफ कॉमरेड जग्गू क्रान्तिकारी विचारों के साथ अंधविश्वासों के खिलाफ संघर्ष में दृढ़ता के साथ खड़े रहे। कॉमरेड जग्गू गांव-गांव और घर-घर में रोगों से ग्रस्त जनता को उसके कारण बताते हुए उपचार किया करते थे। क्रान्तिकारी कार्यकलापों को खासकर जनताना सरकार के कार्यकलापों को गति देने के लिए उन्होंने पार्टी नेता के तौर पर 35 गांवों की जिम्मेवारी ली। पहले 2003 में वह अपने गांव की जनताना सरकार के अध्यक्ष चुने गए थे। उसके बाद 2007 में एरिया जनताना सरकार में जन सम्पर्क विभाग में अध्यक्ष की जिम्मेवारी सम्भाली जिस पर वह आखिरी तक बने रहे।

जनता में घुले-मिले जनयुद्ध का कमांडर

राका दल कमांडर, डीएकेएमएस अध्यक्ष, ग्राम जनताना सरकार सदस्य बाद में अध्यक्ष चुने गए। इसी क्रम में कोहकामेट्टा एलओएस एरिया में पार्टी एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर, माड़ डिवीजन जनताना सरकार में जन सम्पर्क विभाग के सदस्य रहते हुए नारायणपुर से झारावाही तक दुश्मन की हर गतिविधि पर नजर ही नहीं रखे बल्कि जन-विरोधियों और प्रतिक्रान्तिकारी ताकतों को सजा देने के लिए पार्टी एरिया कमेटी, जनताना सरकार न्याय कमेटी के आदेश के मुताबिक कॉमरेड जग्गू ने उसे बेझिझक अंजाम दिया। कॉमरेड जग्गू ने अपनी जिम्मेदारी के मुताबिक जन सम्पर्क विभाग के सदस्य के तौर पर विभिन्न तबकों की जनता के साथ सिर्फ परिचय ही नहीं बनाये बल्कि क्रान्तिकारी जनताना सरकार को चलाने के लिए क्रान्ति में साथ चलने वाले सभी तबकों को साथ लेकर चले। सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी प्रगतिशील ताकतों को एक मंच पर लाने के लिए, एक ही विचार पर चलने वाली एक टीम की तरह तैयार करने में कॉमरेड जग्गू ने एक अच्छे आर्गनाइजर की तरह परिपक्वता हासिल की। सैनिक मामलों के सार को समझे कॉमरेड जग्गू सिर्फ हमलों को सफल बनाते हुए पीएलजीए बलों के लिए एक आदर्श गुरिल्ला कमांडर के तौर पर स्थापित हुए। कभी पीछे मुड़कर न देखने वाले, कितनी ही कठिन परिस्थितियों में भी विचलित न होने वाले चिरपरिचित बहादुर गुरिल्ला थे कॉमरेड जग्गू।

प्रतिक्रान्तिकारी ताकतों के लिए खौफ!

मेहनत से दूर होकर, शराब पीकर, आवारों की तरह घूमने वाले, पारिवारिक जिम्मेदारियों के प्रति लापरवाह लोग सरकार के प्रलोभनों से प्रतिक्रान्तिकारी एसपीओ में भर्ती हो गए। क्रान्ति के साथ-साथ प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियों द्वारा की गई हर कोशिश को विफल करने के लिए कॉमरेड जग्गू ने खुद से सम्बन्धित जन सम्पर्क को ही साधन के तौर पर स्थापित किया। इसीलिए कितनी ही कठिन परिस्थितियों में भी विचलित हुए बगैर सक्रिय रूप से काम किया। पिछड़े इलाके माड़ में जनवादी सम्बन्धों के लिए चेतना के नमूना बन गए।

सन 2000 में इरकभट्टी गांव का मंगतू नामक व्यक्ति मुखबिर बना था। गोपनीय सैनिकों के साथ मिलकर हमले की योजना बनाई। कॉमरेड जग्गू उस हमले का सामना करते हुए खड़े रहे। नारायणपुर को केन्द्र बनाकर एसपीओं की मदद से पुलिस हमले कर रही है। दो एसपीओं को वहीं जाकर खत्म करने वाले विशेष टीम का कमांडर कॉमरेड जग्गू ही थे। इतना ही नहीं, 2006 में कुरूसनार कैम्प के ऊपर पीएलजीए बलों द्वारा किए गए हमले में कॉमरेड जग्गू ने जिम्मेदारी से योगदान दिया। इन सबसे ज्यादा बेहद साहसिक कार्यवाही 2007 के मई महीने में आकाबेड़ा में हुई थी। करीब 80 पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों के घेराव में फंसने के बावजूद अद्‌भुत साहस का परिचय देते हुए, पूरे कारतूस खत्म होने तक अकेले ही लड़ते रहे। आखिर में दो ही कारतूस बचे थे कि एक पुलिस को मारकर उसकी एके-47 रायफल छीन ली। अपनी .303 रायफल वहीं छोड़ दुश्मनों पर फायरिंग करते हुए घेराव को भेदकर सुरक्षित बाहर आए। अदम्य साहस, सूझबूझ और पहलकदमी के साथ कॉमरेड जग्गू ने जो कारनामा कर दिखाया उसे दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में सदा याद रखा जाएगा ही, साथ-साथ जनयुद्ध में जुड़ते जा रहे युवाओं और पीएलजीए के लाल सैनिकों को प्रेरणा का स्रोत के तौर पर बने रहेगा। कॉमरेड जग्गू एक अच्छे निशानेबाज थे। सैनिक मामलों में दक्ष, हमलों से मिली सफलताओं के बावजूद कॉमरेड जग्गू ने घमण्ड को हमेशा अपने से दूर ही रखा। कई जासूसों और एसपीओं को मार गिराने में और उसकी योजना बनाने में कॉमरेड जग्गू का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

जग्गू दादा! लाल सलाम... लाल सलाम!!

सैनिक हेलिकॉप्टरों, सैकड़ों कम्पनी सशस्त्र बल कोण्डागांव से नारायणपुर तक, वहां से आकाबेड़ा तक चींटियों के कतार की तरह खड़ी पुलिस गाड़ियां शांतिपूर्ण मतदान की सचाई को बता रहीं थीं। इन हमलों का प्रतिरोध करने के लिए कम्पनी, पलटन, मिलिशिया बलों को कई स्थानों पर तैनात किया गया। इस स्थिति में लगभग दो कम्पनी की संख्या में आकाबेड़ा पहुंची पुलिस टुकड़ी 14 नवम्बर सुबह वापस जा रही थी कॉमरेड जग्गू की टीम से अचानक मुठभेड़ हो गई। जवाबी गोलीबारी करते हुए गुरिल्ला बल पीछे हटे। सीआरपीएफ द्वारा दागे गए मोर्टार शेल (गोला) पहाड़ के ऊपर जग्गू और अन्य गुरिल्लाओं के बीच गिरकर फटा। ये शेल कॉमरेड जग्गू के करीब फटने की वजह से वीर जनयोद्धा वहीं शहीद हो गए। कुछ ही समय में ये खबर माड़ के चारों ओर फैल गई। जनता शोकाकुल हो गई। 15 नवम्बर की सुबह कॉमरेड जग्गू के पार्थिव शरीर को इरकभट्टी जनताना सरकार को सौंप दिया गया। माड़ पहाड़ों में लाल झण्डा फहराने वाले जग्गू के पार्थिव शरीर को लाल झण्डे से ढंका गया। नन्हे-नन्हे बच्चों ने अपने आंखों को आंसुओं से भिगाते हुए मुट्ठियां भींचकर अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रत्येक कंठ से

निकला वाक्य था ..... जग्गू दादा निकू लाल सलाम ..... लाल सलाम। अपने जांबज कमांडर को अन्तिम विदाई देने के लिए चारों दिशाओं से पीएलजीए बलों ने इरकभट्टी गांव की ओर मार्च किया। गांव पूरा गगनभेदी नारों से गूंज उठा। कॉमरेड जग्गू भौतिक रूप से नहीं रहे लेकिन जनवादी सत्ता की रक्षा के लिए, जनताना सरकारों को कायम करने के लिए उनके दिखाये रास्ते में चलने के लिए जनता दृढ़ता के साथ खड़ी है।

कॉमरेड मेहत्तर अमर रहे!

कॉमरेड मेहत्तर, कॉमरेड जग्गू के कदमों से कदम मिलाकर लड़ने वाले योद्धा, अपने प्राण अर्पित करने वाला जांबज मिलिशिया सदस्य थे। झारावाही गांव में कॉमरेड मेहतर का जन्म हुआ था। मां नड़गी बचपन में ही चल बसी। घर में एक बहन और भाई हैं। परिवार की माली हालत बेहद खराब है। बड़ी मुश्किल से गुजारा होता है। पूरा परिवार क्रान्तिकारी कार्यकलापों में शामिल है। कॉमरेड मेहतर बचपन से ही यानी 2001 से बाल संगठन में भर्ती हो गया। पांचवीं तक पढ़े 18 साल के किशोर थे कॉमरेड मेहत्तर।

गांव में कुछ लोग प्रतिक्रान्तिकारी शिविर में चले गए। यह देखकर उसने अपना दिल छोटा नहीं किया बल्कि जिन्दगी में चाहे कितने ही कष्टों का सामन करना क्यों न पड़े क्रान्ति के साथ, जनताना सरकार के साथ रहने का संकल्प लिया। आखिर उसी राह में अपने प्राणों का बलिदान दिया। चुनाव की तारीखें घोषित होने के पहले से ही राका दल सदस्य के तौर पर चारों दिशाओं में पहरेदारी में भागीदारी की। उससे पहले भी गांवों की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नारायणपुर से एक कम्पनी की संख्या में अर्ध सैनिक बल झारावाही गांव के ऊपर हमला करने के लिए आए। उस दिन कॉमरेड मेहतर पहरा दे रहे थे। पुलिस को लेकर आये एसपीओं को मालूम था संतरी कहां है। इसलिए पहले संतरी को निशाना बनाने के लिए पुलिस आगे बढ़ी। पुलिस के कदमों के आवाज को पहचानकर कॉमरेड मेहतर ने अक्रूम बजाकर पीएलजीए बलों और गांव वालों को सतर्क किया। 2006 में सीआरपीएफ के साथ हुई दो मुठभेड़ों में तथा मिलिशिया द्वारा की गई प्रतिरोध-कार्रवाइयों में कॉमरेड मेहत्तर भी सदस्य थे। उसके बाद 2007 में ब्रेहबेड़ा में सीआरपी बलों के ऊपर पीएलजीए बलों द्वारा किए गए एम्बुश में कॉमरेड मेहतर मिलिशिया सदस्य के तौर पर शामिल हुए थे। 2008 में नारायणपुर शहर में दो एसपीओ को मारने की घटना में रेक्की से लेकर हमले तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

14 नवम्बर के दिन नेण्डनार से आ रहे पुलिस बल के ऊपर हमले के लिए तैयार हो रहे पीएलजीए बलों को पहले ही पुलिस ने देख लिया और गोलीबारी शुरू की। गोलीबारी करते हुए पीछे हटते हुए दुश्मन द्वारा दागे गए मोर्टार से घायल हुए मेहत्तर ने 15 नवम्बर सुबह आखरी सांस ली। आकाबेड़ा से उनके गांव झारावाही की ओर ले जाते समय घायल कॉमरेड मेहतर बेहद रक्तस्त्राव, असहनीय दर्द के बावजूद कोई घबराहट के बगैर दृढ़ता के साथ खड़े रहे।

कॉमरेड जग्गू की अंतिम संस्कार करने के बाद 16 नवम्बर सुबह कॉमरेड मेहत्तर की अंतिम संस्कार के लिए एरिया जनताना सरकार, जन संगठन, जनता, पीएलजीए बल झारावाही पहुंचे। 14 नवम्बर को ही बेटे के घायल होने की खबर सुन पिता रैनू बेटे के लिए व्याकुल होकर ढूंढ़ते रहे। पार्थिव शरीर में बदले बेटे को देखकर - "बेटा का पता बताये होते तो बेटे के कदमों से कदम मिलाकर चलने की संकल्प लेते हुए आंख बन्द करने से पहले एक बार देख लेता" कहते हुए आंसू बहाये रैनू दादा मिलिशिया बल के जवानों के लिए ही नहीं जनताना सरकारों के लिए भी आदर्श पिता हैं।

कॉमरेड मेहत्तर की अंतिम यात्रा में शामिल जनता ने प्रतिक्रान्तिकारी ताकतों के खिलाफ संघर्ष में दृढ़ता के साथ खड़े रहने और सैकड़ों हजारों मेहत्तरों को पीएलजीए में भर्ती करने का संकल्प लिया। ★

उत्तर बस्तर के मनाहकाल में पीएलजीए का शानदार हमला!
सीआरपीएफ के तीन जवान मरे और 12 घायल!!

18 फरवरी 2009 को उत्तर बस्तर क्षेत्र के कोयलीबेड़ा थानांतर्गत ग्राम मनाहकाल के पास पीएलजीए ने आतंकी सीआरपीएफ बलों पर जोरदार हमला कर 3 जवानों को मौत के घाट उतार दिया और 9 को घायल कर दिया। यह हमला दोपहर के ढाई बजे शुरू हुआ था जो करीब दो घण्टे तक चला। सीआरपीएफ और जिला पुलिस बलों की कुल 100 से ज्यादा संख्या में आई भाड़े की फौजों पर पीएलजीए के लाल योद्धाओं ने जबर्दस्त प्रहार किया और इसमें हमारी तरफ एक भी नुकसान नहीं हुआ। किसी को कोई खरोंच तक नहीं आया। हालांकि पुलिस व अर्द्ध-सैनिक बलों के गिरते मनोबल को टिकाए रखने की नाकाम कोशिश करते हुए कांकेर एसपी अजय यादव ने झूठा दावा किया कि इस हमले में 10 नक्सली भी मारे गए।

दरअसल विधानसभा चुनावों के समय से लेकर अब तक उत्तर बस्तर क्षेत्र में पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों ने जनता पर कई हमले किए। कई गांवों से दर्जनों लोगों को पुलिस वालों ने गिरफ्तार कर झूठे केसों में फंसाकर जेल भेज दिया। अक्टूबर 2008 में कुमुडगुण्डा गांव में जनता द्वारा संचालित एक स्कूल पर हमला कर नन्हे बच्चों को आतंकित किया। चुनाव के दिन 14 नवम्बर 2008 को कोरेनार में एक निर्दोष आदिवासी करमाराम को और 6 दिसम्बर 2008 को ग्राम हुलघाट में पिता-पुत्री फत्तीराम और सगोन बाई की झूठी मुठभेड़ों में हत्याएं कीं। दक्षिण बस्तर के ग्राम सिंगारम में पिछले माह की 8 तारीख को हुई 18 आदिवासियों की निर्मम हत्या की घटना..... इन सभी जुल्मों और हत्याओं के कारण ही जन सैनिकों ने इस हमले को अंजाम दिया। ★

कॉमरेड पाल्टू धुर्वा को क्रान्तिकारी जोहार!

कॉमरेड पाल्टू का जन्म माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया कोड़तामर्का गांव के एक गरीब परिवार में हुआ था। माता-पिता ने प्यार से उनका नाम गुड़सा रखा था। लेकिन गांव में सभी उप नाम पाल्टू कहकर पुकारते थे। इस प्रकार उनका नाम पाल्टू ही पड़ा। कॉमरेड पाल्टू बचपन से हंसमुख और चंचल स्वभाव के थे।

जन संगठन में - कॉमरेड पाल्टू बड़े होते ही पार्टी के सम्पर्क में आये। पहले तो उन्होने सीएनएम टीम में सदस्य रहकर काम किया। सीएनएम का नाम सुनते ही बहुत उत्साहित होते थे। क्रान्तिकारी गीतों के माध्यम से क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रचार करते थे। आदिवासी समाज में व्याप्त रूढ़ीवादी रिवाजों के खिलाफ संघर्ष किया। सीएनएम में रहकर क्रान्तिकारी गीतों, नृत्य और नाटकों में आगे रहकर भाग लिया करते थे। इसके साथ ही 2002 में डीएकेएमएस अध्यक्ष चुने गए। उस दौरान गांव में आने वाली सभी समस्याओं को गहराई से जांच करके उनका हल करते थे। गांव में खेती विकास करने के लिए किए गए प्रयासों में कॉमरेड पाल्टू की महत्वपूर्ण भूमिका है। पुराने रिवाजों की वजह से खेती विकास में आने वाली बाधाओं को जनता को समझाकर उनमें बदलाव लाने की कोशिश किया करते थे। आदिवासी रिवाजों में महिलाओं को दबाने के लिए बनाये गए नियमों के खिलाफ महिलाओं के पक्ष में दृढ़तापूर्वक खड़े रहकर उनका विरोध करते थे। महिलाओं के विषय में उनके विकास के लिए, उन्हें आगे लाने के लिए प्रयास करते थे। जनता के साथ जल्द ही घुलमिल जाते थे। परिवार में आने वाली छोटी-छोटी समस्याओं को उनके परिवार में बैठकर समाधान करते थे। आदिवासी परम्परा के अनुसार 2001 में उनकी शादी हुई थी। एक बच्चा भी है।

जनताना सरकार में - 2004 में उनके गांव में बनी पंचायत जनताना सरकार के अध्यक्ष चुने गए। सरकार का नया अनुभव होने के बावजूद जनताना सरकार कामकाज में जुट गए। जनताना सरकार को चलाने में कितनः ही समस्याएं आने के बावजूद उनका हल करते हुए सरकार के कामकाज को सुचारू रूप से चलाने की कोशिश करते थे। कभी स्कूल का मुंह भी नहीं देखा लेकिन सरकार अध्यक्ष बनने के बाद पढ़ाई के महत्व और जरूरत को नजर में रखकर लिखना-पढ़ना भी सीखा। खुद सीखने के बाद गांव में मिलिशिया कॉमरेडों को पत्रिकायें पढ़कर बताना, उन्हें पढ़ाई के महत्व को समझाकर सिखाने की कोशिश की। ऐसे ही कई मिलिशिया सदस्य पढ़ाई सीख गए। युवक-युवतियों को नशा से होने वाले नुकसानों को समझाकर शराब, गोरगा पीना छुड़ाये। वे सरकार अध्यक्ष रहते समय गांव में रोज रात को गोटुल में पढ़ाई होती थी। इस तरह कामरेड पाल्टू सभी कामों को दिलोजान से करते थे। उनको दी गई हर जिम्मेदारी को चाहे कितनी ही मुश्किल क्यों न हो पूरा करने की कोशिश करते थे।

पार्टी में - कॉमरेड पाल्टू को पार्टी सदस्यता गांव में रहते हुए 2002 में दी गई। बढ़ते आन्दोलन की जरूरत के मुताबिक पार्टी ने उन्हें पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनने का आह्वान दिया। पार्टी आह्वान को स्वीकार करते हुए 2007 में कॉमरेड पाल्टू ने जन मिलिशिया दल कमांडर की जिम्मेवारी सम्भाली। वे अपने सदस्यों के साथ दोस्त की तरह व्यवहार करते थे। उनके दल में किसी को पढ़ाई नहीं आने पर भी उनको जितना आता था उसी से उन्हें पढ़ाते और समझाया करते थे। अपने सीधे-सादे मिलनसार स्वभाव से सबका दिल जीत लेते थे। उनके विकासक्रम को देखते हुए 2007 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य चुना गया।

फिर जन मिलिशिया दल को पार्टी कामकाज की जरूरत के मुताबिक महत्वपूर्ण कार्यभार सौंपा गया। वहां रहते हुए चाहे रात हो या दिन, चाहे किताना ही दूर क्यों न हो, चाहे कितना ही बोझ क्यों न हो जो भी काम सौंपा जाता समय पर पूरा करते थे। जो भी जिम्मेदारी दी जाती थी कभी 'ये मुझसे नहीं होगा' या 'इतना बोझ नहीं उठा सकता' उनके मुंह से कभी नहीं निकला। जितना उनसे होता उतना ही कर दिखाने का जज्बा उनमें था।

पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में कॉमरेड पाल्टू विकास की ओर अग्रसर थे। लेकिन 2008 फरवरी महीने में कॉमरेड पाल्टू को हल्का सा बुखार आया और शरीर में दर्द था। लेकिन पार्टी काम को देखते हुए अपनी जिम्मेदारी को निभाते हुए बीमारी की शिकायत तक नहीं आने दी। धीरे-धीरे शरीर कमजोर होता गया। उतनी कमजोरी के बावजूद कभी बिस्तर नहीं पकड़ा न ही इसकी शिकायत की और अपने साथियों को इसका अहसास तक नहीं होने दिया। जब शरीर पूरा जवाब दे दिया तब बिस्तर पकड़ा। तब मालूम हुआ कि उन्हें लिवर इन्फेक्शन हुआ था। तब तक बहुत देर हो चुकी थी, लिवर इन्फेक्शन ने गंभीर रूप ले लिया था। उन्हें बचाने की बहुत कोशिश की गई लेकिन 12 फरवरी 2008 की सुबह के 8.20 बजे आखिरी सांस ली। उनकी शहादत से पार्टी ने एक उभरते हुए सक्षम कमांडर को खो दिया।

आज इस लुटेरी व्यवस्था में इलाज के बिना करोडों लोग बेमौत मारे जा रहे हैं। इस सड़ी-गली बीमार व्यवस्था को सुधारने के लिए कॉमरेड पाल्टू ने हथियार उठाया था। सभी को सही इलाज, भरपेट भोजन, रहने को घर मिलने के लिए जनता की जनवादी सत्ता को कायम करने का बीड़ा उठाया था कॉमरेड पाल्टू ने। आइए, उनके आदर्शों को जन-जन तक पहुंचायें और उनके सपनों को साकार करने की शपथ लें।✶

कॉमरेड बली मड़ावी और बोटी पोयाम अमर रहें।

नारायणपुर जिले के कोड़ेनार के पास 16 दिसम्बर 2008 को सुबह सीआरपी, जिला पुलिस, एसपीओ ने कॉमरेड बली मड़ावी और बोटी मड़ावी की निर्ममतापूर्वक हत्या कर दी।

आज सरकार यहां चल रहे क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए लगातार माड़ पहाड़ों के ऊपर हमले करने की कोशिश कर रही है। नारायणपुर, कुरुसनार, कुकड़ाझोर पुलिस कैम्पों को केन्द्र बनाकर पुलिस द्वारा रात के अंधेरे में गांवों में हमले करके युवकों, जन संगठनों के कार्यकर्ताओं, आम जनता से मारपीट करना, गिरफ्तार करना, फर्जी मुठभेड़ों में हत्या करना आदि आम बात हो गई है। पिछले कुछ महीनों से ये हमले बढ़ रहे हैं। जैसे दिसम्बर महीने में पुलिस ने पांच बार पहाड़ों के ऊपर के गांवों पर हमला किया, जिससे गांवों के युवा पुरुष घर छोड़कर जंगलों में छिपेने को मजबूर हो रहे हैं।

कॉमरेड बली

कोडेनार कुरूसनार कैम्प से 3-4 किलोमीटर की दूरी पर होने की वजह से यह गांव लगातार पुलिस हमले का शिकार होता रहा है। इसलिए वहां के पुरुष रात होने से पहले खाना लेकर जंगल में सोने के लिए चले जाते हैं। इसी तरह 15 दिसम्बर शाम को गांव वाले सोने के लिए जंगल में चले गए थे। मुखबिर की सूचना पर कुरूसनार कैम्प से जिला पुलिस और सीआरपीएफ, एसपीओ के सैकड़ों सशस्त्र बलों ने उनके आने की राह पर घात लगाकर हमला किया। जिसमें कॉमरेड बली और कॉमरेड बोटी घायल होकर गिर पड़े। बाद में पुलिस ने उन्हें पत्थरों से कुचलकर निर्ममतापूर्ण हत्या करके नक्सलियों और पुलिस के बीच मुठभेड़ की झूठी कहानी गढ़ दी। आइए, इनमें से शहीद बली मड़ावी की जीवनी पर नजर डालें।

बहादुर मिलिशिया कमाण्डर कॉमरेड बली

26 वर्षीय कॉमरेड बली का जन्म जगदलपुर के पास कोड़ेबेड़ा गांव में हुआ था। वहां उनके परिवार की माली हालत बेहद खराब थी। जमीन थी लेकिन बहुत कम। उससे पूरे परिवार का गुजारा नहीं हो पा रहा था। इसलिए पिता बोंजो और माता ..... अपने बच्चों को लेकर कोडेनार में आकर बस गए। बली यहीं क्रान्तिकारी गतिविधियों के बीच पले-बढ़े। माता-पिता ने उनकी कम उम्र में विवाह कर दिया था। अब एक बच्ची है।

जन्म से ही गरीबी से जुझ रहे बली बड़े होकर डीएकेएमएस की सदस्यता लेकर क्रान्तिकारी जिन्दगी की शुरूआत की। बाद में गांव में डीएकेएमएस के अध्यक्ष चुने गए। मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी भी खुद सम्भाल ली। बाद में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई थी।

कॉमरेड बली ने मिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। कोडेनार कुरुसनार पुलिस कैम्प के करीब होने की वजह से इस गांव पर पुलिस जब तब हमले करती आ रही है। इन हमलों से डरकर कुछ परिवार वहां से अपने पुराने गांवों या रिश्तेदारों के पास चले गए। कॉमरेड बली के ऊपर भी परिवार वाले वहां से जाने के लिए दबाव डाल रहे थे। इन सबके बावजूद कॉमरेड बली दृढ़ता के साथ खड़े रहे और वहां से जाने वालों का धैर्य बंधाकर उन्हें जाने से रोका। जनता की रक्षा के लिए रात-दिन एक करके पहरा देकर दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रखी। हर खतरे को भांपकर पहले ही आसपास के गांवों को सतर्क कर दिया करते थे। इस तरह जनता को दुश्मन के हमलों से रक्षा करते थे। कुरूसनार के आसपास पीएलजीए द्वारा किए गए कई हमलों में कॉमरेड बली शामिल रहे हैं।

2006 मई में कुरूसनार कैम्प के ऊपर पीएलजीए द्वारा किए गए हमले में कॉमरेड बली ने उत्साह के साथ भाग लिया था। 2007 को कुरूसनार नारायणपुर रोड में पीएलजीए द्वारा किए गए एम्बुश में कॉमरेड बली शामिल थे। 2008 में कुरूसनार के पास पीएलजीए द्वारा किए गए एम्बुश में जिसमें चार पुलिस वाले मारे गए थे, कॉमरेड बली भी थे। 2008 में नारायणपुर में दो एसपीओ को खत्म करने वाली एक्शन टीम में कॉमरेड बली मिलिशिया सदस्य के रूप में शामिल रहे। इतना ही नहीं, वे खुद भी अपने मिलिशिया बल को साथ लेकर कुरूसनार कैम्प के पुलिस पर छिटफुट घटनायें करके उन्हें परेशान करते थे। नवम्बर चुनाव के समय सिर्फ दो मिलिशिया सदस्यों को लेकर अकेले प्रतिरोध के लिए दिन रात पहरा लगाकर एम्बुश के लिए तैयार थे। इससे उनकी बहादुरी का अंदाजा लगाया जा सकता है। यह जानकारी होने के बावजूद कि चुनाव के लिए सैकड़ों की संख्या में पूरी तैयारी के साथ फोर्स आ रही है, दो सदस्यों को लेकर घात लगाना उनकी वीरता और निर्भीकता का परिचायक है। बली का नाम सुनते ही कुरूसनार पुलिस कांपती थी। इसलिए पुलिस ने बली को पकड़ने के लिए कई बार नाकाम हमले किए। हर हमले में बली पुलिस को चकमा देकर बच निकले थे। जैसे 2006 में पुलिस कोडेनार के ऊपर हमला करके कॉमरेड सोमलू को गिरफ्तार कर ले गई और झूठी मुठभेड़ में हत्या कर दी। उस समय बली पुलिस के गिरफ्त से चकमा देकर भाग निकले थे। 2007 में हल जोत रहे बली के ऊपर पुलिस ने फायरिंग की, जिसमें बली सुरक्षित निकलने में सफल रहे। 2008 में बली को उनके घर में पुलिस ने घेर लिया। उस घेरे को तोड़ते हुए सुरक्षित बाहर निकल गए। बाद में पुलिस ने उनके घर और फसलों को जला दिया। इस तरह बली के ऊपर पुलिस ने दर्जनों बार नाकाम हमले किए थे। उनकी शहादत के कुछ महीने पहले पुलिस ने कुरूसनार गांव वालों को पैसों का लालच दिखाकर बली को मरवाने की कोशिश की, लेकिन गांव वालों ने इंकार कर दिया और पहले ही उन्हें सतर्क कर दिया। बाद में गांव के ही एक व्यक्ति को मुखबिर बनाकर उसकी सूचना के आधार पर उनके आने के रास्ते पर घात लगाकर हमला करके कॉमरेड बली व बोटी की हत्या कर दी। ★

कामरेड मुकेश (रानू वड्डे) को लाल सलाम

कामरेड मुकेश 30 मई 2006 को शहीद हुए। कसनसुर एरिया के मोवेली-देवदा के बीच बूबीट्रैप रख रहे थे, तब बूबीट्रैप में अचानक विस्फोट होने से हमारे प्रिय कामरेड मुकेश शहीद हो गए।

कामरेड मुकेश एटापल्ली तहसील के आसावंडी गांव के एक गरीब परिवार में जन्मे थे। कामरेड मुकेश का नाम घर में रानू था। माता-पिता की तीन संतानों में सबसे छोटे बेटे थे, जिस कारण उनकी मां उन्हें बहुत प्यार करती थीं। कामरेड मुकेश बहुत छोटे थे तभी उनके पिताजी का देहांत हो गया था। तब उनकी मां ने दूसरी शादी कर ली। कामरेड रानू बहुत मुश्किलों का सामने करते बड़े हुए। उनकी मां ने उन्हें कोटमी विनोबा आश्रम स्कूल में भर्ती करवा दिया जहां उन्होंने 7वीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी की। घर की बहुत गरीब परिस्थिति होने के चलते वे आगे पढ़ाई जारी नहीं रख पाये। स्कूल में छुट्टी होने से घर में आकर उनकी मां और भाई के साथ खेती काम में हाथ बंटाते थे।। खेती काम के साथ-साथ उनकी मां के साथ खाना पकाने, धान कूटने, पानी लाने, झाड़ू-पोछा लगाने तक के सभी कामों में भाग लेते थे। वे 1997 में डीएकेएमएस के सदस्य बने थे। और सक्रिय रूप से सांगठनिक काम कर रहे थे। तभी पुलिस ने कामरेड मुकेश को गिरफ्तार कर चंद्रपुर जिला जेल में 6 महीने रख कर यातनाएं दीं। कामरेड मुकेश को कितनी ही यातनाएं दी गईं लेकिन क्रांतिकारी विचारों से फौलाद बने कामरेड मुकेश से पार्टी का एक भी भेद नहीं खुलवा पाए। जेल से रिहा हुए तो फिर सांगठनिक कामों में उसी उत्साह के साथ जुट गए। दूसरी बार फिर पुलिस वाले जब उन्हें गिरफ्तार कर ले जा रहे थे तो उन्होंने थाने के पास पहुंचने के बाद पुलिस को ऐसा चकमा दिया कि वो उसे फिर कभी नहीं पकड़ पाए। वहां से भागने के एक महीना बाद दस्ते से मुलाकात हुई। उसी समय में उनके साथ वाले कुछ कामरेड पुलिस के सामने आत्मसर्म्पण कर गए थे। लेकिन कामरेड मुकेश उससे बिना हताश और निराश हुए पार्टी के साथ दृढ़ता से डटे रहे। उन्हें पार्टी ने जो भी जिम्मेदारी दी उसे बखूबी निभाया। जुलाई 2001 में कामरेड मुकेश कसनसुर एलओएस में सदस्य के रूप में भर्ती हुए। कामरेड मुकेश खाना बनाने, पानी लाने व अन्य काम करने में दस्ते में भी घर की तरह आगे रहते थे। सभी साथियों के साथ उनका व्यवहार बहुत आत्मीय रहता था। पार्टी कमेटी ने उनके काम करने के उत्साह और लगन को देख 6 महीनों के अंदर ही पार्टी की उम्मीदवार सदस्यता प्रदान की। 2002 की शुरूआत में वे पार्टी सदस्य बने। कामरेड मुकेश जनता के साथ पूरी तरह घुल मिलकर रहते थे। 2002 में पार्टी सदस्य बनकर उन्होंने हर विषय को सीखने की हर संभव कोशिश की। 2003 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी प्रदान की गई।

एक सुदृढ़ लाल सैनिक के रूप में...

सैनिक मामलों में वे बहुत मजबूती से काम करते थे। सैनिक कार्यवाहियों की कई घटनाओं में उन्होंने भाग लिया। 2004 विधानसभा चुनाव में दो कमाण्डो मारे गये थे। इस घटना में कामरेड मुकेश शामिल थे। कुल मिलाकर 9 घटनाओं में कामरेड मुकेश शामिल रहे। हरेक मुठभेड़ में, एम्बुश में वे पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। टीम की जिम्मेदारी लेकर उसे अच्छे से कमांड करते थे। मानेवारा मुठभेड़ में अपनी एक टीम के साथ पुलिस के चक्रव्यूह को तोड़ते हुए सुरक्षित निकल आए थे। जप्पी आपर्चुनिटी एम्बुश में 5 पुलिस वालों को मार गिराया गया। फुलबोडी व पुसटोला के बीच में माइनप्रूफ गाड़ी को विस्फोट करके 17 हत्यारे कमाण्डों को घायल करने की कार्रवाई में कॉमरेड मुकेश शमिल रहे। दुश्मन को बड़े स्तर पर सफाया करने, नुकसान पहुंचाने के लिए बूबीट्रैप तकनीक सीखने को उत्सुक थे। उन्होंने इस तकनीक को अच्छी तरह सीखा भी था। इसलिए जब भी बूबीट्रैप रखने की बात होती तो कामरेड मुकेश का नाम ही पहले आता था।

दुर्भाग्य से कामरेड मुकेश बूबीट्रैप के एक हादसे में शहीद हो गए। इससे पीएलजीए ने एक बहुत अच्छे और योग्य कामरेड को खो दिया है। इस घटना से हमें यह सबक जरूर लेना चाहिए कि तकनीक और सावधानियों पर पूरी पकड़ हासिल होने के बावजूद भी ऐसे कामों में जरा भी जल्दबाजी करने से भारी कीमत चुकानी पड़ती है। ऐसी ही गलती हमारे प्रिय कॉमरेड मुकेश से हुई थी। वे घर में अपनी पत्नी, बच्चों, मां, भाई को छोड़कर जनता के लिए अपनी जान कुर्बान कर गए। शहादत के बाद कामरेड मुकेश को गडचिरोली की जनता ने, उनके सपनों को आगे ले जाने की कसम के साथ उनका अंतिम संस्कार क्रांतिकारी सम्मान के साथ किया।

कामरेड सुक्कू वड़दा को क्रांतिकारी जोहार!

कॉमरेड सुक्कू माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया के कोडेलेर गांव के एक गरीब परिवार में जन्मे थे। यह गांव क्रान्तिकारी आन्दोलन के कई मजबूत गढ़ों में से एक है।

गांव में पहले डीएकेएमएस संगठन में रहकर काम किया। उनके कामकाज को देखकर नवम्बर 2007 को डीएकेएमएस की कमेटी में चुन लिया गया। कमेटी में रहकर उनको सौंपी गई जिम्मेदारी को बखूबी निभाते रहे। चाहे वह संगठन मींटिग करना हो या जनता की आमसभा सभी समझने लायक समझाने का प्रयास करते थे। जनयुद्ध के लिए जनता को गोलबंद करते थे।

साथ ही मिलिशिया को भी अनुशासन सिखाते हुए जनयुद्ध में आने वाले कष्टों को दृढ़ता के साथ सामना करने धैर्य बंधाते थे। वैसे ही अपनी गलतियों को कमेटी में बेहिचक आत्मालोचना करते थे। और अपनी कमजोरियों से बाहर आने की कोशिश करते थे।

आज की अत्याधुनिक समाज में विज्ञान इतना विकास होने के बावजूद अन्धविश्वास मौजूद हैं। वैसे माड़ जैसे पिछड़ा इलाके में अंधविश्वास ज्यादा ही हैं। अन्धविश्वास के चलते यहां कई प्रकार से कृषि कामों में "पोलो" का नाम देकर बाधायें खड़ी की जाती हैं। उनको न मानने वालों के ऊपर दबाव डाला जाता है। इस तरह देखा जाय तो कॉमरेड सुक्कू गांव में पुजारी का काम भी करते थे। पुजारी होकर भी आन्दोलन के प्रभाव से प्रभावित होकर ऐसे अन्धविश्वासों के खिलाफ जनता को जागृत किया। ऐसा करने पर गांव के रूढ़ीवादी बुजुर्ग उनके ऊपर दबाव डालकर उन्हें अपने पक्ष में करने की कोशिश करते थे। उनके दबाव के बावजूद जनता के पक्ष में खड़े रहे। पुजारियों और रूढ़ीवादियों बुजुर्गों के द्वारा फैलाये जा रहे अन्धविश्वास को वे जनता को समझाते थे। उनके ढोंग का पर्दाफाश करते थे। इस तरह जनता में वे बेहद लोकप्रिय हो गए थे।

वह जून 2008 को मलेरिया से शहीद हो गए। उनके आदर्शों को जनता तक पहुंचायेंगे। उनके अरमानों को पूरा करने की शपथ लेंगे।

बहादुर योद्धा कामरेड मनोज को लाल सलाम!

7 जुलाई 2008 को सीताटोला गांव के जोड़ामेट्टा पहाड़ पर हमारे साथियों ने पड़ाव डाला हुआ था। पुलिस के एक मुखबिर ने उसकी सूचना धनोरा पुलिस थाने में दे दी। तब सी-60 के हत्यारे कमांडो बलों ने 17 गाड़ियों में 200 की संख्या में आकर पूरे डेरे को चारों ओर से घेर लिया। अचानक हुए इस हमले में कामरेड मनोज के पांव में गोली लगी जिससे वह वहीं पर गिर पड़ा। घायल होने के बाद भी कामरेड मनोज बंदूक में गोली रहने तक आखरी दम तक लड़ते रहे। जिसमें दो पुलिस वाले गंभीर रूप से घायल हुए। कामरेड मनोज ने पुलिस पर गोलियां चलाते हुए ही जंगे मैदान में वीरगति प्राप्त की और जनता के लिए अपने प्राणों को न्योछावर कर दिया।

कामरेड मनोज उर्फ हरसिंग तुलावी पिछले 4 साल से पार्टी के लिए काम कर रहे थे। उनका जन्म गांव बोरकन्हार, तहसील मानपुर, जिला राजनांदगांव में एक गरीब परिवार में हुआ था। गांव में मात्र डेढ़ एकड़ जमीन उनके पास होने के कारण उनके परिवार को महाराष्ट्र के गडचिरोली जिला के धनोरा तहसील के गांव बन्दहूर में पलायन कर आना पड़ा। उस समय कामरेड मनोज के दिमाग में बहुत बेचैनी थी कि इस समाज में यह घोर गरीबी क्यों है जिस कारण उन्हें अपने ही गांव से पलायन करने पर मजबूर होना पड़ता है। कामरेड मनोज के मना करने पर भी उनके माता-पिता ने उनकी शादी छोटी उम्र में ही कर दी। कामरेड मनोज बहुत महेनती और परिश्रमी कामरेड थे। उन्होंने अपने परिवार के लिए जंगल काट कर जमीन बनाई और उसे खेती योग्य बनाया। गांव में दस्ता के जाने से मनोज बहुत खुश होते थे और जो भी काम दिया जाता उसे लगन से करते थे।

कामरेड मनोज को टिप्रागढ़ एरिया कमेटी ने गांव में डीएकेएमएस की जिम्मेदारी सौंपी तो उन्होंने कड़ी महेनत से काम कर पूरे गांव के किसान-मजदूरों को संगठित किया। जनमिलिशिया में भर्ती होने के लिए कामरेड मनोज ने खुद पार्टी के सामने इच्छा जाहिर की, तब उन्हें जनमिलिशिया के सदस्य के रूप रखने का पार्टी ने फैसला किया। पुलिस की नजर जब उन पर पड़ी और उसकी तलाश में छापेमारी की जाने लगी तो मनोज की जिद्द रही कि 'कभी सरेंडर नहीं होऊंगा, कभी पुलिस की पकड़ में नहीं आऊंगा, चाहे जान चली जाए'। उसके बाद कामरेड मनोज टिप्रागढ़ दस्ते के पूर्णकालिक सदस्य बन गए।

12 सितंबर 2007 को उनके गांव बंदहूर में पुलिस के साथ दस्ते की मुठभेड़ हुई। मुठभेड़ के बाद पुलिस दमनचक्र चलाते हुए सभी गांव वालों को थाने में ले गई और यातनाएं दीं। इसमें कामरेड मनोज के पिताजी भी थे जिन्हें पुलिस वालों ने पीट-पीट कर मनोज को सरेंडर करवाने का दबाव डाला। उनके पिताजी को मारने की धमकी मिलती थी। लेकिन कामरेड मनोज ने कभी भी हिम्मत नहीं हारी। अपने माता-पिता, भाई-बहनों को जनयुद्ध के बारे में समझाया करते थे। वे कहते थे कि 'मैं जनता के लिए, आपके लिए लड़ रहा हूं। हमारी पार्टी जनता की पार्टी है। मेरी फिक्र मत करना। मैं जिंदा नहीं आऊंगा, मेरी लाश ही आएगी। मैं जनता के दिलों में रहूंगा'। ऐसे थे हमारे बहादुर कामरेड मनोज।

कामरेड मनोज ने पार्टी सदस्य की जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी, बहादुरी व दृढ़ संकल्प के साथ निभाई। उन्हें चातगांव एरिया में काम के लिए पार्टी ने बदली किया तो वहां भी उसी शिद्दत से काम किया जैसे वे हमेशा करते थे। बाद में टिप्रागढ़ एरिया कमेटी ने उन्हें एरिया विस्तार के लिए बिल्कुल नए इलाके में भेजा। धनोरा एरिया उसके लिए नया था, जंगलों का, रास्तों का ज्यादा पता नहीं था। नए एरिया की जनता के साथ घुलने मिलने व उनका विश्वास जीतने में कामरेड मनोज ने ज्यादा समय नहीं लगाया। जनता को उन्होंने जनयुद्ध की राजनीति से परिचत करवाया। और जनता के प्यारे बने।

जून 2008 में हुए एरिया पलेनम में कामरेड मनोज टिप्रागढ़ एरिया कमेटी के सदस्य के रूप में चुने गए। कामरेड मनोज को नए कैडर को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षक की व धनोरा एलओएस के डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। अपनी नई जिम्मेवारी के साथ, नए एरिया में गए कामरेड मनोज को तीन दिन भी नहीं हुए थे कि पुलिस ने इतनी बड़ी संख्या में आकर हमला कर दिया। 7 जुलाई 2008 को गडचिरोली की जनता ने अपने बहादुर बेटे, एक उभरते हुए नेता कामरेड मनोज को खो दिया। कामरेड मनोज सदा जनता के दिलों में बसे रहेंगे। जनता उनकी आशाओं को अवश्य ही आए बढ़ाएगी।

शहीद तानसिंग चव्हान अमर रहें!

कामरेड तानसिंह को 7 जुलाई 2008 को ही तब पकड़ लिया जब वे हमारे डेरा पर हमला करने आ रहे थे। रास्ते में से पकड़ कर, और हमला कर घटना स्थल पर ही मनोज के साथ-साथ उनको भी ठंडे दिमाग से गोली मार हत्या कर दी।

कामरेड तानसिंह महर जाति (दलित) के एक गरीब परिवार में गांव सीताटोला में जन्म लिए थे। उनके परिवार में कुल छह सदस्य हैं दो उनके बुर्जुग मां-बाप, और उनकी पत्नी और दो छोटे बेटे। पांच एकड़ जमीन के साथ उनका परिवार अपना जीवन-यापन कर रहा था। साथ ही जमीन से गुजारा न होता देख वे मिस्त्री का काम भी सीख लिए थे। कामरेड तानसिंह अपने परिवार को बहुत मेहनत से पाल पोस रहे थे।

जब उस इलाके में पार्टी का विस्तार हुआ तो उनसे अच्छा परिचय हुआ। और वे क्रांतिकारी राजनीति के संपर्क में आए। वह दस्ते के आने की खबर सुनकर जल्द ही भागे आते थे। पार्टी उन पर पूरा विश्वास करती थी।

कामरेड तानसिंग की लाश को भी पुलिस वालों ने तीन दिनों तक छुपाकर रखा। जब उनकी पत्नी ने लोगों के साथ जाकर विरोध किया तो उनकी लाश मिली।

कामरेड तानसिंग पार्टी के सच्चे समर्थक थे। पार्टी उनकी शहादत को सिर झुकाकर अभिवादन करती है। और उनके शोकग्रस्त परिजनों, रिश्ते-नातेदारों के प्रति हार्दिक संवेदनाएं प्रकट करती है। शहीद कामरेड तानसिंह चव्हान के सपनों को आगे ले जाने की कसम लेती है।

चिपुरभट्टी के प्यारे बेटे कामरेड तेलम सुधरू को जोहार!

दक्षिण बस्तर डिवीजन, बीजापुर जिला, भोपालपटनम तहसील, बासागुड़ा इलाके के गांव चिपुरभट्टी में एक किसान परिवार में कामरेड तेलम सुधरू का जन्म हुआ था। वे 22 साल के नौजवान थे। जल्दी ही उनकी शादी हो गई थी। वे एक बच्चे के पिता बने। कामरेड सुधरू बचपन से ही पार्टी के कामों में उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे। ग्राम रक्षा दल के सदस्य कामरेड सुधरू एक उत्साही कामरेड थे। उनके माता-पिता बेहद गरीब होने के चलते उनका पालन-पोषण बहुत मुश्किल से हुआ। गरीब आदिवासी समाज में जन्मे कामरेड सुधरू अपनी आखिरी सांस तक लड़ते हुए शहीद हो गए।

कामरेड सुधरू के गांव से 5 किलोमीटर की दूरी पर सलवा जुडूम कैंप व पुलिस थाना हैं। दुश्मन ने उनके गांव पर दर्जनों बार हमला किया। गांव की जनता को मारने-पीटने के साथ-साथ कई लोगों को झूठे केस लगाकर जेलों में ठूंस रखा है। इन सबके खिलाफ सुधरू के दिमाग में तीव्र वर्ग घृणा पैदा हुई। जनता के ऊपर दमन आने से, सलवा जुडूम के दर्जनों हमलों, घर-बार लूट के ले जाने से भी जनता को कामरेड तेलम सुधरू ने बिखरने नहीं दिया, उनको गांव में ही एकजुट रखा। गांव वालों को जुडूम में न शामिल होने के लिए चेतना बढ़ाई। जनता को कामरेड सुधरू हिम्मत देते थे। गश्त पर आने वाले अर्ध सैनिक बलों पर तीर-धनुषों से हमला बोलने वाले जन मिलिशिया के सदस्यों में से वो भी एक थे। जन मिलिशिया के सदस्यों के साथ ऐम्बुश में जाने में, गांव में पहरेदारी करने में वे सदा तैयार रहते थे। कामरेड सुधरू ने पहले गांव में जनताना सरकार की, फिर जन मिलिशिया सदस्य की और बाद में जीआरडी की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। जन मिलिशिया में वे सब साथियों से मिलजुलकर रहते थे। वे पार्टी का और अपने घर का काम दोनों ही ध्यान और लगन से करते थे।

16 मई 2008 को अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करने के दौरान दुर्घटनावश उनका देहांत हो गया। उन्हें सही इलाज नहीं मिल पाया था। हम कामरेड सुधरू के आदर्श, अनुभव व हिम्मत को अपनाते हुए, उनके सपनों को मंजिल तक पहुंचाएंगे।

परलाम गांव की प्यारी बेटी मिड़ियम आयते को लाल सलाम!

दक्षिण बस्तर डिवीजन, जिला दंतेवाड़ा के जेगरगुण्डा इलाके के परलाम गांव के एक आदिवासी गरीब किसान परिवार में मिड़ियम आयते का जन्म हुआ था। 18 वर्षीय कामरेड मिड़ियम आयते अपनी छोटी उम्र में ही शहीद हो गईं।

कामरेड आयते बचपन से ही क्रांतिकारी बाल संगठन की सदस्या बनीं। जैसे-जैसे वे बड़ी होती गईं, वैसे-वैसे क्रांतिकारी राजनीति को समझने लगीं। गांव में जन संगठन के कामों में सदा आगे रहने लगीं। गांव में दस्ते के जाने से वे उनके साथ घुल मिलकर रहती। आहिस्ता-आहिस्ता उनके दिल में दस्ते की सदस्या बनने की भावना परवान चढ़ने लगी। उन्होंने यह भावना अपने मां-बाप के सामने रखी। लेकिन कामरेड आयते अपने मां-बाप की इकलौती संतान थीं, इसलिए उनके मां-बाप ने इसकी इजाजत हरगिज नहीं दी। लेकिन कामरेड आयते पर तो क्रांति की धुन सवार थी। जब पंचायत स्तर पर गांव में जन मिलिशिया पलटन का गठन हुआ तो वह उसकी सदस्या बनीं। पलटन में कामरेड आयते सभी साथियों की चहेती थीं। सामूहिक कामकाज में जनता के साथ उत्साह से भाग लेती थीं। वे दृढ़ अनुशासन वाली कामरेड थीं। कामरेड आयते पढ़ाई, राजनीतिक-सैनिक ज्ञान सीखने में काफी दिलचस्पी लेती थीं।

उनके गांव परलाम पर दर्जनों हमले दुश्मन ने किये, सारी संपत्ति को लूट कर ले गए। अपने गांव को कई बार उजड़ते उन्होंने अपनी आंखों से देखा था। और अपने को वर्ग नफरत से भर लिया था।

कामरेड आयते जन मिलिशिया पलटन के ए सेक्शन की पाइलट थीं। जब वह आगे रहती थीं तो किसी को भी रास्ता भटकने की चिंता नहीं होती थी। एक बार जहां से गुजरती थीं, उस रास्ते को अपने मन-मस्तष्कि पर छपवा लेती थीं।

इसी इलाके में उनकी शहादत से एक महीना पहले अरनपुर-जेगरगुंडा रोड पर प्रेशर बम की चपेट आकर थानेदार हमेंत मंडावी घायल हुआ था, यह कारनामा भी उन्हीं की पलटन ने किया था। और उसमें कामरेड आयते की महत्वपूर्ण भूमिका थी। ऐसे ही एक अन्य प्रयास में जन मिलिशिया कामरेड जन

दुश्मनों के लिए रोड पर बम लगाने जा रहे थे। लेकिन पुलिस वहां पर पहले से ही घात लगाए बैठी थी। जैसे ही उन्हें आयते दिखाई दी तो उसने गोलियों की बौछार कर दी। अचानक हुई गोलीबारी से कामरेड आयते को वहां से निकलने का समय नहीं मिला। उस समय कामरेड आयते ने सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बाकी कामरेडों को सुरिक्षत वापस लौटने की बात कही और खुद अपने कारतुसों से आखिरी दम तक दुश्मन से लोहा लेती रहीं। 12 अगस्त 2008 को कामरेड आयते घटनास्थल पर ही वीरगति को प्राप्त हुई।

कामरेड आयते के आदर्श, उनकी अनुशासनबद्ध जिंदगी, लड़ने व जनता के लिए बिना आगे-पीछे हुए कुर्बान हो जाने की भावना को हम सब ऊंचा उठाए रखेंगे। कामरेड आयते सदा अमर होंगी।

जन मिलिशिया पलटन के बहादुर कमांडर

कामरेड फागू ओयामी अमर रहें!

पश्चिम बस्तर डिवीजन के मिरतुर एरिया के बेचापाल गांव के एक मध्यम किसान परिवार में जन्म लिए थे कामरेड फागू ओयामी। अपनी 35 वर्ष की उम्र में से 13 साल उन्होंने जनता के लिए दिन-रात एक करते हुए काम किया। और उनके लिए अपनी जान की बाजी लगा दी। इन 13 सालों में जनता के बीच कामरेड फागू एक जबर्दस्त नेता, सैनिक बनकर उभरे। कामरेड फागू हमेशा के लिए जनसंघर्ष के इतिहास का हिस्सा बन गए। भयानक दमन अभियान सलवा जुडूम का मुकाबला करने, उसको पछाड़ने में कामरेड फागू जैसे जन मिलिशिया सैनिकों का महत्वपूर्ण योगदान है, जिसे जनता कभी नहीं भूल पाएगी। वह जनता को सदा हिम्मत बंधाते थे, और जन मिलिशिया की कार्रवाइयों में भागीदार बनाते थे। उनका नेतृत्व करते थे।

ऐसे हिम्मती नौजवान, जो दुश्मन से लड़ने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे, का चेहरा भले ही आज हमारे सामने नहीं है, लेकिन वह हमें हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। कामरेड फागू बचपन में बाल संगठन के सदस्य बन गए थे। बाद में किसान मजदूर संगठन के सदस्य बने। और जन मिलिशिया की कार्रवाइयों में भाग लेने लगे। जब भी उनको अपने गांव में दुश्मन के आने का समाचार कहीं से भी मिलता तो वह हमेशा अपने तीर-धनुष, या हथगोले, भरमार के साथ दुश्मन का मुकाबला करने निकल पड़ते थे। लड़ते हुए कभी उन्होंने पीठ नहीं दिखाई। फागू की इन्हीं योग्यताओं, दृढ़ता को देखकर पार्टी ने उन्हें जनमिलिशिया पलटन कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी। और एरिया मिलिशिया कमान के सदस्य के तौर पर भी उन्होंने काम किया। घर में कामरेड फागू की पत्नी और चार बच्चे रह गए हैं।

20 सितंबर 2008 को दुश्मन का पता जैसे ही उनको लगा तो तभी वे बूबीट्रैप लेकर निकल गए थे। लगाते समय ही विस्फोट हो गया जिसमें बहादुर फागू ओयामी शहीद हो गए। आइए ऐसे जांबाजों से प्रेरणा लें। जनता की सेवा करने की उनकी अदम्य भावना को अपने मन में धारण कर लें।

कामरेड दुला (गंगू कड़ती)

पश्चिम बस्तर डिवीजन, मिरतुर एरिया के ग्राम नीलावाया में एक गरीब परिवार में कामरेड दुला का जन्म हुआ। उनको माता-पिता ने प्यार से गंगू नाम दिया। कामरेड दुला पहले जनसंगठन का सदस्य बने। और बाद में दण्डकारण्य किसान-मजदूर संगठन के गांव अध्यक्ष बने। गांव अध्यक्ष रहते हुए उन्होंने जनसंगठन में अच्छा काम किया। 2005 में जब सलवा जुडूम दमन अभियान शुरू हुआ तो वे जुडूमी गुंडों के हत्थे चढ़ गए। उनको पकड़ कर शिविर में बंद कर दिया। वहां से वह भागने में सफल हुए। उसके बाद उनकी पत्नी व बच्चे भी वहां से भागकर आ गए। तब वह अपने परिवार को लेकर दूसरे गांव में बसे। गांव में जब पार्टी से उनकी बात हुई तो उन्होंने अपनी पूरी कहानी बताई और शिविरों में रह रही जनता की मुश्किलों के बारे में बताया। बाद में उन्होंने पार्टी में भर्ती होने के लिए प्रस्ताव रखा। तब पार्टी ने उन्हें गांव में रहते हुए ही काम करने की हिदायत दी। वहां से एक साल बाद दिसंबर 2006 उन्हें दस्ते में भर्ती किया गया। 2007 अप्रैल महीने में उन्हें पार्टी सदस्यता प्रदान की गई।

वह हर काम को ईमानदारी से पूरा करते थे। मिरतुर एरिया में जनमिलिशिया कमांडर की जिम्मेदारी उन्हें सौंपी गई, जहां वे बहादुरी के साथ दुश्मन का मुकाबला कर रहे थे। कामरेड दुला राजनीति-सैनिक-सांगठनिक ज्ञान को सीखने में बहुत दिलचस्पी लेते थे। 20 सितंबर 2008 को उन्हें दुश्मन के आने का समाचार मिला। हमेशा की भांती दुश्मन का सामना करने, उन्हें पछाड़ने के लिए तत्पर कामरेड दुला बूबीट्रैप लगा रहे थे। अचानक उसमें जोरदार विस्फोट हो गया। वहीं पर कामरेड दुला कामरेड फागू के साथ शहीद हो गए।

कामरेड फागू और कामरेड दुला ने जनता की रक्षा के लिए, जनताना सरकारों की रक्षा के लिए अपनी जान न्यौछावर कर दी है। जनता हमेशा उनकी कृतज्ञ रहेगी और सदा याद करती रहेगी। उनकी आशाओं को पूरा करने के लिए जन छापामार सेना में अपने लाड़लों को भर्ती करती रहेगी। कामरेड दुला व फागू को लाल सलाम। ✶

पाठकों से अपील

- 'प्रभात' पर अपनी राय व टिप्पणियां जरूर व नियमित भेजते रहिए। यह पत्रिका के विकास के लिए जरूरी है।
- 'प्रभात' के लिए विभिन्न राजनीतिक, सैनिक व सांगठनिक विषयों पर लेख लिखकर भेजें।
- शहीदों पर रिपोर्टें नियमित रूप से भेजते रहिए। 'प्रभात' में छूटी हुई रिपोर्टें भी भेजें।
- रिपोर्टें साफ-साफ और पूरे विवरण के साथ लिखें। जैसे कि घटना की तारीख, घटना का स्थल (गांव, एरिया, डिवीजन इत्यादि) और बाकी ब्यौरा लिखकर भेजें।
- शहीदों या किसी कार्यक्रम के फोटो भेजते समय उसके पीछे उसके बारे में विवरण जरूर लिखिएगा।

- सम्पादक मण्डल

खोड़गांव शहीदों कॉमरेड्स लालू नरोटी, कम्मा ध्रुवा और जग्गु कौड़ो को लाल-लाल सलाम!

11 नवम्बर 2008 की रात में उत्तर बस्तर डिवीजन में आने वाले गांव खोड़गांव में, जो नारायणपुर से करीब 12 किलोमीटर दूर है, चुनाव बहिष्कार के प्रचार कर रहे जन मिलिशिया सदस्यों के एक दल पर पुलिस व अर्ध-सैनिक बलों ने अंधाधुंध गोलीबारी की जिसमें तीन सदस्य शहीद हुए। शहीद कॉमरेडों के नाम हैं - लालू नरोटी, कम्मा ध्रुवा और जग्गु कौड़ो। इन तीनों कॉमरेडों का संक्षिप्त जीवन-परिचय इस प्रकार है।

कामरेड लालू नरोटी (बुधराम)

कामरेड लालू का जन्म उत्तर बस्तर डिवीजन के, रावघाट एरिया में आने वाले गांव सीतापुर में हुआ था। अपनी 30 वर्ष की उम्र में ही शहीद हो गए कामरेड लालू के चार बच्चे व पत्नी हैं।

सीतापुर गांव में पार्टी का जब से आना-जाना शुरू हुआ था तभी से कामरेड लालू पार्टी राजनीति से परिचत हुए थे। और पार्टी के लिए काम करना शुरू किया। गांव के जनसंगठन में कामकाज को देखते हुए उन्हें स्थानीय पार्टी कमेटी ने सदस्यता प्रदान की। पार्टी ने उन्हें जो भी काम सौंपा उसे जिम्मदारी के साथ और हमेशा पहलकदमी के साथ करते थे। दुश्मन बलों पर हमला करने की कई घटनाओं में लालु आगे रहें।

10 फरवरी 2008 को कोयलिबेड़ा के पास पुलिस वालों के ऊपर पीएलजीए के योद्धाओं ने घात लगाकर हमला किया और 2 पुलिस वालों को ढेर कर दिया था और 3 घायल हुए थे। उसमें भी कामरेड लालू ने हिम्मत के साथ मुकाबला किया था।

नवंबर 2008 में हुए झूठे विधानसभा चुनावों के बहिष्कार अभियान के प्रचार के लिए जन मिलिशिया का एक बैच नारायणपुर एवं आतंगढ़ रोड से पोस्टर लेकर आ रहे थे। 10 नंवबर 2008 के रात डेढ़ बजे खोड़गांव के पास दुश्मन पहले से ही हमारे बैच को खत्म करने के इरादे से एंबुश बैठा हुआ था। रात को हुए इस अचानक हमले में हमारे तीन जन मिलिशिया योद्धा कामरेड लालू, जग्गू, कुम्मा शहीद हो गए। कामरेड लालू पीआरडी के बहादुर कमांडर के साथ-साथ जनताना सरकार सदस्य और एरिया कमान सदस्य थे। चुनाव बहिष्कार करते हुए कामरेडों ने अपनी जनताना सरकार के निर्माण के लिए अपने प्राणों की आहुती दी।

कामरेड कुम्मा ध्रुवा (कुल्ले)

कामरेड कुम्मा ध्रुवा का जन्म गांव जपमरका में हुआ था। कामरेड कुम्मा एक गरीब आदिवासी कोड़ही ध्रुवा के बहादुर बेटे थे। घर में इनके छोटे बच्चे और पत्नी है। कामरेड कुम्मा जनमिलिशिया के सदस्य के तौर पर हर काम को बड़ी लगन के साथ करते थे। रावघाट खदान को खोलने के लिए भारत शासक-शोषक वर्ग पुरजोर कोशिश कर रहे हैं। कामरेड कुम्मा ने इसके विरोध में अपने गांव में जनसंगठन और जनमिलिशिया को मजबूत किया। कामरेड कुम्मा जन मिलिशिया और अपने घर का काम दोनों ही अच्छे समन्वय से चला रहे थे। गांव की जनता ने अपने प्रिय नेता को खो दिया है। कामरेड कुम्मा ध्रुवा सदा अमर रहेंगे।

कामरेड जग्गु कौड़ो

कामरेड जग्गु का जन्म नारायणपुर जिला के खैयरभाट गांव में हुआ था। जग्गु की छोटी उम्र में ही माता-पिता का निधन हो गया था। उनका एक छोटा भाई है।

35 वर्षीय कामरेड जग्गु जपमरका गांव के बहादुर मिलिशिया कमांडर थे और वह जनताना सरकार सदस्य की भूमिका निभा रहे थे। जनता के लिए काम करने की उनमें जबर्दस्त ऊर्जा थी। चुनाव बहिष्कार को सफल बनाने के लिए पोस्टरों को लेकर आ रहे बैच पर हमला हुआ तो कामरेड जग्गु भी वीरगति को प्राप्त हुए। जनताना सरकार के सदस्य कामरेड जग्गु की शहादत गांव के काम के लिए बहुत बड़ी क्षति है। कामरेड जग्गु के सपनों को मंजिल तक पहुंचाने के लिए आइए जनयुद्ध को आगे बढ़ाएं। ★

पूर्व बस्तर में पीएलजीए की कुछ शानदार कार्रवाइयां

(पूर्व बस्तर डिवीजन में 2008 के जुलाई-सितम्बर महीनों के बीच हुई कुछ कार्रवाइयों की रिपोर्टें हमें देर से प्राप्त हुईं जिन्हें हम इस अंक में पेश कर रहे हैं। - संपादक)

बलिराम कश्यप के काफिले पर हमला!

23 जुलाई 2008 को नारायणपुर-कोंडागांव रोड पर टावडेगांव के पास जनता के कट्टर दुश्मन बलीराम कश्यप के काफिले को निशाना बनाते हुए पीएजलीए की एक छोटी सी टीम ने घात लगाकर बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। काफिले में शामिल बोलेरो वाहन में सवार एक जवान की मौत हो गई और 2 घायल हो गए। काफिले में जिला पुलिस बल की एक पलटन शामील थी।

चेरिबेड़ा एम्बुश - 7 हत्यारे जवानों का सफाया

29 जुलाई 2008 को एक बार फिर पीएलजीए की एक टीम ने चेरिबेड़ा गांव के पास सीआरपीएफ और जिला पुलिस बल के संयुक्त गस्ती दल को निशाना बनाया। बोलेरो गाड़ी में आ रहे दुश्मन बलों पर बारूदी सुरंग का विस्फोट किया जिसमें 7 जवान मौके पर ही मारे गए जबकि 2 घायल हुए। गाड़ी के परखचे उड़ गए।

बंजारघाटी एम्बुश - 5 की मौत 5 घायल

29 सितम्बर 2009 को सीआरपीएफ की दो गाड़ियों पर पीएलजीए बलों ने बारूदी सुरंग का विस्फोट किया। पहली गाड़ी को विस्फोट किया तो विस्फोट इतना जबर्दस्त हुआ कि दोनों ही गाड़ियां हवा में उड़ गईं और धड़ाम से गिरीं। इसमें सवार 5 जवान मारे गए जबकि 5 घायल हुए। ये जवान राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल के बस्तर दौरे के मद्देनजर गश्त पर थे। ★

माड़ डिवीजन के वीर शहीद

कामरेड्स संतू, सोनाल, सोनकू और इतवारू को इंकलाबी लाल सलाम!

अप्रैल से 15 जुलाई 2008 तक चले टीसीओसी अभियान में माड़ डिवीजन में 4 कामरेड शहीद हुए। ये सभी कामरेड इंद्रावती एरिया के हैं। अपने इलाके की, अपनी जनताना सरकारों की रक्षा करते हुए, इसी क्रम में जनता की मुक्ति के लिए, दुश्मन के हमलों और साजिशों का मुहंतोड़ जवाब देने के दौरान इन बहादुर कामरेडों ने अपनी जान न्यौछावर की है। प्रस्तुत है, इन शहीदों की संक्षिप्त जीवनियां - *(कामरेड इतवारू की जीवनी हमें प्राप्त नहीं हुई।)*

कामरेड संतू

22 वर्षीय कामरेड संतू (बुधराम) का जन्म इन्द्रावती एरिया के गांव डुंगा में एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में हुआ था। इनके पिता जी गांव में डीकेएएमएस अध्यक्ष रहे थे। पांच साल पहले उनकी शहादत सांप काटने से हो गई थी।

कामरेड संतू एक मेहनती नौजवान थे। वे जनवरी 2006 में गांव के जन मिलिशिया में भर्ती हुए और साथ मिलकर गांव की पहरेदारी करनी शुरू की। 2006 के टीसीओसी में उन्होंने भाग लिया और दिसंबर 2006 में दस्ते में सदस्य के रूप में काम करना शुरू किया। जनवरी 2007 में वह पलटन-1 के सैनिक बने। 2008 फरवरी में उनकी योग्यता को देखते हुए कामरेड संतू को एक एसजेडसी कामरेड का गार्ड नियुक्त किया गया।

कामरेड संतू की कई जगह बदली हुई, लेकिन उन्होंने कभी भी जाने में आना-कानी नहीं की। उन्होंने हर काम को जो उन्हें सौंपा जाता, बखूबी निभाते थे। कोई भी काम उन्हें देते तो उसे करने की कोशिश करते थे, बीमार होने से भी मना नहीं करते थे। कामरेड संतू के मुंह से कभी किसी को यह सुनने को नहीं मिला कि 'मैं नहीं करूंगा'। कामरेड संतू हमारे लिए एक आदर्श कामरेड रहेंगे।

कामरेड संतु को 18 जून को कुरुसनार पहाड़ पर पुलिस पर नजर रखने व समाचार मिलने से पीएलजीए की ऐम्बुश पार्टी को तुरंत देने का काम सौंपा गया। कामरेड संतू एक अन्य कामरेड के साथ सुबह-सुबह पहाड़ की तरफ गए। लेकिन पुलिस वहां पहले से ही घात लगाए बैठी थी। पुलिस ने उन पर गोलीबारी की, कामरेड संतू इस गोलीबारी में पुलिस के चंगुल में फस गए, और पकड़े गए। दूसरा कामरेड बच निकलने में सफल हुआ। कामरेड संतू को पुलिस ने पकड़कर भयंकर व अमानवीय यातनाएं दीं। लेकिन पुलिस उनके मुंह से एक शब्द भी नहीं उगलवा सकी, जबकि ऐम्बुश पार्टी और उनका डेरा वहां से ज्यादा दूर नहीं था। कामरेड संतू जब बेहद गंभीर रूप से घायल अवस्था में थे तो पुलिस ने गांव वालों को कहकर उन्हें उठवा कर अपने साथ ले गए। जो गांव वाले उसे उठाकर पुलिस थाने लेकर गए तो उनका कहना था का कामरेड संतू घायल होने के दौरान भी पार्टी की चिंता कर रहे थे। उन्होंने गांव वालों से कहा कि हमारे कामरेडों से कहना 'लड़ाई जारी रखें'।

कामरेड संतू की शहादत की खबर जैसे ही इलाके में फैली, गांव वालों ने स्मृति सभाएं आयोजित कीं और उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की।

आइए, कामरेड संतू की क्रांतिकारी दृढ़ हिम्मत को सीख लें और उनके खून का बदला लेने का संकल्प लें।

कामरेड सोनाल

कामरेड सोनाल (32) बैइल गांव में एक गरीब आदिवासी परिवार में पैदा हुए थे। 1998 में पहली बार इनके गांव में दस्ते का प्रवेश हुआ। 2002 में वे डीएकेएमएस के सदस्य बने और 2004 में गांव कमेटी के सदस्य बने। 2005 में उन्हें गांव की जनताना सरकार के सदस्य के तौर पर चुना गया। गांव की जनता के साथ उनके गहरे संबंध थे। जनता पर भयंकर दमन आने के बावजूद उन्होंने जनता को हिम्मत बंधाई कि सलवा जुडूम के सामने नहीं झुकेंगे। वे कितना भी हमला करने से हम उनके शिविरों में नहीं जाएंगे। कामरेड सोनाल 'राहत' शिविरों में से आई जनता को भी हिम्मत बंधाते थे, और उनको गांव में रखते थे। वह कोया भूमकाल मिलिशिया के साथ गांव की रक्षा के लिए सदा आगे रहे।

2008 में चले टीसीओसी में उन्होंने भागीदारी की और अपने प्राणों को जनता के लिए बलिदान कर दिया।

17 अप्रैल को इंद्रावती एरिया में सैकड़ों की संख्या में दुश्मन बलों ने गश्त के नाम पर जनता को आतंकित किया। पुलिस पर हमला करने के लिए, अपना तीर-धनुष लेकर कामरेड सोनाल उनकी टोह लेने के लिए निकले थे। जब पुलिस को उहोंने देखा तो तुरंत निशाना साधा, लेकिन उसके हाथ से तीर की कमान छूटने से पहले ही गोली लगी और शहीद हो गए। आइए, उस तीर-धनुष को लेकर आगे बढ़ें और उनके सपनों को मंजिल तक पहुंचाएं।

कामरेड सोनकू

पोनाड गांव के एक गरीब परिवार में कामरेड सोनकू (28) का जन्म हुआ था। उनके बड़े भाई सलवा जुडूम के हमले में पहले ही शहीद हो चुके हैं। कामरेड सोनकू अपने भाई और अन्य जनता के खून का बदला लेने के लिए, अपने आपको वर्ग नफरत से भरकर जन मिलिशिया में भर्ती हुए थे। दुश्मन के प्रति उनमें तीव्र नफरत की भवना थी। टीसीओसी के दौरान दुश्मन को फंसाने के लिए गांव-गांव में शूलों वाले फंदे बिछाए गए, जिससे दुश्मन बेहद खौफ खाते हैं। इन में सोनकू ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। जन मिलिशिया के साथ सैनिक कार्रवाई हो या गांव में जनता का खेती का काम सोनकू सब जगह मुस्तैद रहते थे। इस टीसीओसी के दौरान उन्होंने वीरगति को प्राप्त किया। कामरेड सोनकू सदा अमर हो जनता के दिलों में बसे रहेंगे। ★

मोदकपाल के वीर शहीद कॉमरेड्स देवाल, सुखराम और रीना को जन-जन का लाल-लाल सलाम!

20 अक्टूबर 2008 को पश्चिम बस्तर डिवीजन के मोदकपाल-कोंगपल्ली के बीच पीएलजी ने हत्यारे सीआरपी बलों पर जोरदार हमला कर 12 भाड़े के जवानों का खत्मा कर 6 को घायल कर दिया। (इसकी रिपोर्ट 'प्रभात' के पिछले अंक में छप चुकी थी)। इस शौर्यपूर्ण हमले में पीएलजीए के तीन बहादुर योद्धाओं ने अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया। ये कॉमरेड थे - देवाल (सेक्शन उप कमाण्डर), सुखराम और रीना।

कामरेड देवाल

दंतेवाड़ा जिला, कटेकल्याण तहसील के कुसेम गांव में एक गरीब परिवार में कामरेड मुड़ाल का जन्म हुआ था। वहां से उनका परिवार पलायन कर बीजापुर जिला के पटनम ब्लाक के आदेड़ गांव में आकर रहने लगे। तब कामरेड माड़ाल की उम्र छोटी ही थी। वहां पर खेती के लिए जंगल काट जमीन बनाई। कामरेड देवाल के एक बड़े भाई, एक छोटे भाई और दो बहनें हैं। कामरेड देवाल का परिचय दस्ते से बचपन में ही हो गया था। उनके पिताजी गांव में जनसंगठन में रहकर काम करते थे। उम्र बढ़ने के साथ-साथ कामरेड देवाल जनमिलिशिया दस्ते के साथ रहने लगे। बचपन से ही उनकी दस्ता सदस्य बनने की अभिलाषा थी।

2003 में ये आशा उनकी पूरी हुई जब उन्हें नेशनलपार्क दस्ते में भर्ती कर लिया गया। यहां वे एक साल काम करने के बाद मद्देड़ एलओएस में बदली हुए। मद्देड़ दस्ते में काम करने के पश्चात 2004 में उन्हें पलटन-2 में बदली कर दिया गया। 2006 में नव गठित पलटन-13 में उन्हें स्थानांतरित किया गया। उनके कामकाज को देखते हुए उन्हें सेक्शन डिप्यूटी कमांडर का कार्यभार सौंपा गया। वहां कुछ महीने काम करने के बाद कंपनी-2 में उनकी बदली हुई। वे सभी साथियों के साथ घुलमिलकर रहते थे। जो भी उनको जिम्मेदारी सौंपी जाती उनको वह तत्परता से निभाते थे। पार्टी में ही उन्होंने पढ़ना-लिखना सीखा। राजनीतिक-सैनिक ज्ञान अर्जित किये। और साथियों को भी सीखाने में मदद की। अनुशासन के पक्के कामरेड थे देवाल। छोटी-छोटी गलतियों, कमजोरियों को वे कमेटी से चर्चा कर सुलझा लेते थे।

कामरेड देवाल गरीब परिवार से आए थे, गांव के मुखिया-मांझियों के शोषण से वे अच्छी तरह वाकिफ थे। और इसको खत्म करने के लिए वर्ग-संघर्ष से भी वह वाकिफ हुए। कंपनी में रहते हुए रानीबोदली, तड़िकेल जैसे घमासानों में उन्होंने भाग लिया। सलवा-जुडूम गुंडे जब गांव पर हमला करते थे उनको सबक सिखाने में और जनता की रक्षा करने में भी वे आगे रहते थे। खाना-पानी नहीं मिलने से भी वह ज्यादा चिंता नहीं करते थे। वे जनता की मुश्किलों को जानते थे। इसलिए जनता के लिए कैसे भी काम करने के लिए वे तैयार रहते थे।

कामरेड देवाल फौजी मोर्चे में योगदान : 2007 मार्च 15 तारीख को किए गए रानीबोदली रेड में कामरेड देवाल ने डाइवर्शन टीम में रहकर दुश्मन के पर फायरिंग कर उसका ध्यान बंटाने का काम किया। इस हमले में 55 पुलिस वालों का सफाया कर 32 हथियार छीनने में उनका योगदान रहा। इस घटना मे शहीद व घायल हुए साथियों को कितनी भी मुश्किल होने पर लेकर आने में उनकी भूमिका रही। घायल कामरेडों को वे बहुत मन से सेवा करते थे। घायलों को लाते समय गांव कोकड़ा मे फायरिंग हुई थी, उसमें भी वे हिम्मत से लड़े थे। इस फायरिंग में दो पुलिस वाले मारे गए थे।

पामुलवाया एम्बुश में कामरेड देवाल ने कमांडर के आदेश का सही ढंग से पालन किया, जिसमें दुश्मन के ऊपर हमला कर पांच पुलिस वालों का सफाया कर दिया गया था।

फरवरी 2008 में सम्पन्न तड़िकेल एम्बुश भी उनका जबर्दस्त योगदान रहा। उस हमले में शहीद हुए साथियों की लाशों और घायलों को लाने में उन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

20 अक्टुबर 2008 को मोदकपाल रोड ओपनिंग पार्टी पर हमला करते हुए दुश्मन की गोली से शहीद हुए।

कामरेड सुखराम

कॉमरेड सुखराम

कामरेड सुखराम बीजापुर तहसील के गांव कमका के एक मध्यम किसान परिवार में जन्म लिए थे। कामरेड सुखराम के एक बड़े भाई, तीन छोटे भाई, दो बहनें और माता जी हैं। कामरेड सुखराम के पिताजी का निधन 2006 में हो गया था।

कामरेड सुखराम ने सलवा जुडूम दमन अभियान में जनता की मुश्किलें देखाकर, जनता की मुश्किलें दूर करना है तो मात्र संघर्ष ही एक रास्ता है, यह संकल्प लिया। सलवा जुडूम अभियान में उनके गांव में जुडूम गुंडों ने जनता को पकड़ कर हत्याएं कीं। उनके घरों को जला दिया। यह सब देख कर उनका मन बहुत उदास हुआ और घृणा से भर गया। इसलिए वे 2006 में पार्टी में भर्ती हुए। दल सदस्य बनने से पहले कामरेड सुखराम ने जनमिलिशिया में रहकर काम किया। कुछ समय दल में काम करने के बाद कंपनी-2 में उन्हें भर्ती किया गया। कंपनी में रहते हुए वे पढ़ाई सीखे और अपनी जिम्मेदारियों को निभाए। वे अनुशासन को दृढ़ता से पालन करते थे।

रानीबोदली रेड में कामरेड सुखराम असल्ट टीम में रहकर दुश्मन के साथ हिम्मत के साथ भिड़ गए थे। उन्हें जो जिम्मदारी सोंपी गई उसको बखूबी पूरा किये। पामुलवाया में भी किए गए दो शानदार एम्बुशों में भी वह हिम्मत के साथ लड़े। तड़िकेल में जब वह बहादुरी से लड़ रहे थे तो उन्हें दुश्मन की गोली लगी थी। घायल होने पर भी कामरेड सुखराम ने आगे-पीछे हुए बिना दुश्मन का मुकाबला किया। इस एम्बुश में घायल कामरेड्स को खुद घायल होने पर भी लाने में मदद की। जब वह घायल होने के बाद इलाज करवा रहे थे तो तड़िकेल शहीदों का बदला लेने की बात वह हमेशा अपने साथियों से किया करते थे। वह सोचते रहते थे मैं कब ठीक होऊं और कब जंगे मैदान में शामिल होऊं। ठीक होने के बाद कामरेड की सैनिक व राजनीतिक योग्यताओं के देखते हुए उन्हें सेक्शन डिप्टी कमांडर के पद पर पदोन्नत किया गया।

20 अक्टूबर 2008 को मोदकपल्ली एम्बुश में कामरेड सुखराम दुश्मन से लड़ते समय एक बार फिर दुश्मन की गोली से घायल हुए। कामरेड सुखराम को घायल अवस्था में वहां से उठाकर लाए। लेकिन अब की बार कामरेड सुखराम बच नहीं पाए और जनता के लिए अपनी जान न्योछावर कर गए। कामरेड सुखराम दुश्मन को बड़े-बड़े नुकसान पहुंचाने के लिए अपने कमांडरों से चर्चा किया करते थे। जनयुद्ध को और तीव्र करने के लिए जनताना सरकारों को मजबूत करने के सपने देखा करते थे। कामरेड सुखराम नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के लिए शहीद हो गए। आइए उनके सपनों को मंजिल तक पहुंचाने का संकल्प लें।

कामरेड रीना (आयते)

कॉमरेड रीना

कामरेड रीना दंतेवाड़ा जिला, कुंटा तहसील के गांव पामलूर में कोवासी परिवार में जन्मी थीं। घर में कामरेड रीना को आयते नाम से बुलाते थे। कामरेड रीना का परिवार खेतीबाड़ी कर गुजारा करने वाला एक किसान परिवार है। उनके घर में दो बड़े भाई और बहन हैं। गांव में रहते हुए वे सीएनएम में काम करती थीं। और 2006 में दस्ते में भर्ती हो, किष्टारम दस्ते में काम किया।

अगस्त 2006 में कामरेड रीना को कंपनी-2 दो में स्थानांतरित किया गया। कंपनी में वे सभी से घुलमिल कर रहती थीं। हर सामूहिक काम को लगन से पूरा करने वाली और व्यक्तिगत जीवन में अनुशासन का पालन करने वाली कामरेड थीं। कंपनी में भी वे सीएनएम टीम की सदस्य बनीं और साथियों को गाना, नाचना सीखाईं। वे अपनी गलतियों से सबक लेते हुए आगे बढ़ीं। एक बार फायरिंग में उन्होंने कमजोरी दिखाई थी। और साथियों ने इस पर आलोचना की तो उन्होंने उससे सबक लेने का संकल्प लिया और उसे रानीबोदली हमले में पूरा करके अपनी शूरता का प्रदर्शन भी किया। ऐतिहासिक रानीबोदली हमले में दुश्मन के साथ डटकर लड़कर उन्होंने खुद को एक मिसाल के तौर पर पेश किया।

पुल्लुम, पामुलवाया फायरिंग में कामरेड रीना ने हिम्मत के साथ दुश्मन से लोहा लिया। इस एम्बुश में 5 दुश्मनों का सफाया कर 8 हथियार जब्त करने में पीएलजीए कामयाब हुई थी।

20 अक्टूबर 2008 मोदकपल्ली एम्बुश में कामरेड रीना अपने को दी गई जिम्मेदारी को निभा रही थीं, तभी वह गोली का शिकार बनीं। उन्होंने अंत तक दुश्मन का सामना किया। कामरेड रीना एक जबर्दस्त कलाकार और गुरिल्ला सैनिक थीं। वह सदा हंसते-मुस्कुराते रहने वाली कामरेड थीं। कामरेड रीना तमाम नौजवानों के लिए एक आदर्श हैं। आइए, उनके सपनों को पूरा करने के लिए जनयुद्ध को तेज करें।

मोदकपाल में दुश्मन के साथ लड़ते हुए शहीद हुए साथियों को हम विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हैं और दुश्मन पर मोदकपाल जैसे हमले कर उनके शहादत का बदला लेने का संकल्प लेते हैं। ✶

गोटपाल में मुठभेड़ - एक शहीद

8 दिसम्बर 2008 को पश्चिम बस्तर डिवीजन के भैरमगढ़ इलाके के गांव गोटपाल के पास हुई एक मुठभेड़ (या झूठी मुठभेड़) में एक कॉमरेड शहीद हुए। अखबारों में छपी खबर के मुताबिक नक्सलियों की खबर पाकर पुलिस ने छापा मारा था और दोनों तरफ गोलीबारी के बाद नक्सलवादी पीछे हट गए। पुलिस बता रही है कि मारे गए कॉमरेड का नाम पटनी मनीराम (30) है जो भैरमगढ़ एरिया कमेटी के सदस्य हैं। घटनास्थल से पुलिस ने एक 12 बोर की बंदूक समेत कुछ तीर-धनुष, साहित्य अन्य सामान जब्त किए।

कॉमरेड बामन (कम्पनी-2 का सेक्शन कमाण्डर) की तस्वीर जो हमें अभी प्राप्त हुई। कॉ. बामन 20 दिसम्बर 2007 को गोल्लापल्ली (भट्टीगूडेम) के पास पीएलजीए द्वारा किए गए शानदार एम्बुश में आतंकी पुलिस वालों से आमने सामने लड़ते हुए शहीद हुए थे। उस एम्बुश में कॉमरेड बामन के साथ-साथ कॉमरेड्स सुक्कू और उंगाल भी शहीद हुए थे। ✶

पश्चिम बस्तर डिवीजन में जनवरी 2008 से जनवरी 2009 तक शहीद हुए कॉमरेडों और आम जनता की सूची

क्र.	नाम	उम्र	गांव	स्तर	दिनांक	घटना का विवरण
1.	कड़ती दुला	25	नीलावाया	जन मिलिशिया कमांडर	20.9.08	बुबी ट्रैप दुर्घटना
2.	ओयामी फागु	26	वेचाम	जन मिलिशिया प्लटून कमांडर	,,	,,
3.	उईका बय्याल	60	कमका	आम किसान	2.10.08	पुलिस ने पकड़ कर मार डाला
4.	कुंजाम सुकू	22	गोटोड़	जनमिलिशिया सदस्य	5.10.08	,,
5.	उईका रूपा	25	कमका	जन संगठन सदस्य	5.11.08	बीमार थे, पकड़कर मार डाला
6.	बय्याल	–	बीजापुर	आम किसान	,,	रास्ते में पकड़कर मार डाला
7.	मटयाल	–	चिलनार	जनसंगठन सदस्य	,,	,,
8.	हेमला सुखराम	–	बदेगुड़म	आम किसान	11.11.08	नक्सली समर्थक बताकर मार डाला
9.	उईका पायकू	25	कमका	आम किसान	13.11.08	शिखा मांझी की फसल जनता ने जब्त कर ली थी, उसके बाद सलवा जुडूम गुंडों ने इन सभी आम किसानों को उसका बदला लेने के लिए पकड़कर, फायरिंग कर मार डाला।
10.	उईका बदरू	–	,,	डीएकेएमएस	,,	
11.	पुनेम मासाल	60	मरूम	आम किसान	15.11.08	
12.	परचिक सुक्कू	–	इरमागोंडा	आम किसान	,,	
13.	तेलाम कमली	20	नुकानपाड़	आम किसान	,,	
14.	मड़कम सोमल	–	,,	आम किसान	,,	
15.	मड़कम मेच्छी	60	पंगोड़	आम किसान	,,	
16.	मोड़ियम किशोर	24	पेद्दा कोरमा	एरिया सीएनएम	10.12.08	पकड़ कर झूठी मुठभेड़ में मार डाला
17.	कारम प्रदीप	20	बेल्लाम नेंड्रा	सीएनएम सदस्य	,,	,,
18.	पारेट सुधाकर	25	मिनकापल्ली	आम किसान	,,	,,
19.	ककेम संतोष	20	मिनकापल्ली	आम किसान	,,	,,
20.	पारेट लक्ष्मी नारायण	25	मिनकापल्ली	आम किसान	,,	,,
21.	पारेट हसिर	20	मिनकापल्ली	आम किसान	,,	,,
22.	पारेट बाबु	17	मिनकापल्ली	–	,,	,,
23.	पारेट सुधाकर	18	मिनकापल्ली	आम किसान	,,	,,
24.	मिच्चा वेंकेटैया	–	दारावरम	आम किसान	28.12.08	गिरफ्तार कर मार डाला
25.	कुड़ियाम आयतु	–	संतोषपुरम	आम किसान	,,	,,
26.	कोरसा मुलान	17	मनकिल		1.1.09	पकड़कर मार डाला
27.	ओयाम सुदू	30	पेद्दाजोजोर	कुम्हार	17.12.09	जुडूम गुंडों ने मार डाला
28.	ओयम आमलू	25	,,	,,	,,	,,

शहीद मेरे साथियो लाल-लाल सलाम लो - मजदूर किसान के दिल का सलाम लो!

आन्ध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आन्दोलन में नई जान फूंकने के लिए अपनी जानें कुरबान कर देने वाले

शोषित जनता के प्यारे नेता कॉमरेड्स मस्तानराव, रामचंद्र, प्रसन्न, प्रभाकर, सरिता और अशोक को दण्डकारण्य का लाल-लाल सलाम!

आन्ध्र के क्रांतिकारी आन्दोलन को फिर एक बार भारी नुकसान उठाना पड़ा। हमारी पार्टी की एकता कांग्रेस-9वीं कांग्रेस द्वारा निर्धारित कार्यभार को कंधों पर लेकर आंध्र में अस्थाई झटका झेल रहे क्रांतिकारी आन्दोलन में नई जान फूंकने की चुनौती हमारे कॉमरेडों ने स्वीकार कर रखी है। दुश्मन द्वारा बुने गए मुखबिरी के व्यापक जाल की बावजूद हमारे कॉमरेडों ने अपने काम को जारी रखने का बीड़ा उठाया। इसी सिलसिले में दुश्मन के हमले का शिकार होकर हमारे प्यारे कॉमरेड्स वेंकटराव (मस्तानराव, एमआर), गंगाधर (रामचन्द्र, आरसी), अरुणा (जया, सरिता, शशि), राघवेन्द्रराव (अशोक, प्रसन्न), प्रभाकर (वेंकटेश) और जाना बाबूराव (अशोक) शहीद हुए।

कॉमरेड मस्तानराव

अन्ध्रप्रदेश में क्रांतिकारी आन्दोलन में नई जान फूंकने के इरादे से गठित विशेष कमेटी के तीनों सदस्यों को आन्ध्र की बदनाम खुफिया एजेंसी (एसआईबी) ने पकड़ लिया। इस विशेष कमेटी के सचिव कॉमरेड मस्तानराव और प्रसन्न को एक जगह; कमेटी सदस्य कॉमरेड रामचन्द्र और उनकी जीवनसंगिनी कॉमरेड सरिता को दूसरी जगह गिरफ्तार कर रात भर की यातनाओं के बाद अगले दिन 27 अक्टूबर 2008 को अलग-अलग जगहों पर उनकी हत्या कर दी। विशेष कमेटी एक अन्य सदस्य कॉमरेड जोगाल को अदालत में पेश किया। बाकी कॉमरेडों को आन्ध्र के अलग-अलग जिलों में मार दिया। हमेशा की तरह पुलिस ने मुठभेड़ की ही कहानी बताई। कुछ ही दिनों के अंतराल में हुई इन सभी कॉमरेडों की शहादत से देश के क्रांतिकारी आन्दोलन को, खासकर एपी के आन्दोलन के लिए बहुत बड़ा नुकसान है। इन शहीदों खून व्यर्थ नहीं जाएगा। इन्होंने दुश्मन के हत्थे चढ़ने के बाद क्रूरतम यातनाओं के बावजूद फौलादी संकल्प का जो नमूना पेश किया वह सभी कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों के लिए अनुसरणीय है। आइए, इन कॉमरेडों की आदर्शपूर्ण जीवनी पर सरसरी नजर डालें -

कॉमरेड मस्तानराव - जिन्होंने आन्ध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में अनमोल अध्याय रचा!

करीब तीन दशकों तक क्रांति के लाल झण्डे को उठाए रखकर अविश्रांत संघर्ष करने वाले वरिष्ठ कॉमरेड मस्तानराव (58) का जन्म गुंटूर शहर में संगडिगुंटा बस्ती में हुई थी। क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में गुंटूर जिले का विशिष्ट महत्व है। महान तेलंगाना, नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम संघर्षों की गूंज गुंटूर जिले में भी सुनाई दी थी। इस जिले ने अपने कई उत्तम बेटों और बेटियों को क्रांति के लिए समर्पित किया। संघर्ष की विरासत रखने वाले एक श्रमिक परिवार में कॉमरेड मस्तानराव का जन्म हुआ था। गरीबी ने उन्हें प्राथमिक स्कूल से आगे बढ़ने की इजाजत नहीं दी। घर को चलाने के लिए उन्होंने एक कॉलेज की प्रयोगशाला में सहायक की नौकरी हासिल की। उसी समय, यानी 1975 के आसपास वरिष्ठ कम्युनिस्ट योद्धा कॉमरेड गुरवैया सर से उनका परिचय हुआ था। महान नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम संघर्षों की अस्थाई पराजय और पार्टी के बिखर जाने के बाद फिर से पटरी पर लाने की कोशिशों का दौर था वह। आत्मालोचना रिपोर्ट के आधार पर आन्दोलन को दोबारा खड़े करने के प्रयास जारी थे। तब तक कॉमरेड मस्तानराव की शादी हो चुकी थी और उन पर परिवार का बोझ था। लेकिन वह बिना किसी हिचकिचाहट के क्रांति में कूद पड़े।

1977 में कॉमरेड मस्तानराव पार्टी सदस्य बने। 1978 में उन्होंने सांस्कृतिक संगठन - जेएनएम में काम किया जिसमें रहकर उन्होंने कई प्रदर्शनों का नेतृत्व किया। 1980 से उन्होंने मजदूरों में काम किया। गुंटूर शहर के वह जाने-माने मजदूर नेता के रूप में उभरे थे। उसके बाद पेरेचरला और सत्तेनपल्ली इलाकों में मजदूरों के साथ-साथ किसानों में भी काम किया।

इस इलाके में संशोधनवादियों का प्रभाव ज्यादा ही था। कॉमरेड मस्तानराव ने उनकी समझौतापरस्त राजनीति का पर्दाफाश करने के साथ-साथ दलित जनता में संगठन का विस्तार करने की कोशिश की। पार्टी ने रणनीतिक दृष्टि से जब नल्लामला जंगल में आन्दोलन का विस्तार करने की कोशिश की तब शहीद कॉमरेड ऐसन्ना के साथ-साथ कॉमरेड मस्तानराव के नेतृत्व में किए गए संघर्षों से खासा मदद मिली।

1987 में आयोजित जिला प्लीनम में कॉमरेड एमआर को जिला कमेटी सदस्य चुन लिया गया। नल्लामला परस्पेक्टिव को साकार बनाने के लिए कॉमरेड एमआर को विनुकोण्डा इलाके की जिम्मेदारी दे दी गई। 1989 के आसपास बोल्लापल्ली और पुल्ललचेरवू इलकों में तेंदुपत्ता मजदूरी बढ़ाने के संघर्ष को सफल बनाने में कॉमरेड मस्तानराव का योगदान रहा। वन विभाग के अधिकारियों के क्रूर जुल्मों और शोषण के खिलाफ जनता को संगठित कर उन्होंने कई संघर्ष करवाए। इससे पलनाड़ इलाके के

किसानों और आदिवासियों को वन विभाग से मुक्ति मिल गई।

दाचेपल्ली इलाके के रामापुरम गांव में दलितों को संगठित कर जमींदारों का सफाया करने में कॉमरेड मस्तानराव की भूमिका अहम रही। यह उस समय तक गुंटूर जिले में वर्ग दुश्मनों का सफाया करने की पहली घटना थी जिसको लेकर कई अवसरवादियों ने पार्टी पर दुष्प्रचार किया। लेकिन दलितों की बस्ती को बचाने और तथाकथित सवर्ण जमींदारों के अत्याचारों का अंत करने के लिए यही एक मात्र रास्ता था, इस बात को कॉमरेड मस्तानराव ने व्यवहारिक तौर भी साबित कर दिखाया।

1990 में कॉमरेड एमआर ने गुंटूर जिले के सचिव की जिम्मेदारी ली। 1995 में रीजिनल कमेटी सचिव और राज्य कमेटी सदस्य के रूप में उन्होंने जिम्मेदारी स्वीकार की। उसके बाद रायलसीमा इलाके में जब नेतृत्वकारी कॉमरेडों की शहादत हुई तो कॉमरेड एमआर ने उस क्षेत्र के आंदोलन की बागडोर संभाल ली। बहुत जल्द ही वहां के कैडरों का वह चहेता बन गए।

दुश्मन के बढ़े हुए हमले के मद्देनजर कॉमरेड एमआर को आंध्र से रिलीव करके एओबी इलाके में भेजा गया। 2005 से उन्होंने 'कैलासम' के नाम से एओबी में काम करना शुरू किया। 2005 के आखिर में उन्हें कोरापुट इलाके की जिम्मेदारी दी गई जिसके विकास लिए उन्होंने अथक प्रयास किया। 58 साल की उम्र, अस्वस्थता, बड़े-ऊंचे पहाड़, दुश्मन का भारी दमन - सभी कठिनाइयों के बावजूद शोषित जनता की मुक्ति के लिए आखिर तक लड़ने की दृढ़ इच्छा में कोई कमी नहीं आई। दुश्मन द्वारा दो-तीन बार किए गए हमलों से वह बड़ी चतुराई से बच गए थे। कुछ और मौकों में वह बाल-बाल बच गए।

2008 में उन्हें आंध्रप्रदेश विशेष कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई। और आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आन्दोलन को पुनरुज्जीवित करने की महती जिम्मेदारी उनके कंधों पर रखी गई। वह कॉमरेड रामचन्द्र के साथ उस कमेटी में काम करना शुरू कर ही रहे थे, दुश्मन के हमले का शिकार हो गए।

कॉमरेड एमआर राजनीतिक अध्ययन के मामले में आदर्शपूर्ण नेता रहे। कैडर और जनता के लिए वह अच्छे कम्युनिस्ट शिक्षक थे। क्रांतिकारी साहित्य पर भी उनकी खासी पकड़ थी। तीव्र अस्वस्थता के बावजूद हमेशा व्यायाम करते थे। तीन दशकों की क्रांतिकारी जिंदगी में तमाम उतार-चढ़ावों का उन्होंने एक मजबूत चट्टान की तरह सामना किया। तमाम अड़चनों और चुनौती भरी परिस्थितियों के अंदर भी उन्होंने अपनी नजर कम्युनिस्ट लक्ष्य के ऊपर टिकाए रखी। नई पीढ़ी के कई कॉमरेडों के राजनीतिक जीवन को संवारने वाले इस अनुभवी नेता की शहादत भारी नुकसान तो है, पर निश्चय ही आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी।

आदर्श नेता कॉमरेड रामचन्द्र (आरसी)

44 वर्षीय कॉमरेड रामचन्द्र का क्रांतिकारी जीवन 25 सालों का है। कॉमरेड रामचन्द्र भी गुंटूर जिले से है जिनका जन्म मंगलगिरी कस्बे में हुआ था। हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद पेट पालने के लिए उन्होंने कई जगहों पर कई काम किए थे। 1982 में पार्टी से उनका परिचय हो गया। सबसे पहले उन्होंने पश्चिम गोदावरी जिले में किसानों में पार्टी का काम किया। पेदवेगी इलाके में जमींदारों के खिलाफ संघर्ष कर किसान आंदोलन को आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका रही। उसके बाद उन्होंने जूट मिल के मजदूरों के बीच काम किया। गॉर्ड, कोरियर और संगठक के रूप में उन्होंने जिम्मेदारी से काम किया। 1993 में उन्हें जिला कमेटी सदस्य कर जिम्मेदारी दी गई। तब उन्होंने नल्लामला डिवीजन में वेलिगोंडा इलाके की जिम्मेदारी देखी। 1997 में उन्हें चित्तूर-कड़पा संयुक्त जिला कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने उस इलाके में कई संघर्षों का प्रत्यक्ष नेतृत्व किया। 1999 में उस कमेटी के सचिव बने।

वर्ष 2000 में उन्हें नल्लामला डिवीजन सचिव की जिम्मेदारी दी गई। डिवीजन में सभी मोर्चों का समन्वय करने के साथ-साथ उन्होंने महिला मोर्चे की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी ली। उस समय करनूल जिले में व्यापक पैमाने पर हुए महिला संघर्षों के पीछे कॉमरेड रामचन्द्र की भूमिका महत्वपूर्ण थी। उसी समय कुछ पुलिस थानों पर पीएलजीए के हमलों की योजनाएं रचने में कॉमरेड रामचन्द्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2003 में सम्पन्न राज्य प्लीनम में कॉमरेड रामचन्द्र को राज्य कमेटी सदस्य चुन लिया गया। उसके बाद उन्हें प्रदेश के कई जन संगठनों और जन आंदोलनों के बीच समन्वयक के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई। तलवार की धार पर चलने के बराबर इस जिम्मेदारी को उन्होंने बड़ी सावधानी से निभाया। खासकर आज आंध्रप्रदेश में मौजूद सरकारी दमन के परिप्रेक्ष्य में बाहर घूमना, लोगों से मिलना खतरे से खाली नहीं है। इन कठिन परिस्थितियों में भी कॉमरेड रामचन्द्र ने कैडरों में विश्वास बढ़ाते हुए उन्हें सही मार्गदर्शन दिया।

1990 के दशक में कॉमरेड रामचन्द्र का विवाह कॉमरेड नागमणी से हुआ था। उन दोनों की जोड़ी आदर्शपूर्ण रही थी। 2003 में ग्रेहाउण्ड्स द्वारा किए गए एक हमले में कॉमरेड नागमणी शहीद हुई थी। अपने आंसुओं को दुश्मन के प्रति नफरत में बदलकर कॉमरेड रामचन्द्र संघर्ष के पथ पर मजबूती से आगे बढ़ते रहे। उसके बाद 2006 में उन्होंने कॉमरेड सरिता को अपनी जीवन संगिनी बनाया। कॉमरेड सरिता के साथ ही उन्होंने अपनी जान उत्पीड़ित जनता के लिए न्यौछावर की दी।

कॉमरेड रामचन्द्र एक सच्चे दिल वाले और स्नेहिल कॉमरेड थे। सबसे घुलमिल जाना उनकी खासियत थी। 2007 में आयोजित एकता कांग्रेस में उन्होंने आंध्रप्रदेश से प्रतिनिधि के तौर पर भाग लिया था। उसमें विभिन्न मुद्दों पर हुई बहसों में भाग लेकर अपनी समझदारी बढ़ा ली। वह अच्छे कवि भी थे। बहुत कम ही सही, अच्छी कविताएं लिखीं।

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी कॉमरेड मस्तानराव, रामचन्द्र, सरिता, प्रसन्न, प्रभाकर और अशोक को विनम्रतापूर्वक श्रद्धांजली पेश करती है और उनके शोकसंतप्त दोस्तों और परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट करती है। यह प्रण लेती है कि आंध्रप्रदेश के क्रांतिकारी आन्दोलन को दोबारा खड़ा करने के लिए अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाने में काई कसर नहीं छोड़ेगी। ✶

पार्टी के बोल्शेविकीकरण के संकल्प के साथ पार्टी का पांचवां स्थापना दिवस मना!

दण्डकारण्य में भाकपा (माओवादी) का पांचवां स्थापना दिवस पूरे जोशो-खरोश के साथ मनाया गया। जगह-जगह जनसंगठनों, जनमुक्ति गुरिल्ला सेना व जनताना सरकारों ने अपने-अपने स्तर पर आमसभाएं आयोजित कीं और रैलियां निकालीं। पर्चे-पोस्टरों, दीवारी लेखन, गीतों आदि से स्थानीय स्तर पर व्यापक प्रचार अभियान चलाया। प्रस्तुत है, हमें प्राप्त रिपोर्टें -

दक्षिण बस्तर

दक्षिण बस्तर डिवीजन में पार्टी के पांचवे स्थापना दिवस के अवसर पर पांच इलाकों में सफलतापूर्वक सभाएं आयोजित की गई। सभाओं में हजारों लोगों ने बढ़-चढ़ कर भागीदारी की। वक्ताओं ने जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि 21 सितंबर 2004 को देश की दो क्रांतिकारी धाराओं का विलय हुआ, जिससे हमारी प्राण प्रिय पार्टी भाकपा (माओवादी) का उदय हुआ। 4 साल के अंदर हमारी सबसे बड़ी सफलता है कि हमने पार्टी की नौवीं कांग्रेस को सफलतापूर्वक संपन्न किया। वक्ताओं ने कांग्रेस द्वारा सौंपे गए कर्तव्य से जनता को अवगत करवाया और कहा कि हमारी पार्टी दण्डकारण्य व बिहार-झारखंड को आधार इलाका बनाने, पीएलजीए को पीएलए में बदलने व छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में बदलने के लिए आगे बढ़ रही है। दुश्मन के चौतरफा हमलों का सामना कर रही है। जनता को सलवा जुडूम को जड़ समेत उखाड़ने और चौतरफा हमलों का मुंहतोड़ जवाब देने की अपील की।

जेगुरगोंडा एरिया - नगारम एरिया में 830 महिलाओं व 1300 पुरुषों ने, पामेड़ एरिया में 1050 महिलाओं, 2050 पुरुषों ने भाग लिया। केरलापाल एरिया कमेटी के अंतर्गत दो जगहों पर सभाएं की गईं। एक सभा में 14,033 जनता ने भागीदारी की, वहीं बड़ेचेट्टी गांव में आयोजित की गई सभा में 1187 जनता ने भागीदारी की। सभाओं से पहले पोस्टरों व बैनरों को सभा स्थल पर लगाया गया। स्थानीय एलओएस कमांडर ने इस सभा की अध्यक्षता की। चेतना नाट्य मंच के कलाकारों ने जीवंत प्रस्तुतियां दीं।

उत्तर बस्तर

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का पांचवां स्थापना दिवस क्रांतिकारी जोशोखरोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूरे एक सप्ताह तक व्यापक प्रचार अभियान चलाया गया। इसमें परतापुर एरिया में डीएकेएमएस की पांच टीमें (20 जन से), केएएमएस की चार टीमें (15 जन से) और सीएनएम की 12 टीमें (120 जन से) - पूरे 23 बैनरों और 525 पोस्टरों के साथ पूरे एरिया में प्रचार किया गया। परतापुर गांव के पास सभा का आयोजन किया गया। इसके बाद 'भाकपा (माओवादी) जिंदाबाद', 'पीएलजीए को पीएलए में तब्दील करेंगे', 'जनता की राजसत्ता को कायम करेंगे' के नारों के साथ जुलूस सभा स्थल में पहुंच गया। एसी सचिव ने पार्टी झंडा फहराकर, बाद में स्मारक का अनावरण करके, शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की। इसके बाद जनसंगठन, पार्टी की तरफ से कई वक्ताओं ने सम्बोधित किया। इसमें गांव-गांव में जनसंगठनों, जन मिलिशिया को और पार्टी को मजबूत करने का आह्वान किया। हाल ही में पुलिस वालों के मुखबिरी जाल को एरिया में कुछ हद तक नियंत्रण में लिया गया। इस पूरे विषय को ध्यान में रखते हुए जनता में एकता कायम रखते हुए अपनी जनताना सरकार को मजबूत करने के लिए आह्वान किया गया। साथ में मंहगाई व खाद्यान्न संकट को साम्राज्यवादियों की साजिश बताके उसके खिलाफ लड़ने के लिए आह्वान किया गया। चारगांव-रावघाट रेल लाइन व प्रस्तावित खदान के खिलाफ जनता को जागरूक किया। आदिवासी और गैर आदिवासियों की एकता को बनाए रखने के लिए संगठित होने के लिए आह्वान किया गया।

सीएनएम के कामरेडों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के जरिए जनता के मन को मोह लिया। और जोश से भर दिया।

इस सभा में 1,290 पुरुषों, 540 महिलाओं व 54 सीएनएम व 50 बाल संगठन व पीएलजीए समेत 2,020 जन शामिल हुए।

रावघाट एरिया में पार्टी स्थापना दिवस के बारे में व्यापक रूप से प्रचार किया गया। हमारी पार्टी के संस्थापक और भारतीय क्रांति के पथ-प्रदर्शक कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कनाई चटर्जी की स्मृति में शहीद स्मारक बनाया गया। गांव सिकसोड़ के पास सभा हुई। पूरे डेढ़ किलोमीटर लंबे जुलूस में जनता के क्रांतिकारी नारे गूंज उठे। उसके बाद एसी कामरेड द्वारा पार्टी झंडा फहराने के साथ ही सभा की कार्रवाई शुरू हुई। और जनता को एकजुट होकर गांव-गांव में संगठन को मजबूत करने से ही सही हिसाब में जनता की जनताना सरकार का निर्माण करके नव जनवादी क्रांति को सफल करके, शहीदों के सपनों को पूरा करने का आह्वान किए। रावघाट की जनता की संपत्ति को रेल लाइन बनाकर बहुराष्ट्रीय व दलाल कंपनियों के हाथों में सौंप रहे हैं। इसका पुरजोर विरोध करने के लिए सभी तबकों की जनता को एकजुट होकर व्यापक जन संघर्ष को खड़ा करने का आह्वान किया गया। सभा में 5,992 जनता ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

मानपुर डिवीजन

मानपुर एरिया के मदनवेड़ा और बेलदो गांवों में तथा पल्लेमाड़ी में तीन जगहों पर पार्टी स्थापना दिवस पर आमसभाओं का आयोजन किया गया। सभाओं को पार्टी नेताओं व जनसंगठन के नेताओं ने संबोधित किया। अधिक से अधिक जनता को जन संगठनों में एकजुट होने की जरूरत पर बल दिया गया। संगठित

होने से ही जनता अपने हक-अधिकार को प्राप्त कर सकती है। दुश्मन कई तरह का हमला कर रहे हैं, उसे मुंहतोड़ जवाब देने के लिए जन मिलिशिया की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए मजबूत जन मिलिशिया व जनसंगठन का निर्माण करने के लिए जनता को आह्वान किया गया।

इसमें सांस्कृतिक सेना के 90 कलाकारों ने अपने क्रांतिकारी गीतों के साथ जनता को उत्साहित किया। व व्यपाक प्रचार अभियान एरिया में चलाया। सभाओं में 5,800 जनता शामिल हुई।

उत्तर गड़चिरोली

उत्तर गडचिरोली के कसनसुर और सूर्जागढ़ एलओएस एरिया में 21 सितंबर को पार्टी स्थापना दिवस मनाया गया। 21 सितंबर को अलग-अलग 15 जगहों पर आमसभाओं और रैलियों का आयोजन किया गया। जनता, जनमिलिशिया व पीएलजीए ने मिलकर कुल 395 जनता ने भाग लिया। पहले दोनों एरियाओं में व्यापक पैमाने पर प्रचार करते हुए 190 पोस्टर और 4 बैनर लगाये गए।

दुश्मन के चौतरफा दमन के बीच शहीद-सप्ताह सम्पन्न

दक्षिण बस्तर डिवीजन

किष्टारम एरिया में शहीद सप्ताह गांव-गांव में मनाया गया। और पूरे इलाके की जनता को मिलाकर भी गांव केड़वाल में शहीद स्मृतिसभा आयोजित की गई। सभा में एरिया के शहीद साथियों के परिजनों ने भाग लिया और सभा को संबोंधित किया। कंपनी-3 के शहीदों कामरेड बामन, सुक्कू, उंगा, आंध्र-ओडिशा बार्डर स्पेशल जोन में शहीद हुए कामरेड अर्जुन के नाम से गांवों में स्मारकों का निर्माण किया गया। जनसंगठन के नेताओं ने इन सभाओं का नेतृत्व किया।

जेगुरगोंडा एरिया के तीन एलओएस इलाकों में सभाएं की गईं। इस मौके पर शासक वर्गों के भाड़े के पुलिस बलों ने अपनी गश्त भी जारी रखी। लेकिन जनता को सभाओं में आने से नहीं रोक पाए।

क्रूर फासीवादी दमन अभियान सलवा जुडूम के गुंण्डों, पुलिस, अर्ध सैनिक बलों के द्वारा एरिया के करीब 60 महिला-पुरुषों को मौत के घाट उतारा जा चुका है। इन सभी साथियों को, ग्रामीणों को सभा में लाल श्रद्धांजली अर्पित की गई। उनके खून का बदला सलवा जुडूम को धराशायी करके लेने का संकल्प लिया। सभा में उन शहीदों का परिचय जनता को दिया गया। शहीदों के परिजनों ने सभा में भागीदारी की।

बासागुड़ा एलओएस एरिया में 650 महिलाओं व 1350 पुरुषों और नागरम एलओएस एरिया में 400 महिलाओं व 1040 पुरुषों ने सभाओं में भाग लिया।

कोंटा एरिया में 3 जगहों पर शहीद स्मृति सभाएं संपन्न की गईं। डब्बाकोंटा गांव में हुई सभा में 305 महिलाओं व 451 पुरुषों ने भाग लिया।

31 जुलाई को रेगड़गट्टा गांव में 121 महिलाओं व 168 पुरुषों ने सभा में भाग लिया।

3 अगस्त को कोंटा एलओएस एरिया के एक अन्य गांव में 137 महिलाओं व 247 पुरुषों ने आमसभा में भागीदारी की। 3 बैनर व 20 पोस्टर लगाए गए।

गड़चिरोली डिवीजन

गड़चिरोली के टिप्रागढ़ इलाके में शहीद सप्ताह मनाया गया और शहीदों की याद में 7 शहीद स्मारकों का निर्माण किया गया। इसके साथ-साथ कई गांव में आम सभाएं आयोजित की गईं। आमसभाओं में 1672 जनता ने हिस्सेदारी की। जनमिलिशिया की सक्रिय भागीदारी से रोड पर पोस्टर डाले गए और दीवारी लेखन भी किया गया।

जोशो-खरोश के साथ मना पीएलजीए स्थापना सप्ताह

पूर्व बस्तर डिवीजन

पीएलजीए के स्थापना सप्ताह के अवसर पर पूर्व बस्तर डिवीजन के सभी इलाकों में 2 से 8 दिसंबर के बीच सभा-सम्मेलनों, रैलियों का आयोजन हुआ। शहीद स्मारकों पर रंगरोगन किया गया। कई सभाओं में युवक-युवितयों ने मंच से पीएलजीए में भर्ती होने की शपथ ली।

कोरर इलाके में कई सभाएं आयोजित की गईं। पीएलजीए में भर्ती होने युवक-युवतियों से अपील करते हुए व्यापक प्रचार किया गया। जनता में नुक्कड़ नाटक और गानों के माध्यम से पीएलजीए के हमलों की शौर्यगाथा का बखान किया गया।

केशकाल में प्रत्येक गांव सरकार के इलाके में स्थापना सप्ताह मनाया गया। एरिया स्तर की एक रैली का आयोजन किया गया जिसमें चार हजार लोगों ने भाग लिया।

2 दिसंबर को वयानार इलाके में इलाका स्तर पर एक बड़ी जनसभा का आयोजन किया गया था। जिसमें 300 लोग शामिल हुए। इसी मंच से करीबन ड़ेढ़ दर्जन युवक-युवतियों ने पीएलजीए में शामिल होने की घोषणा की एंव शपथ भी ली। 2 से 7 तारीख तक गांव सरकार स्तर पर जनमिलिशिया बलों के लिए तीर-धनुष एवं गुलेल प्रतियोगता आयोजित की गई। 8 दिसंबर को एरिया जनताना सरकार स्तर पर तीर-धनुष, गुलेल एंव एअरगन प्रतियोगता के विजेताओं को एरिया सरकार की ओर से चाकू और लाल सितारे वाली टोपियां इनाम के तौर पर बांटी गईं। एअरगन प्रतियोगता में जनमिलिशिया पलटन की सदस्या एवं केएएमएस कार्यकर्ता कामरेड 'एम' अव्वल रही, जबकि तीर-धनुष प्रतियोगता में कोया भूमकाल मिलिशिया के 50 वर्षीय कामरेड बक्कू अव्वल रहे। इन प्रतियोगताओं से मिलिशिया कामरेडों ने यह प्रेरणा ली कि दुश्मन के सीने पर निशाना साधने के लिए उन्हें लगातार

अभ्यासरत रहना चाहिए।

कुदूर इलाकें में 2 से 7 तारीख तक गांव स्तर पर सभाएं आयोजित की गईं। 8 तारीख को एरिया स्तर पर बड़ी सभा का आयोजन किया। इसमें 3500 लोगों ने भाग लिया। यहां पर भी प्रतियोगताओं का आयोजन किया गया। इस सभा को एसजेडसी सदस्य कामरेड पांडू ने संबोधित किया।

बारसूर में भी सभाएं आयोजित की गईं। इस दौरान पूरे डिवीजन में बैनर, पोस्टर, पर्चों से प्रचार किया गया।

माड़ डिवीजन

नेलनार गांव में एरिया स्तर की आमसभा का आयोजन किया गया, जिसमें 1000 जनता ने भाग लिया। जनसंठनों के माध्यम से पहले पूरे एरिया में प्रचार किया गया था। दूर गांव वाले सभा से एक दिन पहले ही पहुंच गए थे। गानों और जोशपूर्ण नारों के साथ पहले रैली निकाली गई और बाद में झंडा फहराया गया। जहां सीएनएम टीम ने अपना सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया वहीं डीएकेएमएस, केएएमएस और जनताना सरकार की तरफ से अलग-अलग वक्ताओं ने भाषण दिया।

सीएनएम की एरिया कमेटी के नेतृत्व में चले कार्यक्रम में पीएलजीए में नौजवानों को भर्ती होने का संदेश देते हुए एक नाटक पेश किया और गीत गाए।

इस आमसभा के बाद पंचायत स्तर पर भी गांव-गांव में पीएलजीए स्थापना सप्ताह के मौके पर आम सभाएं होती रहीं।

इंद्रावती एरिया में तीन जगहों पर आमसभाएं आयोजित की गईं, जिनमें कुल मिलाकर करीब दो हजार जनता ने भाग लिया।

कुतुल एरिया के चार एलओएस क्षेत्रों में भी पीएलजीए सप्ताह जोर शोर से मनाया गया। पीएलजीए दिवस से पहले ही जन संगठनों ने प्रचार अभियान को जोरदार ढंग से चलाया। 5 जगहों पर आमसभाओं का आयोजन किया गया। आमसभाओं में महिला-पुरुष, बच्चे-बूढ़े सब शामिल हुए। गाड़ावाही गांव में 900 जन और उसेवेड़ा में 700 जन और इसी तरह अन्य सभाओं में लोगों ने भागीदारी की। एरिया में गांव-गांव में भी पीएलजीए स्थापना सप्ताह मनाया गया।

उत्तर बस्तर डिवीजन

प्रतापुर एरिया में डीएकेएमएस (70 जन), केएएमएस (62), सीएनएम (66 जन) ने मिलकर अलग-अलग टीमों का गठन कर प्रचार अभियान चलाया। 40 बैनर, 1370 पोस्टर और 2500 पर्चों के साथ जोरदार प्रचार किया गया।

इस सभा में 2089 पुरुषों और 1286 महिलाओं ने और सैंकड़ों की संख्या में बच्चों ने भी उपस्थिति दर्ज करवाई और पीएलजीए की शानदार कार्रवाइयों पर और उसमें भर्ती होने के महत्व पर अपने नेताओं के विचार सुने। चेतना नाट्य मंच ने अपनी जानदार प्रस्तुति से जनता का मन मोह लिया।

रावघाट में भी तीन जगहों पर आमसभाओं का आयोजन किया गया जिसमें 2200 जनता ने भागीदारी की।

मानपुर डिवीजन

मानपुर डिवीजन के अंतर्गत पल्लामाड़ी एरिया कमेटी के तहत पीएलजीए सप्ताह में सफलतापूर्वक आमसभाएं और रैलियां आयाजित की गईं। इसके आयोजन से पहले व्यापक प्रचार अभियान चला जिसमें 762 पर्चे, 432 पोस्टर और 7 बैनर लगाए गए। इसके साथ-साथ गांव-गांव में बैठकें कर भी प्रचार किया गया। दो जगहों पर आयोजित इन सभाओं में 30 गांवों की 740 जनता ने भाग लिया। इनमें से 440 पुरुष और 300 महिलाएं थीं। वक्ताओं ने ओजपूर्ण भाषणों से व सीएनएम ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति से जनता में जोश भर दिया।

आठ मार्च मना

माड़ डिवीजन के कुतुल एरिया के अंर्तगत तीन गांव की जनताना सरकारों - पोदामगोट्टी, तोके और जटवाही ने मिलकर आठ मार्च अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक महिला दिवस के अवसर पर आमसभा और रैली का आयोजन किया। इस आमसभा में 432 महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम लगभग 4 घंटे तक चलता रहा। इसकी शुरूआत तोके सरकार केएएमएस अध्यक्षा द्वारा झंडा फहराने से हुई। वक्ताओं ने आठ मार्च के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। और कामरेड जानकी दीदी की शहादत को ऊंचा उठाने और उनके आदर्शों को अपनाने की बात वक्ताओं द्वारा कही गईं। तीनों सरकारों की संयुक्त चेतना नाट्य मंच की टीम ने सांस्कृतिक कार्यक्रम से समां बांधे रखा और महिलाओं की समस्याओं पर एक नाटक की प्रस्तुति भी दी गई।

15 अगस्त की झूठी आजादी के विरोध में सभाएं

दक्षिण बस्तर डिवीजन में आजादी का पर्दाफाश करते हुए सभाए संपन्न हुईं। शासक वर्गों के तिरंगे झंडे के स्थान पर उसके खिलाफ विरोध स्वरूप काला झंडा फहराया गया। जनताना सरकार स्तर पर आमसभाएं सपन्न की गईं। इन सब सभाओं का नेतृत्व डीऐकेएमएस, केएएमएस और सीएनएम ने किया।

सभाओं में जेगुरगोंडा एरिया में 1015 और किष्टारम एरिया में 2162 जनता ने भाग लिया। पामेड़ एरिया में भी 150 महिलाओं व 450 पुरुषों ने भाग लिया। कोंटा एरिया में पंचायत स्तरों पर सभाएं व रैलियां आयोजित की गईं।

इन सब सभाओं में चेतना नाट्य मंच के कलाकारों ने गीतों, नाटकों के जरिये जनता को आजादी की असलियत से अवगत करवाया गया।

उत्तर बस्तर

परतापुर एरिया में अलग-अलग जगह 15 अगस्त को काले दिवस के रूप में मनाया गया। यह आजादी जमींदारों और पूंजीपतियों की आजादी है। आज भी हमारे देश की संपत्ति को बहुराष्ट्रीय कंपनियां दोनो हाथों से लूट रही हैं। यह आजादी के

नाम पर ढकोसलेबाजी के सिवाए कुछ नहीं है। जनता को अपने जल-जंगल-जमीन से बेदखल किया जा रहा है। यह आजादी केवल पूंजीपतियों ओर जमींदारों को अपने घर भरने की आजादी है। 60 साल की झूठी आजादी ने जनता को सिवाए लाठी-गोली, गरीबी, बेरोजगारी और भूखमरी के कुछ नहीं दिया है। इस आजादी को झूठा बताते हुए परतापुर एरिया में जनता ने आम सभाएं कीं और जनता की असली आजादी के लिए संघर्ष करने, देश से साम्राज्यवाद और सामंतवाद को खत्म करने के नारे लगाए। वक्ताओं ने जनताना सरकारों को मजबूत करने का आह्वान करते हुए कहा कि केवल जनता अपनी जनताना सरकारों को मजबूत कर के ही सही रूप में आजादी हासिल कर सकती है। इन सभाओं में 300 महिलाओं और 764 पुरुषों ने भागीदारी की।

रावघाट एरिया में चारगांव के पास 15 अगस्त को काले दिवस के रूप में मनाया गया। एक सप्ताह तक पूरे एरिया में व्यापक प्रचार किया गया। चारगांव के पास पूरे उत्साह के साथ दूर-दूर से आई करीबन 3,000 जनता ने इस सभा में भागीदारी की। वक्ताओं ने इस झूठी आजादी को ठुकराकर आजादी की एक और लड़ाई के लिए तैयार होने की जरूरत बताई। कुछ स्थानीय मुद्दों के बारे में जनता के सामने अपने विचार रखे। बीच में सांस्कृतिक प्रदर्शन जनता को उत्साहित करता रहा।

मानपुर डिवीजन

मदनवेड़ा एरिया के कारेकट्टा गांव में हुई जनसभा में 1075 जनता ने भाग लिया। ब्रिटिश साम्राज्यवादी भारत देश के दलालों को सत्ता सौंप कर जाने के बाद पूरे भारतदेश में अमेरिका, जापान, जर्मनी, रूस, फ्रांस जैसे साम्राज्यवादियों के लिए लूट का दरवाजा खोल दिया गया। पूरे देश की संपत्ति की साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीच बंदरबांट हो रही है। जब तक लूट खत्म नहीं होगी तब तक जनता को सही आजादी व जनवाद नहीं मिलेगा, ऐसा वक्ताओं ने भाषण दिए।

26 जनवरी काला दिवस

पल्लामाड़ी एरिया में झूठे गणतंत्र दिवस के मौके पर उसे काला दिवस के रूप में मनाया गया। विरोध स्वरूप काला झंडा फहराया गया। झूठे गणतंत्र दिवस की पोल खोलते हुए 500 पर्चे, 360 पोस्टर और 11 बैनर लगाए गए। झूठे गणतंत्र दिवस और सिंगारम नरसंहार के विरोध में हुई सभा में 17 गांव की 300 से ज्यादा जनता ने भाग लिया। डीके एसजेडसी द्वारा की गई बंद की अपील का पालन किया गया।

छात्रों ने मनाया मातृभाषा दिवस

21 फरवरी को पूरी दुनिया में मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाता है। 1952 में बंग्लादेश के छात्रों ने अपनी मातृभषा बंग्ला को आधिकारिक भाषा का दर्जा देने की मांग को लेकर जबर्दस्त आंदोलन किया था। 21 फरवरी को तत्कालीन पाकिस्तान सरकार ने छात्रों पर गोलियां चलाईं जिसमें कई छात्र मारे गए और घायल हुए। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने इसे पूरी दुनिया में मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। इसी दिवस के अवसर पर दण्डकारण्य चेतना नाट्य मंच ने गांव-गांव में अपने कार्यकर्ताओं से इस दिवस को गोंडी भाषा दिवस के रूप में मानने का आव्हान किया गया था।

उत्तर बस्तर डिवीजन में इस अवसर पर रावघाट और परतापुर एरिया के कई स्कूलों के छात्रों ने चेतना नाट्य मंच और गांव के लोगों के साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित किये और रैलियां निकाली गईं। कौडो सालेभाट के आसपास के स्कूलों के लगभग 600 छात्रों व 300 ग्रामीणों ने मिलकर रैली निकाली और स्कूल में एक आमसभा का आयोजन किया। गुडाबेड़ा में केसेकोडी व टट्टा गांव के 400 के आसपास छात्रों ने रैली निकाली और आमसभा का आयोजन किया। चारगांव के पास पोरोंडी गांव में 70 छात्रों ने रैली निकाली। परतापुर एरिया में, प्रतापुर स्कूल के करीब 100 छात्रों ने रैली निकाली और आमसभा की।

छात्रों को वक्ताओं ने संबोधित करते हुए कहा कि भारत के शासक वर्ग आदिवासियों की भाषा के विकास के लिए कुछ नहीं कर रहे, उल्टा उसको खत्म करने के लिए दूसरी भाषाओं को हमारे ऊपर थोप रहे हैं। स्कूलों में दूसरी भाषाओं में पढ़ाया जाता है, हमें अपनी भाषा गोंडी में पढ़ाने की मांग के लिए संघर्ष करना चाहिए और बोलने में बेहिचक इस्तेमाल करना चाहिए। चेतना नाट्य मंच गोंडी भाषा के विकास के लिए तमाम छात्रों, अध्यापकों, बुद्धिजीवियों से आव्हान करती है। इस तरह के कई कार्यक्रम दण्डकारण्य भर में आयोजित किये गए और एक पर्चा भी गोंडी भाषा में निकाला गया।

डीएकेएमएस का एरिया स्तरीय अधिवेशन सफल हुआ।

पेरमिली एरिया में डीएकेएमएस का एरिया स्तरीय अधिवेशन 5-6 नवंबर 2008 को पूरे क्रांतिकारी उत्साह के साथ सफल हुआ। कामरेड देवु आत्राम कम्युन में एरिया के किसान-मजदूर प्रतिनिधि जमा हुए। शहीद कामरेड लाल्सू के स्मारक का आनावरण कर शहीदों को दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजली दी गई। तत्पश्चात डीएकेएमएस के अध्यक्ष कामरेड ... ने झंडा फहराकर अधिवेशन की विधिवत् शुरूआत की।

प्रतिनिधियों ने पिछले दो सालों के सांगठनिक काम की समीक्षा करने के साथ-साथ संगठन के घोषणा-पत्र पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। अगले अधिवेशन तक एरिया स्तर पर संगठन का नेतृत्व करने वाली कमेटी का चुनाव भी किया गया।

डीएकेएमएस के प्रतिनिधियों ने निर्णय लिया कि जिन गांवों में कमेटी नहीं हैं वहां पर कमेटी बनाई जाएगी और जिन गांवों में कमेटी कमजोर है उसे मजबूत किया जाएगा।

अधिवेशन में कई राजनीतिक प्रस्ताव भी रखे गए, जिसका सर्वसम्मति के साथ अनुमोदन हुआ।

अंत में झंडा उतारने की रस्म के साथ दो दिनों तक चले अधिवेशन का समापन क्रांतिकारी जोशो-खरोश के साथ हुआ। ✶

जन विरोधियों व मुखबिरों का सफाया

आंध्र व छत्तीसगढ़ के पुलिस बलों के लिए मुखबिरी कर रहे कोवासी बामन को मौत की सजा सुनाई गई। किष्टारम एरिया के नजदीक आने वाले अंकनपल्ली गांव के कोवासी बामन को आंध्र की एसआइबी और छत्तीसगढ़ पुलिस ने मिलकर मुखबिर बनाया था। पैसों का लालच देकर उसे अपने जाल में फंसाया था। कोवासी बामन ने पुलिस के साथ घूम-घूमकर उन्हें जनता के सामानों व पीएलजीए के डम्पों को पकड़वाया था। उसके लिए उसे 10 हजार रुपए एक बार में मिले। कोंटा एरिया के दोरनापाल, एर्राबोर व पोलमपल्ली 'राहत' शिविरों में एसपीओ के साथ रहता था और गांव वालों को तंग करने, उनका सामान लूटने की कार्रवाइयों में भाग लेता था। जनता के फैसले पर पीएलजीए 8वीं पलटन ने इस जनविरोधी को मौत के घाट उतार दिया।

पुलिस मुखबिर हेमला गंगा का खात्मा

पामेड़ एरिया के अंतर्गत उसूर एलओएस के पोतकेल गांव का हेमला गंगा बासागुड़ा के थानेदार व सलवा जुडूम के नेता मोड़ियम नागा व सीआरपीएफ के कैंप कमांडर बालाजी से सीधा संबंध रखता था। 12 हजार रुपए देकर उसे मुखबिरी करने के लिए तैयार किया गया था। गंगा रात को कई बार दुश्मन बलों को रोड पर ऐम्बुश में बिठाया जहां हमारी सेना रोड पार करती है। गांव के जनसंगठन के नेताओं के घरों पर दो बार छापेमारी करवाई, लेकिन वह सफल नहीं हो सका।

जनमिलिशिया की पकड़ में आए हेमला को जनता की आदलत में पेश किया गया, जहां उसे मौत की सजा देने का फैसला हुआ। और उसे खत्म कर दिया गया।

सोड़ी कोसा, सोड़ी जोगी व मिड़ियम नंदा का सफाया

सोडी कोसा निवासी चिंतागुप्पा जो अपनी ससुराल गांव करीगुण्डा में बसा था, पुलिस व जुडूम गुण्डों को सूचनाएं मुहैया करवाता था। अगस्त के पहले सप्ताह में उसे मार डाला गया।

गांव करीगुण्डा का सोड़ी जोगी (पेद्दा जोगी) कोंटा जाकर सलवा जुडूम के नेताओं से मिलकर मुखबिरी करती थी। गांव वाले जहां भी जंगल में अपने छुपने के लिए झोपड़ियां बनाते उसे जल्द ही पुलिस को बताती थी। गांव वाले उससे बेहद परेशान थे। गांव वालों ने उसे गिरफ्तार करने की मांग की। जन मिलिशिया ने गिरफ्तार कर उसे जन अदालत के सामने रखा तो अगस्त के आखिरी सप्ताह में विस्तार से चर्चा कर उसे मौत की सजा सुनाई। इस कार्रवाई में 501 जनता ने भाग लिया।

गांव कोरपाड़ के मिड़ियम नंदा को जुलाई के अखिरी सप्ताह में खत्म कर दिया गया। नंदा जनवरी 2006 में एसपीओ बना था। जब वह गांव में आया तो जन मिलिशिया ने उसे धर दबोचा। और उसे पूछताछ कर अगले दिन मार डाला।

उत्तर बस्तर में हुई जन अदालातों की कार्रवाईयां

उत्तर बस्तर डिवीजन, परतापुर एरिया में मुखबिर, कोवर्ट बने पांच जन को जन अदालत ने मौत की सजा सुनाई। बड़गांव एलओएस के नंदीसुव्वा गांव में लडदु नेताम छोटी उम्र से क्रांतिकारी संघर्ष से जुड़ा हुआ था। सीएनएम में काम करते-करते उसके कामकाज को देख कर उसको सीएनएम की जिम्मेदारी दी गई थी। और पार्टी सदस्यता भी दी गई थी। लड़दु 2007 में एक बार कोयलीबेड़ा में गिरफ्तार हुआ था। पुलिस वालों ने लडदु और उसके साले प्रभु को पकड़ कर तीन-चार दिन थाने में रखकर कोवर्ट बनाकर वापस भेज दिया। वे हमेशा की तरह गांव में आकर पार्टी काम करने लगे। पार्टी और संगठन वालों के साथ भी उनका अच्छा व्यवहार रहा। लेकिन गुप्त रूप से पूरे एरिया का समाचार बड़गांव थाने में चिट्ठी के द्वारा भेजना और संगठन के अन्य सदस्यों को मुखबिर के रूप में तैयार करने का काम करने लगे थे। कुछ दिन के बाद प्रभु भाग कर एसपीओ बन गया। और कुछ ही दिन के बाद लडदु के रहन-सहन में भी बदलव नजर आने लगा। वह अपनी ससुराल में जाकर अपने साले प्रभु से मिलकर पुलिस को सभी सूचनाए उपलब्ध करवाता था। उसका टारगेट था पांच साल के अंदर पार्टी के किसी भी नेतृत्वकारी कामरेड को खत्म करना और कोई हथियार छीनकर पुलिस में शामिल होना।

ग्राम मेंड्रा के बीसाऊ व उसके भतीजे रोहित को भी

झूठी मुठभेड़ के खिलाफ एटापल्ली तहसील बंद

उत्तर गडचिरोली डिवीजन के कसनसूर एरिया के अंतर्गत आने वाले गडेरी गांव के निवासी येशु कुमरे को 13 नवंबर 2008 को पुलिस बलों ने मार डाला। और अखबारों में मुठभेड़ की रटी-रटाई कहानी दोहराई। इसके खिलाफ 25 नवंबर को पार्टी ने एटापल्ली तहसील बंद का आह्वान किया, जिसका व्यापक असर हुआ और जनता ने स्वेच्छा से बंद का पालन किया। शिवसेना जैसी प्रतिक्रियावादी पार्टी ने भी झूठी मुठभेड़ की निंदा की।

अलग-अलग सड़कों पर 6 जगहों पर खोद कर और पेड़ गिराकर, पत्थर डालकर चक्का जाम किया गया। इसमें जनता व जनमिलिशिया ने भाग लिया। 2-3 दिनों तक रोड पर गाड़ियों का आना जाना पूरी तरह से ठप रहा। इस दौरान कसनसूर कैंप पर जनमिलिशिया ने फायरिंग कर अपना विरोध प्रकट किया। इस फर्जी मुठभेड़ का पर्दाफाश करते हुए 500 पोस्टर और 4 बैनर लगाए गए। बड़े पैमाने पर बंद के असर से पुलिसिया झूठ की पोल खुल गई। 28 नवंबर को शिवसेना को भी इस झूठी मुठ भेड़ के खिलाफ प्रदर्शन करना पड़ा। ✶

एसपीओ बनने के लिए तैयार किया। बिसाऊ भी हमेशा बड़गांव थाने में जाकर एसपीओ रोहित से मिलकर आता था, एरिया की रिपोर्ट देता था। जन आदलत में जब इनको पेश किया गया तो जनता ने इन्हें खत्म करने की पुरजोर मांग उठाई। जनता के फैसले पर तीनों को मौत के घाट उतारा गया।

पुलिस मुखबिर मनोरंजन का सफया

सूरजागढ़ एलओएस एरिया कें अतंर्गत आने वाले गांव जो छत्तीसगढ़ राज्य का है - पीवी 109 (बंगाली शरणार्थियों का गांव) का निवासी था जनविरोधी मनोरंजन। एक बार सेवारी गांव के चुक्का पुड़ो की हत्या सी-60 के एक खूंखार कमांडर देवजी कोवासी ने की थी, तब मनोरंजन ने अपनी जीप में उसकी सेवा की थी। 2008 में साहिब श्री गोखले नाम के एक पुलिस अधिकारी से 30 हजार से ज्यादा रुपए लेकर उसके लिए मुखबिरी कर रहा था। हत्यारे कमांडो बल के कंपनी कमांडर प्रभु दुग्गा, पलटन कमांडर देवजी कोवासी, रामु कोवासी के साथ-साथ छग पुलिस बांदे के टीआई से भी इसके संबंधों की पुष्टि हुई। इनसे लगातार मनोरंजन मोबइल से संपर्क में रहता था।

जन अदालत के सामने जब इस मामले को रखा गया तो जनता का कहना था कि ऐसे आदमी को गांव में नहीं रखा जाना चाहिए। ऐसे गद्दार को मार देना ही अच्छा है। अतंत: उसे मौत की दी गई।

गांव वालों को मुखबिर बनाने की साजिश के दोषियों को सजा-ए-मौत!

मेंडकी एलओएस एरिया के गांव कटनार में एक कोवर्ट सेल को जनता ने मौत की सजा सुनाई और पुलिस की घिनौनी साजिश को नाकाम किया।

गांव कटनार में जनताना सरकार अध्यक्ष जमान के साथ-साथ जन संगठन के सदस्य कावे, रैयजी के साथ तीन लोगों का कोवर्ट सेल बड़े साजिशपूर्ण ढंग से काम करने लगा था। पैसे का लालच देकर इसे बनाया गया था। इन लोगों ने गांव के नौ अन्य लोगों को भी अपने में शामिल करने के प्रयास किए। कड़ी पूछताछ के बाद इसका खुलासा हुआ। उन नौ लोगों के साथ-साथ इन तीनों को भी जन अदालत में पेश किया गया। जहां पर इनमें से जमान, कावे और रैयजी को जनता ने माफ करने के काबिल नहीं पाया तो मौत की सजा सुनाई। अपने संघर्ष और जनताना सरकार की रक्षा के लिए जनता ने कड़ा फैसला किया। इसके साथ नौ लोगों को चेतावनी देकर जनता ने छोड़ दिया और आगे से ऐसी साजिशों में न फंसने और उनसे दूर रहने की समझाइश दी।

अलग-अलग गांव में ऐसी ही 6 जन अदालतों का आयोजन किया गया और जन विरोधी लोगों को जनता ने चेतावनी दीं। जन अदालत कार्रवाइयों में 973 महिलाओं व 1,550 परुषों ने भाग लिया। कुल जनता की भागीदारी 2,523 रही।

मुखबिर संतोष बावणे का सफाया

टिप्रागढ़ एरिया के धनोरा में जबसे एलओएस का विस्तार हुआ तबसे पुलिस के मुखबिर भी पैदा हो गए। ऐसा ही एक मुखबिर था संतोष बावणे। महावाड़ा के इस कुत्ते को धनोरा के थानेदार राजुपत ने पाला हुआ था। जिसका काम था क्रांतिकारियों की खबर मिलते ही पुलिस को तुरंत मोबइल से सुचानएं देना। गांव में उसने पीसीओ बूथ (एसटीडी), एक दुकान और आटा पिसाई की चक्की लगाई हुई है। पूरे गांव वालों को डरा धमकाकर रखता था। गांव वालों को जन संगठन में भर्ती न होने की धमकी देता था। कई लोगों के खिलाफ पुलिस थाने में रिपोर्ट भी दर्ज करवाया था। उसने गांव वालों में दो गुट बनाकर फूट डालने की भरपूर कोशिश की, जिससे पूरे गांव वाले खौफ खाते थे।

लेकिन इस खौफ को 10 अगस्त 2008 को सदा के लिए गांव से मिटा दिया गया। गांव वालों को बहुत राहत मिली। इसी प्रकार पूरे दण्डकारण्य में जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के रास्ते में रोड़े बने कुछ और पुलिसिया दलालों और जन विरोधी तत्वों का भी जनता के फैसले के मुताबिक सफाया कर दिया गया।✶

बढ़ती मंहगाई व बिजली बोर्ड के विखंडन के खिलाफ 19 जनवरी को दण्डकारण्य बंद का व्यापक असर

एक तरफ अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें 190 डालर से घट कर प्रति बैरल 40 डालर तक गिर गई हैं, वहीं भारत सरकार पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस की कीमतों में कटौती न करने पर अड़ी हुई है। हालांकि जनता के आंदोलनों, ट्रक मालिकों की हड़ताल व हमारे बंद आदि के कारण सरकार कुछ दाम कम करने पर मजबूर हुई है, लेकिन ऐसे समय में यह ऊंट के मुंह में जीरा से ज्यादा नहीं है। दूसरी तरफ छग की भाजपा सरकार मुनाफे में चल रहे बिजली बोर्ड का विखंडन कर निजी हाथों में सौंपने जा रही है, जिससे कर्मचारियों का भविष्य दांव पर लगा हुआ है।

पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस की कीमतें कम करने की मांग से और बिजली बोर्ड के विखंडन के विरोध में दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने 19 जनवरी 2009 को 'दण्डकारण्य बंद' का आह्वान किया जिसका व्यापक असर पूरे डीके में देखने को मिला। सभी सड़कों पर बसों, ट्रकों व अन्य वाहनों के पहिए जाम रहे। वहीं केके लाईन पर मालगाड़ियों व अन्य गाड़ियों का परिचालन पूरी तरह ठप रहा, जिस कारण सरकार को करोड़ों का नुकसान हुआ है। दण्डकारण्य के सभी डिवीजनों में बंद का पालन किया गया। बंद को सफल बनाने के लिए सभी जनसंगठनों, जनता व जन मिलिशया ने पोस्टर, बैनर व पर्चों से सड़कों, बसस्टेण्डों आदि को पाट दिया। और बंद में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ✶

जनताना सरकारों को मजबूत करने एवं विस्तार करने के जन संकल्प के साथ गांव-गांव में मना महान भूमकाल दिवस!

पूर्व बस्तर डिवीजन

महान भूमकाल दिवस की 99वीं वर्षगांठ के अवसर पर पूर्व बस्तर डिवीजन के गांव-गांव में महान भूमकाल लड़ाई के शहीदों को याद किया गया एवं उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की गई। 10 फरवरी को महान भूमकाल दिवस को जनताना सरकार स्थापना दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर डिवीजनल कमेटी की ओर से पर्चा जारी किया गया था, जिसमें भूमकाल लड़ाई के शहीदों की लड़ाकू विरासत को आगे बढ़ाने, जनयुद्ध को तेज करके जनताना सरकारों को मजबूत करने का आव्हान किया गया। कुदूर एवं वयानार एरिया जनताना सरकारों की ओर से भी पर्चे वितरित किये गए थे।

पूर्व बस्तर डिवीजन में भूमकाल दिवस के आयोजन का एक दृश्य

बारसूर इलाके में पंचायत स्तर पर सभा-सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिनमें पराये शासन के खिलाफ, अपनी आजादी के लिए लड़े गए भूमकाल विद्रोह एवं उस विद्रोह के नेताओं की जीवनी पर प्रकाश डाला गया।

कुदूर एरिया जनताना सरकार के आव्हान पर भूमकाल लड़ाई के शहीदों की याद में इलाके की जनताना ने 12 फुट ऊंचे स्मारक का निर्माण किया। 10 फरवरी को आयोजित एक जनसभा में उक्त स्मारक का अनावरण किया गया। इस सभा को पार्टी की डिवीजनल कमेटी की सदस्या कामरेड ..., एरिया जनताना सरकार के अध्यक्ष कामरेड ... एंव अन्य ने संबोधित किया। इलाके के विभिन्न सांस्कृतिक मंडलियों ने सभा में रंगारंग प्रस्तुतियां दीं। गांव-गांव में जनताना सरकार का गठन करेंगे, जनताना सरकारों को मजबूत करेंगे नारे सभा के दौरान गूंज उठे।

वयानार एरिया जनताना सरकार के नेतृत्व में आयोजित विशाल रैली एवं आमसभा में 4500 लोग शामिल हुए। जुलूस के मार्ग में बस्तर मुक्ति संग्राम के 10 बड़े विद्रोहों के नाम पर स्वागत द्वार बनाये गये थे। 'महान भूमकाल शहीदों को जोहार, भूमकाल शहीदों की विरसात को आगे ले जाएंगे, आदि नारे अंकित बैनर जगह-जगह टंगे हुए थे। सभा स्थल पर भूमकाल इतिहास से संबंधित एक पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई थी। मंच से जन समुदाय को संबोधित करने वालों में डीवीसीएम कामरेड ..., एसजेडसी कामरेड पांडू, एरिया जनताना सरकार के अध्यक्ष कामरेड ..., रक्षा विभाग के प्रमुख कामरेड ... शामिल थे।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रतियोगता आयोजित की गई थी, जिसमें 30 से ज्यादा सांस्कृतिक लोक मंडलियों ने भाग लिया। कलाकारों ने पूरी तन्मयता के साथ लोक कलाओं का प्रदर्शन किया। परांग, ढोल, मांदर, कुंडुड, बेहर परंग, बाजा, लेजा आदि कई विधाएं प्रदर्शित की गईं। विजेताओं को एरिया सरकार की ओर से इनाम दिये गए।

केशकाल इलाके में बड़ी जनसभा आयोजित की गई, जिसमें 5 हजार लोगों ने भाग लिया। डीवीसी सचिव कामरेड ..., एरिया सरकार के पदाधिकारियों ने सभा को संबोधित किया।

इस अवसर पर झंडा रैली (रिले) आयोजित की गई। एक गांव की सरकार से दूसरे गांव की सरकार तक जनताना सरकार का झंडा लेकर जुलूस की शक्ल में जाना और उस सरकार के प्रतिनिधि को झंडा सौंपना, वहां से फिर अगले गांव की सरकार तक, इस तरह पूरे इलाके की सभी सरकारों को इस रैली में शामिल किया गया। हजारों की संख्या में जनता ने इस रैली में भाग लेकर जनताना सरकारों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जताई।

कोरर इलाके में पंचायत स्तर पर भूमकाल दिवस मनाया गया। यहां आयोजित सभा को डीवीसीएम कामरेड ... ने संबोधित किया।

पूरे डिवीजन में इस तरह महान भूमकाल लड़ाई की याद में जुलूस, सभा, सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इन तमाम आयोजनों को सफल बनाने में पीएलजीए के तीनों बलों ने सुरक्षा प्रदान करके अहम भूमिका निभाई।

अन्य डिवीजनों से...

उत्तर बस्तर और मानपुर डिवीजनों में भी भूमकाल दिवस के उपलक्ष्य में पोस्टर और पर्चों से व्यापक प्रचार किया गया। डीएकेएमएस, केएएमएस और सीएनएम के कार्यकर्ताओं ने प्रचार का काम संभाला। रावघाट इलाके के नवागढ़, गुडाबेड़ा, कीलार, भैंसासुर में आमसभाएं और रैलियां आयोजित की गईं।

नवागढ़ में 435, कीलर में 500, भैंसासुर में 300, गुडाबेड़ा में 5000 जनता ने भाग लिया। इससे पहले सभी जनसंगठनों ने जोरदार प्रचार अभियान चलाया।

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन के चातगांव इलाके में 4 जगहों पर सभाएं आयोजित की गईं। इनमें कुल मिलाकर 450 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। इन सभाओं में भूमकाल की विरासत को जारी रखने का संकल्प दोहराया गया। ✶

(... अंतिम पृष्ठ का शेष)

अलग-अलग जनवादी संगठनों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं और मीडिया के लोगों द्वारा पीड़ित लोगों से लिए गए बयानों के आधार पर जो तस्वीर उभरकर आती है वह दिल दहला देने वाली है। दंतेवाड़ा एसपी राहुल शर्मा के स्पष्ट निर्देशों पर निकले 200 एसपीओ और पुलिस बलों के दल ने 8 जनवरी 2009 को आतंक का जो तांडव मचाया है वह छत्तीसगढ़ के इतिहास में काले अक्षरों में लिखा जाएगा। उन्होंने रास्ते में पड़े मैलासुर, दंतेशपुरम, कोर्रासगूड़ेम, मुकुड़तोंग और सिंगारम गांवों में भारी लूटपाट मचाया। घरों में घुसकर हजारों रुपए की नगदी, कीमती जेवरात, कपड़े, कृषि उपकरण, मुरगे, बकरे, बरतन-भाण्डे... हर चीज को लूट लिया। खेत-खलिहानों और घरों में जो भी महिला या पुरुष मिला सभी को पकड़कर उनकी निर्मम तरीके से पिटाई की। इस तरह करीब दो दर्जन से ज्यादा लोगों को हांककर गाली-गलौज करते हुए लूटे गए सामान ढोने पर मजबूर कर ले गए। इन सभी को सिंगारम और वेंजलवाई के बीच जंगल में एक नाले के पास जाने के बाद तीन भागों में बांटा। महिलाओं को निर्वस्त्र कर मानवता की सारी हदें पार कर सामूहिक बलात्कार किया। उनके द्वारा चीखने-चिल्लाने पर, विरोध करने पर बुरी तरह मारा और पीटा गया। कॉमरेड बलात्कार के बाद सीती के जांघों को चाकुओं से गोदकर और पेट को चीरकर सभ्यता को ही शर्मसार कर डाला। इनमें से कुछ लोगों को अपने साथ लाए कुछ फटे-पुराने वर्दियां पहनाकर बाद में गोलियों से भून डाला।

जब गोलियों से भूनने लगे थे तब साहस करके चार युवक भाग निकल सके। बाकी सभी ने वहीं पर दम तोड़ दिया। उसके बाद लूटे गए सामानों को लेकर मारे गए लोगों की तस्वीरें लेकर लाशें वहीं छोड़कर चल दिए।

इस जघन्य और अब तक के सबसे बड़े नरसंहार को प्रत्यक्ष रूप से अंजाम देने वाले कुछ एसपीओ को लोगों ने पहचान कर मीडिया और मानवाधिकार संगठनों को बताया। उन दरिंदों के नाम हैं - मड़काम मुदिराज, सोयम दारा, कारम राजा, माड़िवी माड़ा, करटम नंदा (जुड़ूम सरगना), माड़िवी हांदा, कवासी गंगा, कवासी लक्ष्मण, हिड़मा, माड़िवी दिनेश, माड़िवी ब्रज, भीमा, पण्डे सोमा, मड़काम बोड्डी (लीडर), बाबूराव, मड़काम राजा, लखमा। चूंकि ये सब आसपास के ही गांवों से एसपीओ बने हैं, इनको लोगों ने पहचाना और इनके खिलाफ बकायदा बयान भी दिए। इन जन विरोधी, लम्पट व असामाजिक तत्वों को भले ही आज की लुटेरों की अदालतें कुछ नहीं कर पाएं, पर जनता इन्हें कभी माफ नहीं करेगी।

दरअसल 2005 से, जबसे सलवा जुड़ूम शुरू हुआ, अब तक कई हत्याकाण्ड हो चुके हैं। करीब 800 लोगों की हत्याएं की गई हैं। 150 से ज्यादा महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया है। कई महिलाओं को बलात्कार के बाद मार डाला गया। 750 से ज्यादा गांवों के हजारों घरों में आग लगाई गई। सम्पत्तियों को बेहिसाब लूटा गया। हजारों लोगों को जबरन 'राहत' शिविरों में घसीटा गया और करीब 2 लाख लोगों को जबरन विस्थापित किया गया। आज दंतेवाड़ा और बीजापुर जिलों में नागरिक प्रशासन नाम की चीज ही नहीं रह गई। सलवा जुड़ूम अपने आपमें एक आंतकवादी व्यवस्था बन गया है जिसका संचालन सरकार उसे गैर-संवैधानिक अधिकार देकर करवा रही है। लेकिन जनता और उसकी सेना - पीएलजीए के जवाबी हमलों और शानदार प्रतिरोध के ही चलते हजारों लोगों की हत्या कर क्रांतिकारी आंदोलन को जड़ से सफाया करने की उनकी साजिश अब तक कामयाब नहीं हो सकी। दूसरी तरफ कई जनवादी व मानवाधिकार संगठनों व कार्यकर्ताओं ने सरकार-प्रायोजित सलवा जुड़ूम के आतंक का पर्दाफाश कर उसे बंद करने की मांग उठाई। इसके बावजूद भी सरकार ने अपने बर्बर हमलों का सिलसिला जारी रखा हुआ है। खासकर पिछले दो-तीन महीनों में तो उसने दर्जनों लोगों की फर्जी मुठभेड़ों में हत्याएं करवा दीं। एक शब्द में कहा जाए तो खासकर पिछले 3 महीनों के दौरान पुलिस ने जितनी ही मुठभेड़ों की घोषणा की जिसमें नक्सलवादियों के मारे जाने का दावा किया गया, वे सब फर्जी ही थीं। सिंगारम 'मुठभेड़' इन सबमें अत्यंत बर्बरतापूर्ण व अत्यंत पाशविक हत्याकाण्ड है।

जनता और तमाम अन्य जनवादी ताकतों की ओर से इस सामूहिक हत्याकाण्ड के खिलाफ प्रकट हो रहे विरोध को देखते हुए सरकार ने भले ही जांच का आदेश दिया हो, लेकिन इसका क्या परिणाम निकलेगा सबको पता है। जीरमतराई से लेकर पोंजेर, माटवाड़ा, कोडेनार, हुलघाट तक दर्जनों हत्याकाण्डों का जो परिणाम निकला था, इसका भी वही परिणाम निकलकर आएगा। सिंगारम और उसके आसपास के ग्रामीणों ने मीडिया को हत्यारे एसपीओ के नाम साफ तौर पर बताए, इसके बावजूद भी सरकार ने उन्हें गिरफ्तार नहीं किया क्योंकि इस हत्याकाण्ड की साजिश बस्तर में नहीं बल्कि रायपुर में रची गई थी।

दण्डकारण्य में पिछले 18 सालों से जारी क्रांतिकारी आंदोलन तथा उसकी बदौलत गांव-गांव में पनप रही जनता की नई राजसत्ता का सफाया कर इस सम्पन्न धरती को बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और टाटा, एस्सार, जिंदल, मित्तल जैसे दलाल पूंजीपतियों की लूट के चारागाह में तब्दील करने के इरादे से ही रमन सरकार ने केन्द्र सरकार के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन व सहयोग से इस फासीवादी दमनचक्र को शुरू कर रखा है। दोबारा सत्ता पाने के बाद इसमें और इजाफा किया है। इसके पीछे अमेरिकी साम्राज्यावाद का दिश-निर्देशन है। सिंगारम हत्याकाण्ड इस बड़ी साजिश का एक हिस्सा ही है। शासक वर्ग क्रांतिकारियों और आम लोगों की अंधाधुंध हत्याओं से हमारे इस जायज आन्दोलन को कुचल सकने का सपना देख रहे हैं। लेकिन इतिहास में हिटलर जैसे तानाशाहों को भी आखिरकार जनता के हाथों मुंह की ही खानी पड़ी थी। रमन, कर्मा, ननकीराम, नरसिंहन, चिदम्बरम, मनमोहन जैसों का भी क्या हश्र होने वाला है, इतिहास जानने वालों को अलग से बताने की जरूरत ही नहीं है। दमन से प्रतिरोध ही उपजेगा, यह मानव समाज के विकासक्रम का अपरिवर्तनीय नियम है। बस्तरिया जनता इन हत्यारों से अपनी संतानों के खून का हिसाब जरूर वसूलेगी।★

दक्षिण बस्तर के सिंगारम के पास मुठभेड़ के नाम पर हुई 19 आदिवासियों की निर्मम हत्या की निंदा करो!

आदिवासियों के खून की होली खेल रहे लुटेरे शसक वर्गों पर बदला लो!

8 जनवरी को दक्षिण बस्तर के गोल्लापल्ली थाना क्षेत्र के सिंगारम और वेंजलवाई के बीच एक नाले के पास पुलिस व एसपीओ ने बहुत बड़े सामूहिक हत्याकाण्ड को अंजाम दिया। करीब 200 की संख्या में आए एसपीओ और खाकी वर्दीधारी हत्यारों ने सिंगारम और उसके आसपास के गांवों - मैलासुर, कोर्रासगूड़ेम, दंतेशपुरम और वेंजलवाई से कुल करीब 25 लोगों को पकड़कर पास के एक नाले में ले जाकर 19 लोगों को निर्मम तरीके से मार डाला जिनमें 4 महिलाएं शामिल हैं। दो महिलाओं समेत 4 लोग अभी भी लापता है। मारने से पहले महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया है, जिसका खुलासा ग्रामीणों के हवाले से मीडिया ने किया है। क्षत-विक्षत लाशों को देखने के बाद ग्रामीणों ने यह भी बताया कि सभी लोगों को बर्बरतापूर्वक चाकुओं और कुल्हाड़ियों से काट-काटकर मार डाला गया था। इस जघन्य हत्याकाण्ड को 'मुठभेड़' के रूप में चित्रित करने के लिए पुलिस ने यह कहानी फैलाई कि एक घण्टे से ज्यादा देर तक चली इस मुठभेड़ में तीन एसपीओ और एक जवान घायल हुए थे। जब मीडिया में इस झूठ का पर्दाफाश होने लगा तब दंतेवाड़ा एसपी राहुल शर्मा ने कथित रूप से घायलों को दंतेवाड़ा से हटाकर सुकमा के अस्पताल में दाखिल करवा दिया ताकि उन्हें मीडिया की पहुंच से दूर रखा जा सके। मृतकों की लाशों के प्रति जो नीति अपनाई वह तो एक और जघन्य अपराध है। 'मुठभेड़' के बाद पंचनामा करवाना, पोस्टमार्टम की व्यवस्था करना आदि कानूनी बाध्यताओं से इन हत्यारों ने साफ तौर पर पल्ला झाड़ लिया। संविधान का पालन करने का दंभ करने वाले लोगों के गैर-संवैधानिक कारनामों के लिए इससे बड़ा उदाहरण और क्या चाहिए?

कॉमरेड मड़काम सीती

8 जनवरी की शाम ही गृहमंत्री ननकीराम कंवर ने रायपुर में आनन-फानन में, मानों वह इसके इंतेजार में बैठा था, इस 'मुठभेड़' पर पुलिस वालों को बधाई दी और प्रेस मीट में कहा कि यह पुलिस को मिली बहुत बड़ी सफलता है। मीडिया के साथ-साथ भाकपा व कांग्रेस के स्थानीय प्रतिनिधियों द्वारा इसे साफ तौर पर फर्जी मुठभेड़ करार दिए जाने के बावजूद भी रमन सरकार ने दोषी पुलिस अधिकारी और एसपीओ को गिरफ्तार करने की बजाए दंडाधिकारी जांच का आदेश भर देकर खानापूर्ति की। इसके चंद सप्ताह पहले हुए कोडेनार और हुलघाट हत्याकाण्डों पर भी सरकार का यही रुख रहा है।

इस हत्याकाण्ड से मात्र 3-4 दिन पहले राज्यपाल नरसिम्हन का जेगुरगोण्डा 'राहत' शिविर का दौरा कर सलवा जुडूम की हौसला आफजाई करना और उसके बाद कोंटा क्षेत्र से सलवा जुडूम के घृणित नेता सत्तार अली और सोयम मूका का यह कहना कि 'अब जुडूम में नया जोश आ गया है' - इसे देखते हुए यह बात साफ हो जाती है कि इस सामूहिक हत्याकाण्ड की साजिश उच्च स्तर पर रची गई थी, जिसके लिए मुख्यमंत्री रमनसिंह, नया गृहमंत्री ननकीराम और राज्यपाल नरसिम्हन खुद जिम्मेदार हैं।

(शेष पृष्ठ 47 में...)

इस जघन्य नरसंहार में मारे गए लोगों के नाम-

कोर्रासगूड़ेम गांव के -
(1) माड़वी हिड़मा (18 वर्ष)
(2) माड़वी कन्ना (21 वर्ष)
(3) माड़वी भीमा (25 वर्ष)
(4) हेमला अड़मा (15 वर्ष)
(5) मड़काम देवे (19 वर्ष) (महिला)

शेंसम (दंतेशपुरम) गांव के
(6) वेको बंडी (30 वर्ष)
(7) वेको जोगा (16 वर्ष)
(8) माड़वी देवा (17 वर्ष)
(9) मड़काम हिड़मा (33 वर्ष)
(10) हेमला सुक्का (18 वर्ष)
(11) मुचाकी गंगा (15 वर्ष)
(12) वेको पोज्जे (15 वर्ष) (महिला)
(13) मुचाकी दूले (19 वर्ष) (महिला)

सिंगारम गांव के
(14) मड़काम राजू
(15) मड़काम सीती (24 वर्ष)(महिला)
(16) कारम लच्छा (20 वर्ष)
(17) कारम मुत्ता (19 वर्ष)

मैलासुर गांव के
(18) वेट्टी अड़मा (16 वर्ष)

वेंजलवाई गांव के
(19) वेट्टी बदराल (20 वर्ष)

लापता 4 लोग

मोसोलमड़गू गांव की
(1) मड़िवी माड़के
(2) नूपो मासे (दोनों महिलाएं हैं)

मनीकोंटा गांव के
(3) सोड़ी समा

गोरखा गांव के
(4) माड़वी कोसा।